नीचे दिए गए चित्रों को किसी भवन से मिलाएँ

मुख्य द्वार के प्रभाव

दिशा प्लॉट

5: पुरूष बीमार, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

4: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान (बेटा होने पर) बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

3: मुख्य महिला, पहली व पाँचवीं संतान (बेटी होने पर) बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

N W E S 6 5 4 3 2 1

6: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

1: पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

2: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

विदिशा प्लॉट

7: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

6: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

N E W S 7 6 5 4 3 2 1

1: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

2: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

4 + 5: पुरूष बीमार, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

3: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

सीढ़ी व मुमटी के प्रभाव

शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी व मुमटी होने के प्रभाव

दिशा प्लॉट

6: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

1: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

N W E S 5 6 1 7 2 3 4

2: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

7: घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।
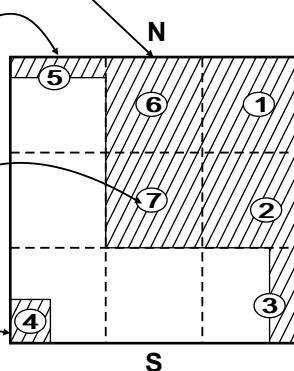
3: पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

4: घर का मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान घर से बाहर रहेंगे।

विदिशा प्लॉट

7: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

6: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

2: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक व बेटा होने पर उसे कम समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

3: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

4: घर का मुखिया व पुरूष संतान घर से बाहर रहेंगे।

8: घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

घर की चारदीवारी या छत पर कोने में सीढ़ी, मुमटी, टॉयलेट, कमरे व निर्माण के प्रभाव

दिशा प्लॉट

4: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक व बेटा होने पर उसे कम समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

6: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

2: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटा होने पर उसे अधिक व बेटी होने पर उसे कम समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

3: घर का मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान घर से बाहर रहेंगे।

7: घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।
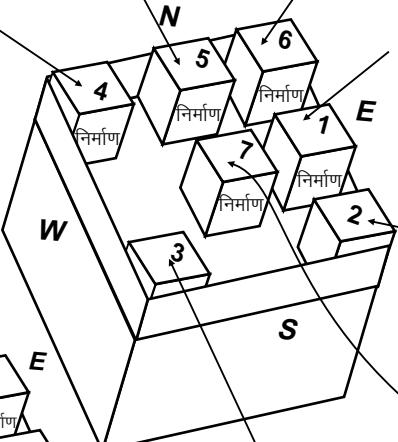
विदिशा प्लॉट

6: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

7: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

5: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक व बेटा होने पर उसे कम समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

2: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

3: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

4: घर का मुखिया व पुरूष संतान घर से बाहर रहेंगे।

8: घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

बॉलकनी / छज्जे के प्रभाव

भवन के पूरे भाग में बॉलकनी/छज्जे का निर्माण होने से दीवार पर वजन बढ़ता है

दिशा प्लॉट

2: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।
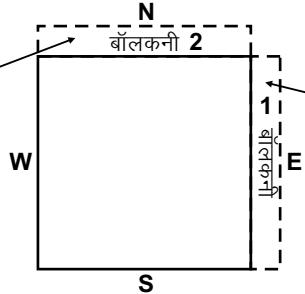
1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

विदिशा प्लॉट

3 : घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

2 : महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।
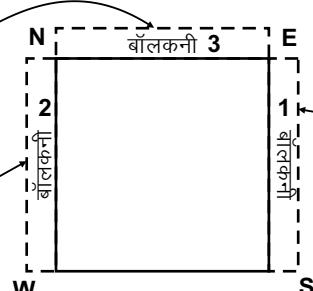
1 : महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

गहरे रंग से दिखाए गए भाग में बोरिंग, अन्डरग्राउन्ड टैंक, सैप्टिक टैंक, गढ़्ढ़ा, फर्श / छत का तल नीचा होना, शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान होने के प्रभाव

दिशा प्लॉट

7: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक व बेटी होने पर उसे कम समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

8: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

6: घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

N

7 नार्थ–वेस्ट	8	नार्थ–ईस्ट
6 पश्चिम	5 ब्रह्मस्थान	1
4 साउथ–वेस्ट	3 दक्षिण	2 साउथ–ईस्ट

W — E

S

5: घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

2: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे अधिक व बेटा होने पर उसे कम समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

4: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।
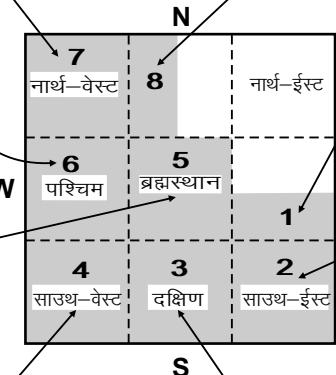
3: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

विदिशा प्लॉट

6: घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

1: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

N — E

उत्तर	नार्थ–ईस्ट	पूर्व
नार्थ–वेस्ट 5	ब्रह्मस्थान 6	साउथ–ईस्ट 1
पश्चिम 4	साउथ–वेस्ट 3	दक्षिण 2

W — S

2: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।
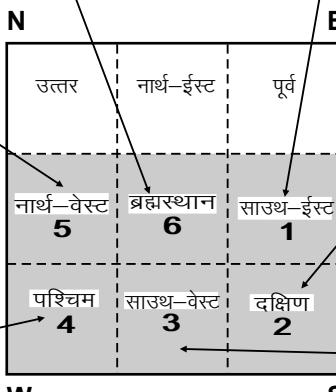
4: घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

3: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

छत पर दिखाई गई जगह से पानी का निकास होने के प्रभाव

दिशा प्लॉट

7: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

9: घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

6: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक व बेटी होने पर उसे कम समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

N

पानी का पाईप 6 नार्थ–वेस्ट	पानी का पाईप 7 उत्तर	8 नार्थ–ईस्ट
पानी का पाईप 5 पश्चिम	पानी का पाईप 9 ब्रह्मस्थान	पानी का पाईप 1 नार्थ–ईस्ट
साउथ–वेस्ट 4 पानी का पाईप	दक्षिण 3 पानी का पाईप	साउथ–ईस्ट 2 पानी का पाईप

W   E

S

2: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे अधिक व बेटा होने पर उसे कम समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

4: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

3: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

विदिशा प्लॉट

9: घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

1: महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

2: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

N   E

6 उत्तर	7 नार्थ–ईस्ट	8 पूर्व
नार्थ–वेस्ट 5 पानी का पाईप	ब्रह्मस्थान 9 पानी का पाईप	साउथ–ईस्ट 1 पानी का पाईप
पश्चिम 4 पानी का पाईप	साउथ–वेस्ट 3 पानी का पाईप	दक्षिण 2 पानी का पाईप

W   S

4: घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

3: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

बॉलकनी या निर्माण में कोई एक भाग बढ़ने के प्रभाव

दिशा प्लॉट

9: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

10: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

8: पुरूष बीमार, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

1: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

N, E, S, W — 9, 10, 8, 1, 7, 2, 6, 5, 4, 3

7: घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

2: पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

6: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान (बेटा होने पर) बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

4: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

3: महिलाएं बीमार, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: मुख्य महिला, पहली व पाँचवीं संतान (बेटी होने पर) बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

विदिशा प्लॉट

9: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

10: महिलाएँ व पुरूष बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति, धन की कमी, पुरूष संतान न होना, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट केस,

8: पुरूष बीमार, बुरी आदतें व घर से बाहर रहना संभव है।

1: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

N, E, S, W — 9, 10, 8, 1, 7, 2, 6, 5, 4, 3

7: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दिवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

2 + 3: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

5 + 6 : घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

4: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

प्लॉट/निर्माण में कोना कटने के प्रभाव

दिशा प्लॉट

4: तीसरी और सातवीं संतान को आंशिक समस्याएँ व घर से बाहर रहना संभव है।
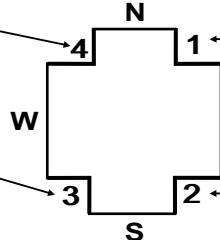
1: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

3: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

2: दूसरी और छठी संतान को आंशिक समस्याएँ व घर से बाहर रहना संभव है।

विदिशा प्लॉट

4: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।
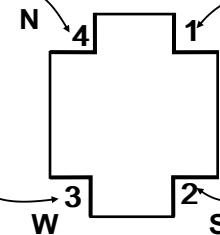
1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

3: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बुरी आदतें व घर से बाहर रहना संभव है।

2: मुख्य महिला व स्त्री संतान को मानसिक अशान्ति व घर से बाहर रहना संभव है।

सड़क टक्कर या मुख्य द्वार के प्रभाव

दिशा प्लॉट

6: महिलाएँ बीमार, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।
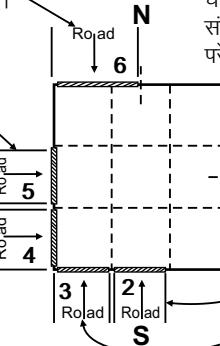
1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना संभव है।

2: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

4: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान (बेटा होने पर) बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

3: मुख्य महिला, पहली व पाँचवीं संतान (बेटी होने पर) बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

विदिशा प्लॉट

6: महिलाएँ बीमार, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।
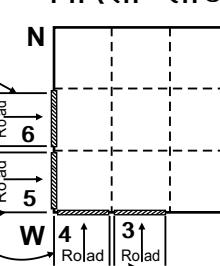
1: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

4 + 5 : घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना संभव है।

2: महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

3: घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

रसोई / किचन के प्रभाव

स्लैब, अलमारी इत्यादि का निर्माण दिखाई गई दीवारों पर होने या छत संक (मोटी) होने के प्रभाव

दिशा प्लॉट

4: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

5: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।
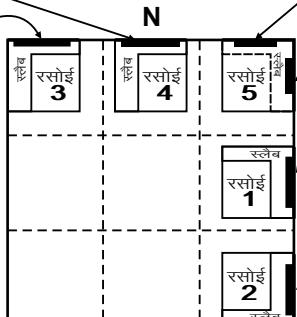
1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

3: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

2: पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

विदिशा प्लॉट

6: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

7: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

4: घर का मुखिया व पुरूषों को समस्याएँ, बीमारी व घर से बाहर रहना संभव है।

2: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

3: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ व दूसरी संतान बेटी होने पर उसे समस्याएँ रहेंगी।

बॉथरूम / टॉयलेट की छत संक (मोटी) होने पर

दिशा प्लॉट

N, W, E, S

टॉयलेट 3, टॉयलेट 4, टॉयलेट 5, टॉयलेट 1, टॉयलेट 2

4: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

5: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

3: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

2: पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

विदिशा प्लॉट

N, E, W, S

टॉयलेट 6, टॉयलेट 7, टॉयलेट 1, टॉयलेट 5, टॉयलेट 2, टॉयलेट 4, टॉयलेट 3

6: धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

7: घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

5: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

1: पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

4: घर का मुखिया व पुरूषों को समस्याएँ, बीमारी व घर से बाहर रहना संभव है।

2: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

3: महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ व दूसरी संतान बेटी होने पर उसे समस्याएँ रहेंगी।

विषय सूची

द्वारकाधीश–वास्तु (भवन निर्माण)

प्रकाशक : **द्वारकाधीश धार्मिक समिति,**

ई–मेल : dwarkadheeshvastu@gmail.com

वेबसाईट : www.dwarkadheeshvastu.com

संस्करण : प्रथम–2010

लेखन, डिजाईन एण्ड सेटिंग : **अंकित मिश्रा**

फोन : **08010381364**

ई–मेल : ankit_mishratilhar@rediffmail.com

इंसान के लिए भगवान का क़ानून/कृपा कवच

जिस भवन/बेडरूम में हम रहते हैं उसे वास्तु के अनुसार देखकर पूरे परिवार के जीवन में चल रहे सभी कार्य (घटनाएँ) ईश्वर की कृपा से बताई जा सकतीं हैं और भवन/बेडरूम को वास्तु के अनुरूप ईश्वर की प्रेरणा से बनाने पर सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाता है। यह ईश्वर का विधान है।

वास्तु सिद्वान्तों पर विचार व समाज में चल रही मान्यताएँ

वास्तु का स्वरूप :– भगवान अर्ध–नारीश्वर शिव (जिनके शरीर का दायाँ आधा भाग पुरूष व बायाँ आधा भाग नारी है) के चरण ही वास्तु का स्वरूप हैं। दाएँ चरण का अगला भाग (अँगूठा और उंगलियाँ) पूर्व और पिछला भाग (एँड़ी) पश्चिम, पुरूषों का स्थान होता है। बाएँ चरण का अगला भाग (अँगूठा और उंगलियाँ) उत्तर और पिछला भाग (एँड़ी) दक्षिण, महिलाओं का स्थान होता है। भगवान के दाएँ और बाँए चरणों के अँगूठों के नाखूनों से गंगा जी प्रकट हुईं हैं, यह स्थान नार्थ–ईस्ट है।

शास्त्रों व समाज की मान्यता है कि ईश्वर की ईच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। परमात्मा हर प्राणी के अंदर बसते हैं। और सारा ब्रह्माण्ड उनके अंदर है। परमात्मा की कृपा से ही जीव (पेंड़–पौधे, पशु–पक्षी इत्यादि) चेतन होते हैं। वास्तु विद्या भी प्रभू की उसी कृपा के दर्शन कराती है। जो परिवार जिस तरह के कर्म करता है उसे उसी तरह के वास्तु का भवन/स्थान मिलता है। इस विद्या का ज्ञान होने पर भी, वास्तु दोष दिखाई नहीं देते। वास्तु तभी ठीक होगा जब प्रभू की कृपा होगी। हमारे जीवन में सुख का अर्थ आनन्द, दुख का अर्थ तप, यानि परम आध्यात्म, जो जन्म–जन्म तक जीव के साथ रहता है। हम दस दिशाओं व उनके दिग्पालों की पूजा करते हैं, विशेषकर शक्ति स्वरूप माता भगवती से हम दस दिशाओं का रक्षा कवच पाने की प्रार्थना करते हैं। जो परिवार ईश्वर के पूर्ण भक्त हैं, उन परिवारों को विशेष रूप से वास्तु रूपी ईश्वर की कृपा का कवच मिलता है और राजा जनक जैसी स्थिति प्राप्त होती है।

दिशाओं का परिचय :–

दस दिशाएं 1. उत्तर, 2. पूर्व, 3. दक्षिण, 4. पश्चिम, 5. नार्थ–ईस्ट (ईशान), 6. साउथ–ईस्ट (आग्नेय), 7. साउथ–वेस्ट (नैरूति), 8. नार्थ–वेस्ट (वायव्य), 9. भूमि, 10. आकाश हैं।

प्लॉट के फेसिंग का महत्व :–

प्लॉट उत्तर/पूर्व/दक्षिण/पश्चिम/नार्थ–ईस्ट/साउथ–ईस्ट/साउथ–वेस्ट/नार्थ–वेस्ट सभी दिशाओं का शुभ होता है और प्रत्येक दिशा का अपना एक विशेष महत्व है। वास्तु के अनुसार सही तरह से निर्माण करने पर उसके पूर्ण लाभ मिलते हैं।

प्रकृति/वास्तु द्वारा निर्धारित नियम :–

जिस प्रकार ग्रहों का घूमना, मौसम का बदलना इत्यादि प्रकृति के नियम हैं। इसी प्रकार वास्तु सिद्वान्त भी प्राकृतिक नियम हैं। भूमि/भवन के नार्थ–ईस्ट भाग का सम्बन्ध धन, पूरे परिवार की सुख–शान्ति, पहली/चौथी/आठवीं संतान और घर के कमाने वाले सदस्य से होता है। साउथ–ईस्ट भाग का सम्बन्ध सुख–शान्ति, प्रशासनिक कार्यों, महिलाओं व दूसरी/छठी संतान से होता है। साउथ–वेस्ट भाग का सम्बन्ध घर के मुखिया व पहली/पाँचवी संतान से होता है। नार्थ–वेस्ट भाग का सम्बन्ध सुख–शान्ति, प्रशासनिक कार्यों, महिलाओं व तीसरी/सातवीं संतान से होता है। पूर्व व पश्चिम भाग का सम्बन्ध पुरूषों के स्वास्थय, मान–सम्मान व स्वभाव से होता है। उत्तर और दक्षिण भाग का सम्बन्ध धन, महिलाओं के स्वास्थ्य, मान–सम्मान और स्वभाव से होता है।

पूर्व, पश्चिम, नार्थ–ईस्ट या साउथ–वेस्ट भाग में दोष होने पर, सबसे बुजुर्ग सदस्य जैसे दादा/पिता बीमार रहेंगे उनकी पहली, चौथी और पाँचवी संतान को विवाह व धन की समस्या रहेगी। दादा/पिता की मृत्यु होने पर डेढ़ बर्ष के अंदर–अंदर घर का सबसे बड़ा पुरूष सदस्य बीमार हो जाएगा।

उत्तर, दक्षिण, नार्थ–वेस्ट या साउथ–ईस्ट भाग में दोष होने पर, दादी/माता बीमार रहेंगी, दूसरी, तीसरी, छठी व सातवीं संतान को प्रशासनिक समस्याएँ, धन की कमी, विवाह से परेशानी, आग व चोरी की घटनाएँ, एक्सीडेंट, जेल इत्यादि होंगी। दादी/माता की मृत्यु होने पर डेढ़ बर्ष के अंदर–अंदर घर की सबसे बड़ी महिला बीमार हो जाएगी।

जिस भवन / कमरे में माता–पिता निवास करते हैं, उसका वास्तु जैसा भी होगा वह उनकी संतानों पर लागू रहेगा, चाहें वह संतान कहीं भी रहे। माता या पिता में से किसी एक के भी जीवित रहने पर वास्तु लागू रहेगा।

माता / पिता दोनो की मृत्यु के पश्चात यदि एक ही भवन में जितने भाई–बहन निवास करते हैं, वह अलग–अलग परिवारों के रूप में माने जाएँगे। जो परिवार भवन के जिस भाग में रहेगा, उसके दोष उस पर लागू हो जाएँगे।

माता / पिता दोनो की मृत्यु के पश्चात पति , पत्नी और बच्चे जिस भवन / कमरे में रहेंगे उसका वास्तु लागू होगा। यदि इनमें से कोई भी (पति / पत्नी / बच्चे) बाहर जाता या रहता है तो भी उस पर यही वास्तु लागू होगा।

जिस भवन आप रहते हैं उसमें कोई भी रिश्तेदार जैसे चाचा, मामा, भांजा, साला, जीजा, फूफा, गुरू, सेवक, बुआ, मामी, चाची, नानी, नौकरानी इत्यादि निवास करते हैं तो भवन के जिस भाग में यह रहेंगे उस भाग का वास्तु और इनके अपने भवन / कमरे का वास्तु भी इन पर लागू रहेगा।

भवन के किसी स्थान में दोष होने पर उससे सम्बन्धित संतान का विवाह भी उसी संतान से होगा जिसके भवन में उससे सम्बन्धित स्थान में दोष होगा। जिस संतान का अपने भवन में स्वयं से सम्बन्धित स्थान ठीक होगा उसका विवाह भी उसी संतान से होगा जिसका उसके भवन में उससे सम्बन्धित स्थान ठीक होगा। अन्यथा विवाह संभव नहीं है। विवाह के बाद यदि किसी एक संतान का उससे सम्बन्धित स्थान ठीक हो जाता है तो दूसरे का स्थान भी डेढ़ बर्ष के अदंर स्वयं ही ठीक हो जाएगा, यह प्राकृतिक विधान है।

आपके भवन / कमरे से सटते हुए उत्तर, पूर्व, नार्थ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में अन्य भवन / कमरा होने पर (चाहें उसमें पशु रहें या मनुष्य) आपके ऊपर वास्तु दोषों का प्रभाव आंशिक रहेगा। यदि इन दिशाओं में आपके भवन / कमरे से सटकर अन्य भवन / कमरे हैं किन्तु उसमें कोई निवास नहीं करता है तो आपके ऊपर वास्तु दोषों का प्रभाव कम नहीं होगा।

1. गर्भपात या किसी संतान की मृत्यु होने पर उसे भी गिनती में उसी नम्बर पर माना जाएगा। पहली, पाँचवीं व नौवीं संतान यदि पुरूष है तो लगभग पूरी तरह से पिता पर जाएगी, यदि महिला है तो आंशिक रूप से माता पर भी जाएगी।
2. दूसरी, तीसरी, चौथी, छठी, सातवीं व आठवीं संतान माता और पिता दोनों पर लगभग समान रूप से जाएगी। यदि यह संतान महिला हैं तो माता और यदि पुरूष हैं तो पिता पर आंशिक प्रधानता रहेगी।
3. घर का कर्ता–धर्ता सदैव, पश्चिम / दक्षिण / साउथ–वेस्ट / साउथ–ईस्ट / नार्थ–वेस्ट भाग में और अन्य सदस्य व बच्चे सदैव पूर्व / उत्तर / नार्थ–ईस्ट भाग में ही रहते हैं।
4. विशेष परिस्थितियों में जो सदस्य पूरे परिवार का पालन–पोषण करेगा (जैसे बेटा बड़ा होकर परिवार की सेवा करने लगता है) तो कुछ समय के पश्चात (लगभग 12 बर्ष) उसे घर का पश्चिम / दक्षिण / साउथ–वेस्ट / साउथ–ईस्ट / नार्थ–वेस्ट का स्थान ही मिलेगा। वह पिता के स्थान पर आ जाता है और माता–पिता को अन्य सदस्यों या बच्चों का स्थान मिल जाता है।
5. परिवार में जमीन–जायदाद का बँटवारा होने पर अधिकतर घर की बड़ी संतान को सदैव साउथ–वेस्ट , दूसरी संतान को साउथ–ईस्ट व तीसरी संतान को नार्थ–वेस्ट और चौथी संतान को नार्थ–ईस्ट का भाग ही मिलता है।

प्राचीन मान्यताएँ :–हमारे ऋषि–मुनियों ने वास्तु में जो ज्ञान दिया है वह पूर्णता से मान्य है। उस समय ज्यादातर भवन एक मंजिल तक बनाकर रहने का प्रचलन था। छत पर कोई निर्माण नहीं होता था। आजकल भवन बहुमंजिला बनते हैं और पूरी छत पर या कुछ भाग में भी निर्माण होता है। उनके द्वारा बताए गए वास्तु नियम हर मंजिल और छत पर समान रूप से लागू करने से उनकी कही हुई बात सत्य साबित होती है।

अक्सर लगने वाली गलतियाँ :– हम लोग मुख्य द्वार उच्च (शुभ) स्थान में बनाते हैं किन्तु सीढ़ी और मुमटी भी इसी स्थान पर बना देते हैं। इससे मुख्य द्वार के अच्छे प्रभाव नहीं प्राप्त होते हैं बल्कि सीढ़ी और मुमटी के अशुभ प्रभाव होते हैं।

ऊपरी मंजिलों पर रसोई / टॉयलेट / बॉथरूम के निर्माण में संक / गढ़ढ़ा बनाया जाता है, जिसमें से गन्दे पानी के पाईप फर्श में से ले जाते हैं। इससे भवन का वह भाग मोटा और वजनी हो जाता है। जिस दिशा में इस तरह से निर्माण होता

है, उसके भारी होने के प्रभाव लागू होते हैं। इसलिए संक/गढ़्ढ़ा न करें। भवन के केवल दक्षिण, पश्चिम व साउथ–वेस्ट भाग में ही मोटा व भारी कर सकते हैं।

मंजिलों पर प्रभाव :– भूमि (फर्श) तथा आकाश (छत), इन पर किसी भाग में कोई भी निर्माण व गढ़्ढ़ा, बढ़ना, घटना, ऊँचा व नीचा होने का प्रभाव हर मंजिल में एक जैसा ही होता है। यदि किसी मंजिल पर निर्माण में कोई भाग बढ़ता या घटता है तो उसका प्रभाव उस मंजिल पर ही होगा।

टॉयलेट का स्थान:– आजकल आधुनिक तरीके से टॉयलेट का निर्माण किया जाता है जिसमें गंदगी नहीं होती इसलिए टॉयलेट को भवन के किसी भी भाग में बना सकते हैं। टॉयलेट की सीट इस प्रकार लगाएँ कि सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ मुख करके मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए और यह भी ध्यान रखें कि सोते समय सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ पैर नहीं होने चाहिए। इससे जीवन के अन्तिम समय में अत्यधिक कष्ट होते हैं। ध्यान रहे कि नार्थ–ईस्ट में कूड़ा/गंदगी रखना वर्जित है।

मंदिर का स्थान :– वास्तव में नार्थ–ईस्ट भूमिपूजन का स्थान होता है। मंदिर को पश्चिम , दक्षिण व साउथ–वेस्ट में ही बनाना चाहिए। हम अपनी सबसे प्रिय चीज भगवान को अर्पित करते हैं जैसे भगवान शिव को जल चढ़ाते हैं जबकि उनके पास तो साक्षात गंगा जी हैं, इसी तरह भगवान को धन चढ़ाते हैं जबकि वह स्वयं लक्ष्मी–नारायण हैं। घर के मुखिया का स्थान दक्षिण , पश्चिम व साउथ–वेस्ट है, यहाँ मंदिर होने पर भगवान स्वयं घर के मालिक के रूप में रक्षा करते हैं। अनेक प्रसिद्व मंदिरों जैसे तिरूपति बालाजी, बाँके बिहारी जी, गोल्डन टेम्पिल, लोटस टेम्पिल इत्यादि में भगवान का स्थान पश्चिम , दक्षिण व साउथ–वेस्ट में है व द्वार पूर्व , उत्तर व नार्थ–ईस्ट में है।

रसोई का स्थान :– मान्यताओं के अनुसार रसोई को साउथ–ईस्ट में ही बनाया जाता था। क्योंकि हवाएँ अक्सर पश्चिम से पूर्व व उत्तर से दक्षिण की ओर ही चलती हैं, इसलिए साउथ–ईस्ट कोने में रसोई का निर्माण होने से धुआँ घर के अन्दर नहीं आता था। शंशोधित नियमों के अनुसार रसोई व बिजली के मीटर को घर में कहीं भी बनाया जा सकता है। रसोई के ऊपर किसी भी हाल में टॉयलेट/बॉथरूम का निर्माण नहीं होना चाहिए।

पैराफिट/कम्पाउन्ड वॉल:– पैराफिट/कम्पाउन्ड वॉल के निर्माण में चारो दीवारों की ऊँचाई एक समान कर देते हैं और इसके बाद फर्श/छत का ढ़ाल वास्तु नियमों के अनुसार नार्थ–ईस्ट की ओर बनाया जाता है। तल से मापने पर नार्थ–ईस्ट कोना ऊँचा हो जाता है व साउथ–वेस्ट कोना नीचा हो जाता है। इसके अशुभ प्रभाव होते हैं।

गढ्ढ़े के प्रभाव:– बोरिंग, सेप्टिक टैंक, अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक या किसी भी प्रकार का कोई गढ्ढ़ा घर के अंदर होने पर इसके गम्भीर व घर के बाहर होने पर आंशिक प्रभाव होते हैं।

खम्भा/एंटीना:– छत के किसी भाग में ध्वज/एंटीना/खम्भा इत्यादि लगाने से उस भाग की ऊँचाई उतनी ही बढ़ जाती है। उत्तर , पूर्व , नार्थ–ईस्ट , साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट भाग में ऊँचाई का बढ़ना अशुभ है। खम्भा इत्यादि सिर्फ पश्चिम , दक्षिण व साउथ–वेस्ट की दीवार पर ही लगाने चाहिए।

अक्सर लकड़ी की अलमारियों में **दीमक** लग जाती है, यह एक बुरा अपशकुशन है। दीमक उन्हीं अलमारियों में लगती है जो वास्तु के अनुसार भवन में गलत जगह पर बनी होती हैं। एक तरह से यह दीमक इन लकड़ियों को धीरे–धीरे खाकर वास्तु दोष ही दूर करती हैं। इन दीमक लगी हुई लकड़ियों को दवाई डालना , आग लगाना या पानी में नहीं डालना चाहिए, इससे जीवों की हत्या होती है। इसलिए इन लकड़ियों को किसी खुली जगह में छोड़ देना चाहिए और झाड़ियों को भी आग नहीं लगानी चाहिए, इनमें अनेक प्रकार में जीव निवास करते हैं, इससे जीवों की हत्या होती है।

प्रकृति ने पूरी पृथ्वी पर निवास करने वाले जीवों को बहुत ही अच्छी तरह से अपने नियमों के अनुसार व्यवस्थित किया हुआ है। इस नियमों के अनुसार प्रत्येक स्थान चाहें वह बेडरूम/घर/आफिस/मंदिर/धर्मशाला/सत्संग स्थल/सभा स्थल कुछ भी हो, वहाँ मुखिया व उच्च सदस्य सदैव क्रमशः साउथ–वेस्ट, साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट भाग में ही रहेंगे व छोटे सदस्य सदैव नार्थ–ईस्ट, पूर्व व उत्तर भाग में रहेंगे।

हमारे जीवन से जुड़े सभी व्यक्तियों लिए हमारे मन में श्रद्वा व दया दो तरह के भाव होते हैं। जैसे माता–पिता, गुरू, बड़ा भाई–बहन या सांसारिक कोई भी पूज्यनीय रिश्ता, इनके लिए हमारे मन में श्रद्वा भाव होता होता है। जब हम उनकी इतनी सेवा कर लेते हैं कि हमारा आध्यात्म या पुण्य उनके अधिक हो जाता है, तो हमारे मन में उनके लिए श्रद्वा भाव न

रहकर दया भाव आ जाता है और उनके मन में जो हमारे प्रति पहले दया भाव रहता था वह श्रद्धा भाव में बदल जाता है। इसी तरह जैसे बेटा–बेटी, छोटे भाई–बहन, शिष्य व उसका पुण्य व आध्यात्म हमसे अधिक हो जाता है तो उनके प्रति हमारे मन में श्रद्धा भाव आ जाता है और उनके मन में हमारे लिए दया भाव आ जाता है। यह ईश्वरीय विधान है। इससे यह सिद्वहोता है कि पूरी श्रृष्टि में पुण्य व आध्यात्म ही एक सबसे बड़ा धन है। यदि हम किसी समिति के अध्यक्ष होने पर किसी व्यक्ति को किसी आध्यात्मिक कार्य के लिए जैसे मंदिर सेवा, भगवत या राम कथा इत्यादि के लिए नौकरी पर रखते हैं, सांसारिक रूप से वह हमारा सेवक है किन्तु क्योंकि उसका आध्यात्म हमसे काफी अधिक होने के कारण हम उसके प्रति श्रद्वा रखते हैं और सदैव उसका सम्मान व चरण वंदना करते हैं।

जिस व्यक्ति का आध्यात्म सबसे अधिक होगा वह मुखिया के स्थान पर आ जाएगा। वास्तु के अनुसार वह उच्च स्थान क्रमशः साउथ–वेस्ट, साउथईस्ट व नार्थ–वेस्ट भागों में ही रहेगा। सांसारिक रूप से चाहें वह रिश्ते में छोटा ही क्यों न हो।

जिस प्रकार बेडरूम में प्रत्येक संतान व सदस्य का स्थान निर्धारित होता है उसकी प्रकार यदि घर के मुखिया के कमरे के किसी कोने में दोष है तो उस कोने से सम्बन्धित संतान पर इसका प्रभाव लागू होगा। यदि प्रत्येक व्यक्ति अलग–अलग कमरों में रहता है तो उन पर उनके कमरों का वास्तु भी लागू होगा।

ऊपर बताए गए सभी नियम प्रकृति द्वारा निर्धारित हैं, इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है। यदि आप इन नियमों की सत्यता को जाँचना चाहते हैं तो किसी भी भवन को देखे, प्रत्येक भवन में मुखिया व बड़े सदस्य साउथ–वेस्ट, साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट भागों में ही निवास करेंगे। छोटे सदस्य उत्तर, पूर्व व नार्थ–ईस्ट भाग में ही रहेंगे। यह भी प्रकृति द्वारा निर्धारित एक नियम है।
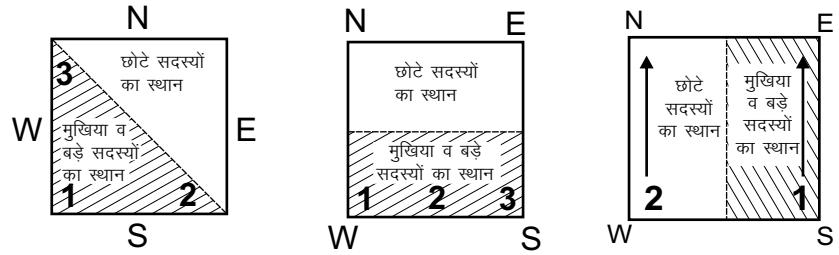
यह पुस्तक श्री द्वारकाधीश धार्मिक समिति के माध्यम से प्रभू जी के श्री चरणों में समाज के लिए सादर समर्पित है। यदि पुस्तक में कोई त्रुटि रह जाती है तो इसके लिए माफी चाहते हैं व आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

(श्री द्वारकाधीश धार्मिक समिति)

दिशाएँ देखने की विधि

कम्पास के द्वारा दिशाओं का ज्ञान

वास्तु जानने के लिए दिशाओं का सही निर्धारण जरूरी है। दिशा जानने के लिए कम्पास का प्रयोग करते हैं। जिसमें एक चुम्बकीय सुई होती है जिसका तीर उत्तर दिशा में ही रूकता है।

कम्पास को भवन के मध्य में रखने पर सुई जिस दिशा में रूकती है वह उत्तर होता है। उत्तर से 180 डिग्री पर दक्षिण, दाईं ओर 90 डिग्री पर पूर्व व बाईं ओर 90 डिग्री पर पश्चिम होता है।

कम्पास से देखने पर यदि दिशा मध्य में न होकर 22.5 डिग्री तक हटी हो तो दिशा प्लॉट व इससे अधिक हटने पर विदिशा प्लॉट माना जाता है।

उत्तर दिशा
नार्थ–ईस्ट विदिशा
पूर्व दिशा
साउथ–ईस्ट विदिशा
दक्षिण दिशा
साउथ–वेस्ट विदिशा
पश्चिम दिशा
नार्थ–वेस्ट विदिशा
N 0° NNE 22.5° NE 45° ENE 67.5° E 90° ESE 112.5° SE 135° SSE 157.5° S 180° SSW 202.5° SW 225° WSW 247.5° W 270° WNW 292.5° NW 315° NNW 337.5°
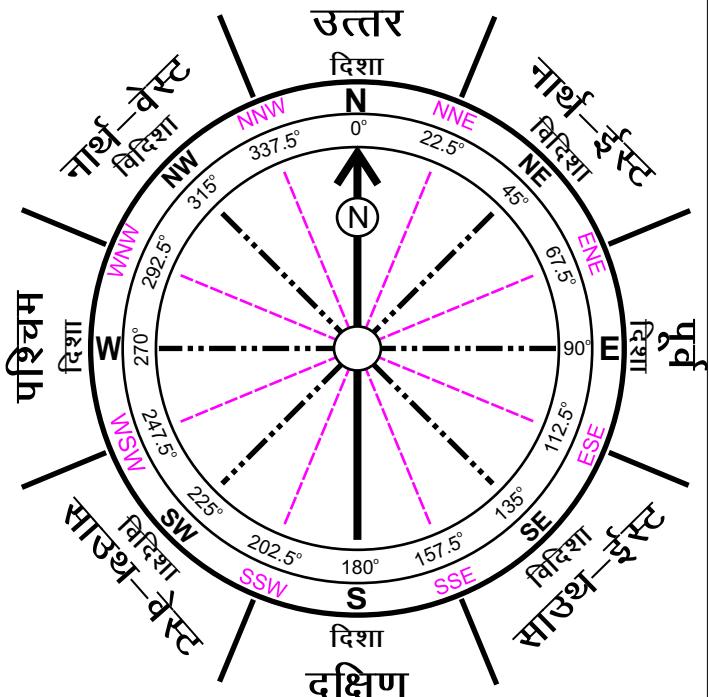
सूर्य के द्वारा दिशाओं का ज्ञान

समय के अनुसार सूर्य की स्थिति देखकर हम लगभग दिशाओं का निर्धारण कर सकते हैं।

शाम 07:30 बजे के समय सूर्य आंशिक रूप से वेस्ट–नार्थवेस्ट में होते हैं।

शाम 06:00 बजे के समय सूर्य पूर्ण रूप से पश्चिम में होते हैं।

शाम 04:00 बजे के समय सूर्य वेस्ट–साउथवेस्ट में होते हैं।

दोपहर 02:00 बजे के समय सूर्य साउथ–साउथवेस्ट में होते हैं।

NW	N	NE
W		E
SW	S	SE

दोपहर 01:00 बजे के समय सूर्य दक्षिण में होते हैं।

सुबह 12:00 बजे के समय सूर्य साउथ–साउथईस्ट में होते हैं।

सुबह 5 बजे के समय सूर्य आंशिक रूप से ईस्ट–नार्थईस्ट में होते हैं।

सुबह 6 बजे के समय सूर्य पूर्ण रूप से पूर्व में होते हैं।

सुबह 08:00 बजे के समय सूर्य आंशिक रूप से ईस्ट–साउथईस्ट में होते हैं।

सुबह 10:00 बजे के समय सूर्य पूर्ण रूप से ईस्ट–साउथईस्ट में होते हैं।

भवन में मंदिर का स्थान
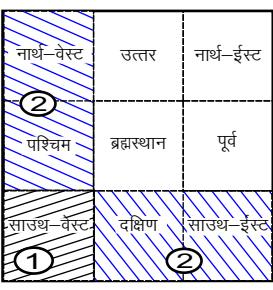
नार्थ–ईस्ट में गंगाजी का वास है। इसलिए नार्थ–ईस्ट भाग भूमिपूजन के लिए होता है। वास्तु के अनुसार भवन/भूमि के नार्थ–ईस्ट का स्थान सेवक/बच्चे/छोटे भाई का होता है। परिवार के मुखिया का स्थान सदैव साउथ–वेस्ट/उच्च स्थान में होता है। इसलिए मंदिर सदैव दक्षिण, पश्चिम, साउथ–वेस्ट, साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट भाग ही बनाएँ। इन स्थानों पर मंदिर होने से घर में भगवान के वास का एहसास होता है और भगवान स्वयं घर की रक्षा करते हैं। अनेक प्रसिद्व मंदिरों जैसे तिरूपति बालाजी, बाँके बिहारी जी, गोल्डन टेम्पिल, लोटस टेम्पिल इत्यादि में भगवान का स्थान दक्षिण , पश्चिम व साउथ–वेस्ट में है व द्वार पूर्व , उत्तर व नार्थ–ईस्ट में है।
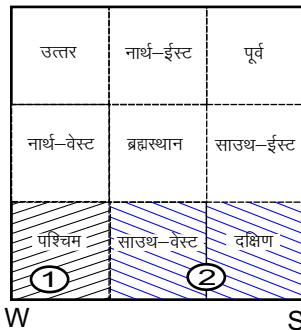
यदि मंदिर को बेडरूम में स्थापित करना है तो इसे चित्र में दिखाई गई बेडरूम की दिशाओं में ही करें।

मंदिर बनाने के लिए : नं0 1 में दिखाई गई जगह सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ संभव न होने पर नं0 2 में दिखाई गई जगह में बना सकते हैं।

वास्तु के अनुसार भूमि का उपयोग

वर्गाकार प्लॉट सिर्फ मंदिर के लिए

जिस प्लॉट की चारो भुजाएँ समान या 5 प्रतिशत छोटी बड़ी होने से यह पूर्णतया वर्गाकार प्लॉट होगा। इस प्लॉट का प्रयोग निवास, व्यापार या अन्य कार्यों के लिए उपयुक्त नहीं है।
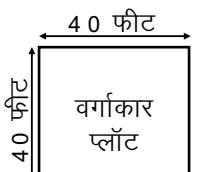
यदि प्लॉट की एक भुजा दूसरी से 10 प्रतिशत से छोटी है तो इसे भी वर्गाकार प्लॉट ही माना जाएगा।
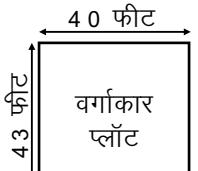
आयताकार प्लॉट सभी सांसारिक कार्यों के लिए

यदि प्लॉट की एक भुजा दूसरी से 10 प्रतिशत या इससे अधिक बड़ी है तो यह आयताकार प्लॉट होगा। आयताकार प्लॉट का उपयोग सभी सांसारिक कार्यों जैसे मकान, दुकान, आफिस, इमारत, फैक्ट्री इत्यादि के लिए कर सकते हैं।
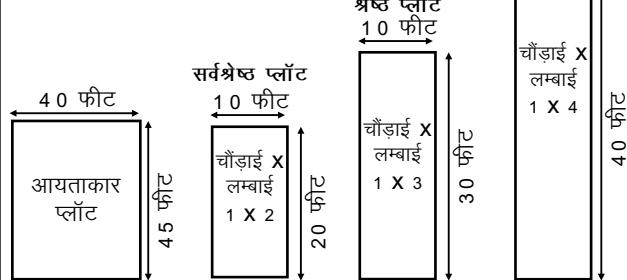
प्लॉट में दिशाओं का विभाजन

दिशा प्लॉट

जिस प्लॉट में दिशा मध्य में आती हैं वह दिशा प्लॉट होता है। इसका विभाजन 3 बराबर भागों में करने पर यह 9 भागों में विभाजित हो जाता है जिसके मध्य में ब्रह्मस्थान होता है।
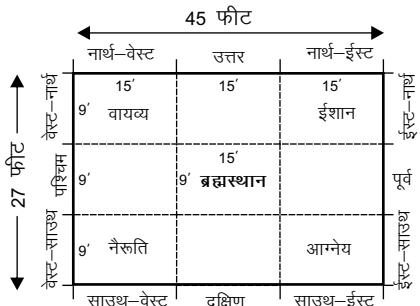
विदिशा प्लॉट

जिस प्लॉट में दिशा कोने में आती हैं वह विदिशा प्लॉट होता है। इसका विभाजन 3 बराबर भागों में करने पर यह 9 भागों में विभाजित हो जाता है जिसके मध्य में ब्रह्मस्थान होता है।

ब्रह्मस्थान व मुख्य ब्रह्मस्थान का निर्धारण

प्लॉट/भवन/बेडरूम का ब्रह्मस्थान

यदि किसी प्लॉट/भवन/बेडरूम की लम्बाई 45 फीट व चौड़ाई 27 फीट हो तो इसे तीन बराबर भागों में विभाजित करने पर यह चित्र में दिखाए अनुसार 9 भागों में विभाजित हो जाएगा। इसके मध्य का भाग ब्रह्मस्थान है। जिसकी लम्बाई 15 फीट व चौड़ाई 9 फीट है।
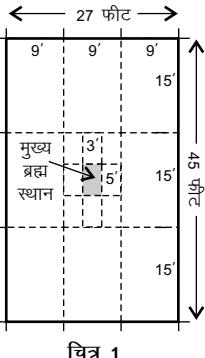
मुख्य ब्रह्मस्थान का निर्धारण करने के लिए इस ब्रह्मस्थान की लम्बाई व चौड़ाई को भी तीन बराबर भागों में विभाजित करने पर इसके मध्य का स्थान मुख्य ब्रह्मस्थान है, जिसकी लम्बाई 5 फीट व चौड़ाई 3 फीट है।

चित्र 1

ब्रह्मस्थान की स्थिति में बदलाव

यदि बॉलकनी/निर्माण से प्लॉट/भवन/बेडरूम की लम्बाई/चौड़ाई बढ़ जाती है तो ब्रह्मस्थान का निर्धारण बढ़ी हुई लम्बाई/चौड़ाई को मिलाकर ही किया जाएगा।

यदि बॉलकनी की लम्बाई 6 फीट हो तो अब इस प्लॉट/भवन की कुल लम्बाई 51 फीट हो जाएगी। बॉलकनी के निर्माण के बाद इस प्लॉट/भवन/बेडरूम का ब्रह्मस्थान प्लॉट की लम्बाई व बॉलकनी की लम्बाई को जोड़कर चित्र 1 के अनुसार ही निकाला जाएगा। यहाँ ब्रह्मस्थान की चौड़ाई X लम्बाई 9′ X 17′ और मुख्य ब्रह्मस्थान की चौड़ाई X लम्बाई 3′ X 5.6′ होगी।

चित्र 2

प्लॉट व निर्माण के ब्रह्मस्थान का निर्धारण

प्लॉट का ब्रह्मस्थान, प्लॉट मे निर्माण का ब्रह्मस्थान, निर्माण में किसी भी फ्लोर का ब्रह्मस्थान, फ्लोर में किसी भी बेडरूम का ब्रह्मस्थान, निर्माण की छत के ब्रह्मस्थान में दोष के आंशिक प्रभाव रहेंगे व इनके मुख्य ब्रह्मस्थान में दोष के गंभीर प्रभाव होंगे। इनमें से किसी में भी बोरिंग, सेप्टिक टैंक, अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक, कुआँ, भारी मशीन, पानी की टंकी, स्तम्भ व फर्श का तल ऊँचा या नीचा होने पर घर के मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान व वंशनाश संभव है।

यदि किसी भवन में आगे की तरफ खुला स्थान है व पीछे की तरफ निर्माण हुआ है तो भवन में प्लॉट, निर्माण व बेडरूम तीनो के ब्रह्मस्थान का निर्धारण करना जरूरी है। तीनो ब्रह्मस्थानों में कोई भी वास्तु दोष नहीं होना चाहिए।

प्लॉट का ब्रह्मस्थान **चित्र 1** में दिखाए अनुसार ही निकालें। निर्माण के ब्रह्मस्थान को निकालने के लिए चित्र 1 में बताई गई विधि का ही प्रयोग करें, ध्यान रहे कि इसके लिए सिर्फ निर्माण की लम्बाई व चौड़ाई की माप का ही प्रयोग करें।

चित्र 3

चित्र 4

बहुमंजिली इमारत में ब्रह्मस्थान का निर्धारण

अक्सर देखा गया है कि बहुमंजिली इमारत में हम ग्राउन्ड फ्लोर पर ब्रह्मस्थान का निर्धारण करके उसके अनुसार निर्माण कर लेते हैं किन्तु इसके पश्चात ऊपर की मंजिलों या आखरी छत पर बॉलकनी का निर्माण कर देते हैं। इससे भवन की लम्बाई व चौड़ाई उतनी ही बढ़ जाती है। ध्यान रहे कि ऊपर की मंजिलों या आखरी छत पर बॉलकनी/निर्माण से लम्बाई व चौंड़ाई बढ़ने से पूरी ईमारत के ब्रह्मस्थान की लम्बाई व चौंड़ाई भी उसी अनुपात में बढ़ जाएगी व इसका स्थान भी बदल जाएगा। स्थान बदलने के पश्चात यदि ब्रह्मस्थान में बोरिंग, सेप्टिक टैंक, अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक, कुआँ, भारी मशीन, पानी की टंकी, स्तम्भ व फर्श का तल ऊँचा या नीचा होने पर घर के मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान व वंशनाश संभव है।

इसलिए यह ध्यान रखें कि हर मंजिल पर ब्रह्मस्थान का निर्धारण भवन की आखरी छत की लम्बाई व चौंड़ाई से ही करना चाहिए। किसी एक मंजिल के ब्रह्मस्थान में दोष होने पर उस मंजिल के निवासियों पर ही इसके प्रभाव लागू होंगे किन्तु यदि ग्राउन्ड फ्लोर या छत पर ब्रह्मस्थान में दोष है तो इसके प्रभाव पूरी ईमारत पर लागू होंगे।

प्लॉट/भवन/बेडरूम जुड़ने पर ब्रह्मस्थान की स्थिति

चित्र 1 में दो अलग-अलग प्लॉट/भवन/बेडरूम दिखाए गए हैं। इन दोनों का ब्रह्मस्थान भी अलग-अलग है।

चित्र 1

चित्र 2 में दिखाए अनुसार यदि **प्लॉट/भवन/बेडरूम 1** व **प्लॉट/भवन/बेडरूम 2** के बीच की दीवार का पूरा या कुछ भाग हट जाता है तो दोनों को मिलाकर एक ही माना जाएगा। इसलिए इस पूरे प्लॉट/भवन/बेडरूम का ब्रह्मस्थान भी दिखाए अनुसार एक ही होगा। जिस मंजिल पर यह किया गया है, उसके नीचे की मंजिल की दीवार और उसके ऊपर की मंजिल की दीवार ब्रह्मस्थान में रहने से यह गंभीर वास्तु दोष होगा। इससे पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश भी संभव है।

चित्र 2

नोट : दीवार न हटाकर वहाँ केवल वह दरवाजा जो खोला और बंद किया जा सके लगाने पर यह दोष नहीं होगा।
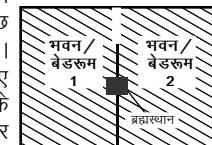
भवन/बेडरूम के आकार के अनुसार परिवार के सदस्यों पर प्रभाव

उत्तर, दक्षिण , साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट भाग महिलाओं का होता है।

भवन/बेडरूम की लम्बाई उत्तर व दक्षिण में अधिक है। इसलिए इस भवन/बेडरूम में महिलाओं का प्रभाव अधिक होगा।

भवन/बेडरूम की लम्बाई साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट में अधिक है। इसलिए इस भवन/बेडरूम में महिलाओं का प्रभाव अधिक होगा।

पूर्व , पश्चिम , नार्थ–ईस्ट व साउथ–वेस्ट भाग पुरूषों का होता है।

भवन/बेडरूम की लम्बाई पूर्व व पश्चिम में अधिक है। इसलिए इस भवन/बेडरूम में पुरूषों का प्रभाव अधिक होगा।

भवन/बेडरूम की लम्बाई नार्थ–ईस्ट व साउथ–वेस्ट में अधिक है। इसलिए इस भवन/बेडरूम में पुरूषों का प्रभाव अधिक होगा।

इन भवन/बेडरूम में महिलाओं के दोनो भाग कट गए हैं। इसलिए इस तरह के भवन/बेडरूम में महिलाएँ नहीं रहेंगी व मृत्यु भी संभव है। कटे हुए भाग में मुख्य द्वार होने पर यदि पूरे भवन में एक ही परिवार निवास करता है तो कटे हुए भाग के प्रभाव आंशिक रह जाएँगे।
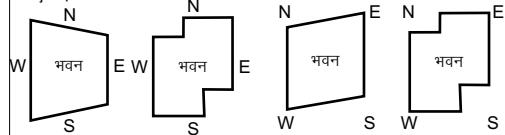
इन भवन/बेडरूम में पुरूषों के दोनो भाग कट गए हैं। इसलिए इस तरह के भवन/बेडरूम में पुरूष नहीं रहेंगे व मृत्यु भी संभव है। कटे हुए भाग में मुख्य द्वार होने पर यदि पूरे भवन में एक ही परिवार निवास करता है तो कटे हुए भाग के प्रभाव आंशिक रह जाएँगे।
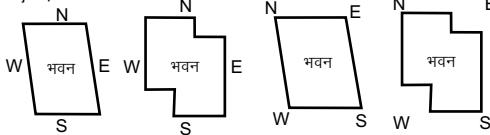
भवन/बेडरूम का आकार नीचे दिखाए गए चित्रों के अनुसार होने पर इस भूमि/भवन/बेडरूम में महिलाओं का प्रभाव अधिक रहेगा। कटे हुए भाग में मुख्य द्वार होने पर यदि पूरे भवन में एक ही परिवार निवास करता है तो कटे हुए भाग के प्रभाव आंशिक रह जाएँगे।

भवन/बेडरूम का आकार नीचे दिखाए गए चित्रों के अनुसार होने पर भवन/बेडरूम में पुरूषों का प्रभाव अधिक रहेगा। कटे हुए भाग में मुख्य द्वार होने पर यदि पूरे भवन में एक ही परिवार निवास करता है तो कटे हुए भाग के प्रभाव आंशिक रह जाएँगे।

भवन / बेडरूम में सदस्यों का स्थान
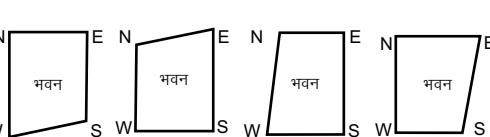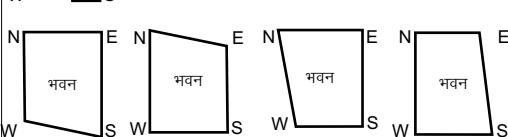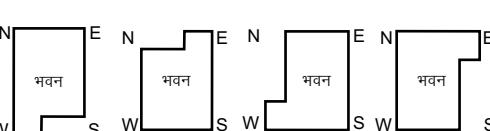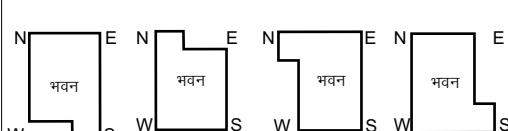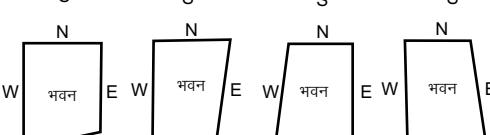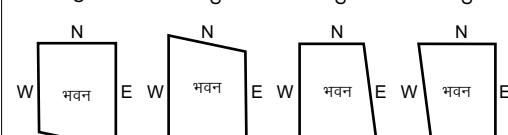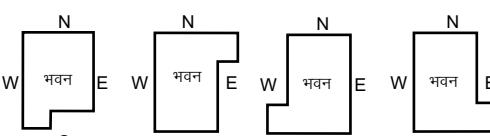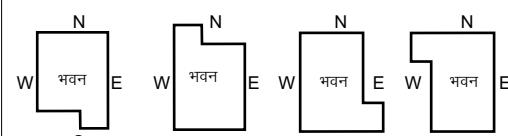
प्रकृति ने भवन / बेडरूम में प्रत्येक व्यक्ति का स्थान निर्धारित किया हुआ है। भवन के किसी भी तरफ सड़क हो, भवन / बेडरूम के इन स्थानों में वास्तु दोष होने पर उस स्थान से सम्बन्धित व्यक्ति पर इसका आंशिक या गम्भीर प्रभाव पड़ता है।

प्लॉट में निर्माण शुरू करने की विधि

1. प्लॉट चाहें दिशा हो या विदिशा, नींव की खुदाई नार्थ–ईस्ट से शुरू करते हुए नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट तक साथ–साथ (समान्तर) लाएँ, फिर नार्थ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट से शुरू करते हुए साउथ–वेस्ट तक साथ–साथ लाकर पूर्ण करें। चित्र 1 व 2 देखें :–
2. भूमि पूजन नार्थ–ईस्ट में ही करना चाहिए। इसके बाद पूर्व, नार्थ–ईस्ट या उत्तर में अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक, कुआँ या बोरिंग बना सकते हैं। ध्यान रहे कि भवन बनने के बाद मंदिर का स्थान साउथ–वेस्ट में ही हो।
3. नींव भराई का काम साउथ–वेस्ट से शुरू करते हुए नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट तक साथ–साथ (समान्तर) लाएं। फिर नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट से शुरू करते हुए नार्थ–ईस्ट तक साथ–साथ लाकर पूर्ण करें। चित्र 3 व 4 देखें :–
4. दीवारें बनाते समय नींव की भराई वाला ही क्रम रखें। रोजाना शाम को ध्यान रखें कि दिनभर का कार्य पूरा होने के बाद पूर्व , उत्तर व नार्थ–ईस्ट की दीवारों की ऊँचाई व मोटाई कभी भी दक्षिण , पश्चिम व साउथ–वेस्ट की दीवारों से ज्यादा न हो।

5. भवन के ऑगन, बरामदा, प्रत्येक कमरे आदि के फर्श का लेवल इस प्रकार रखें कि साफ–सफाई करने के दौरान बहने वाला पानी दक्षिण, पश्चिम या साउथ–वेस्ट से उत्तर, पूर्व या नार्थ–ईस्ट की ओर ही बहे। फर्श का ढ़ाल शून्य भी रख सकते हैं। किन्तु यह ध्यान रहे कि ढ़ाल किसी भी हाल में दक्षिण, पश्चिम या साउथ–वेस्ट की तरफ नहीं होना चाहिए।
6. सामग्री (सीमेंट, ईंट, पत्थर, लोहा, टाइल्स मिट्टी, रेत इत्यादि) को प्लॉट के दक्षिण , पश्चिम या साउथ–वेस्ट में ही रखें। ध्यान रहे कि पूर्व , उत्तर , नार्थ–ईस्ट , साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट में कोई भी सामग्री न रखें। संभव हो तो सामग्री सड़क के दूसरी तरफ ही डालें। अपने प्लॉट के सम्मुख न रखें।
7. भवन / बेडरूम में फर्श का ढ़ाल बनाते समय यह ध्यान रखें कि साउथ–वेस्ट में फर्श का ढ़ाल सबसे ऊँचा, साउथ–ईस्ट में साउथ–वेस्ट से नीचा, नार्थ–वेस्ट में साउथ–ईस्ट से नीचा व नार्थ–ईस्ट में सबसे नीचा रहना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि साउथ–वेस्ट का तल 1 फीट ऊँचा है तो साउथ–ईस्ट 10 इंच, नार्थ–वेस्ट 8 इंच व नार्थ–ईस्ट का तल 6 इंच पर रख सकते हैं।

वास्तु के अनुसार शुभ प्लॉट / भवन

नीचे कुछ प्लॉट/भवन प्राकृतिक स्थितियों में दिखाए गए हैं। कोई भी प्लॉट/भवन नीचे दिखाई गई प्राकृतिक स्थितियो में होने पर अत्यधिक शुभ होता है। इस तरह के भवन में गम्भीर वास्तु दोष होने पर भी उसका प्रभाव आंशिक ही रहता है।

प्लॉट/भवन के चारो तरफ सड़क होने पर :

किसी प्लॉट/भवन के चारो तरफ सड़क होने पर यह अत्यधिक शुभ होता है। इस भवन के निवासी स्वस्थ, निर्मल स्वभाव, धर्म-कर्म में रूचि रखने वाले व सन्त प्रवृत्ति के होंगे। समाज में इनको उच्च स्थान की प्राप्ति होगी व धन की समस्या नहीं रहेगी।
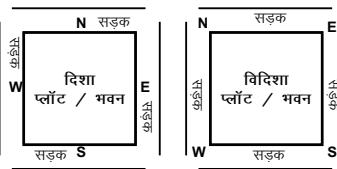
प्लॉट/भवन सड़क टक्कर होने पर :

प्लॉट/भवन के दिखाए गए भागों में सड़क टक्कर अत्यधिक शुभ है।

दिशा प्लॉट

नार्थ-ईस्ट सड़क टक्कर: प्लॉट/भवन के नार्थ-ईस्ट कोने पर सड़क टक्कर होने पर निवासी बुद्विमान, धार्मिक, मेहनती, ईमानदार, शिक्षित व उच्च पद पर कार्यरत व धन की प्राप्ति होगी। घर के मुखिया व पहली संतान को विशेष लाभ मिलेगा।

नार्थ-नार्थईस्ट सड़क टक्कर: प्लॉट/भवन के नार्थ-नार्थईस्ट भाग में सड़क टक्कर होने पर महिलाएँ बुद्विमान, धार्मिक, निर्मल स्वभाव, शिक्षित व उच्च पद पर कार्यरत होंगी। पुरूष महिलाओं की अपेक्षा कमजोर रहेंगे। पहली संतान स्त्री होने पर वह स्वस्थ व सुखी रहेगी।

ईस्ट-नार्थईस्ट सड़क टक्कर: प्लॉट/भवन के ईस्ट-नार्थईस्ट भाग में सड़क टक्कर होने पर पुरूष बुद्विमान, धार्मिक, मेहनती, ईमानदार, शिक्षित व उच्च पद पर कार्यरत होंगे। पहली संतान पुरूष होने पर वह स्वस्थ व सुखी रहेगा।

वेस्ट-नार्थवेस्ट सड़क टक्कर: प्लॉट/भवन के वेस्ट-नार्थवेस्ट भाग में सड़क टक्कर होने पर पुरूष बुद्विमान, समाज में मान-सम्मान, उच्च पद पर कार्यरत व नेता बनना संभव है। तीसरी/सातवीं संतान पुरूष होने पर उसे विशेष लाभ मिलेगा।
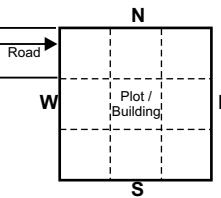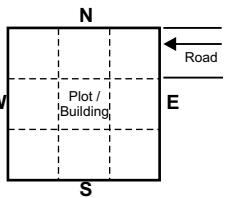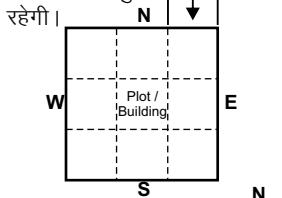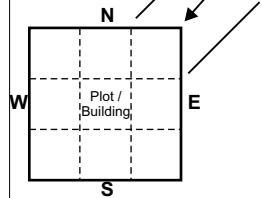
साउथ-साउथईस्ट सड़क टक्कर: प्लॉट/भवन के साउथ-साउथईस्ट भाग में सड़क टक्कर होने पर महिलाएँ स्वस्थ रहेंगी, स्वभाव विनम्र होगा व समाज में मान-सम्मान होगा। दूसरी/छठी संतान स्त्री होने पर उसे विशेष लाभ मिलेगा।
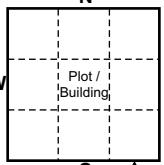
विदिशा प्लॉट

नार्थ-ईस्ट सड़क टक्कर: प्लॉट/भवन के पूरे या मध्य के नार्थ-ईस्ट भाग में सड़क टक्कर होने पर निवासी बुद्विमान, धार्मिक, मेहनती, ईमानदार, शिक्षित व उच्च पद पर कार्यरत व धन की प्राप्ति होगी। घर के मुखिया व पहली संतान को विशेष लाभ मिलेगा।
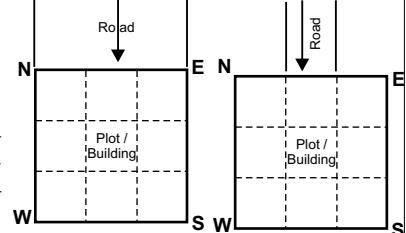
पूर्व सड़क टक्कर: प्लॉट/भवन के पूर्व कोने में सड़क टक्कर होने पर पुरूष बुद्विमान, स्वस्थ, धार्मिक, निर्मल स्वभाव व समाज में प्रतिष्ठित होंगे।
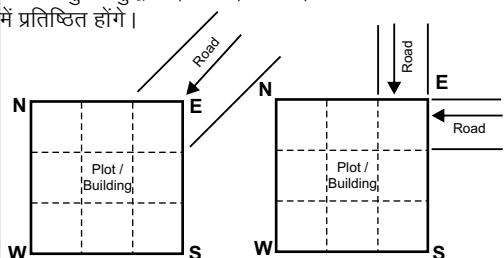
उत्तर सड़क टक्कर: प्लॉट/भवन के उत्तर कोने में सड़क टक्कर होने पर महिलाएँ स्वस्थ, बुद्विमान, धार्मिक व निर्मल स्वभाव की होंगी। धन की प्राप्ति होगी।
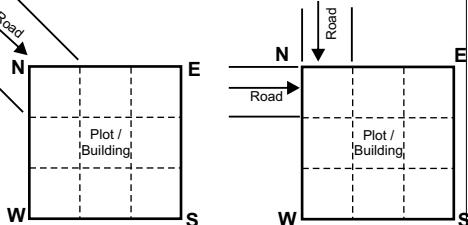
प्लॉट/भवन में कोना बढ़ना : प्लॉट/भवन का नार्थ–ईस्ट कोना बढ़ना अत्यधिक शुभ है।

दिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट कोना बढ़ना: निवासी बुद्विमान, धार्मिक, मेहनती, ईमानदार, शिक्षित व उच्च पद पर कार्यरत व धन की प्राप्ति होगी। घर के मुखिया व पहली संतान को विशेष लाभ मिलेगा।
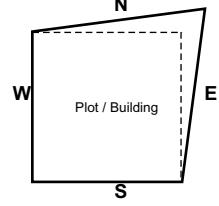
नार्थ–नार्थईस्ट कोना बढ़ना : महिलाएँ बुद्विमान, धार्मिक, निर्मल स्वभाव, शिक्षित व उच्च पद पर कार्यरत होंगी। पुरूष महिलाओं की अपेक्षा कमजोर रहेंगे। पहली संतान स्त्री होने पर वह स्वस्थ व सुखी रहेगी।
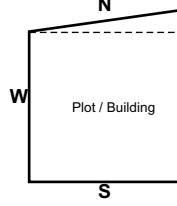
ईस्ट–नार्थईस्ट कोना बढ़ना : पुरूष बुद्विमान, धार्मिक, मेहनती, ईमानदार, शिक्षित व उच्च पद पर कार्यरत होंगे। पहली संतान पुरूष होने पर वह स्वस्थ व सुखी रहेगा।
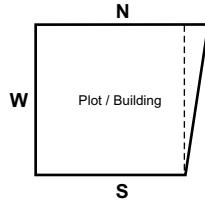
विदिशा प्लॉट

पूर्व कोना बढ़ना : पूर्व कोने में सड़क टक्कर होने पर पुरूष बुद्विमान, स्वस्थ, धार्मिक, निर्मल स्वभाव व समाज में प्रतिष्ठित होंगे।
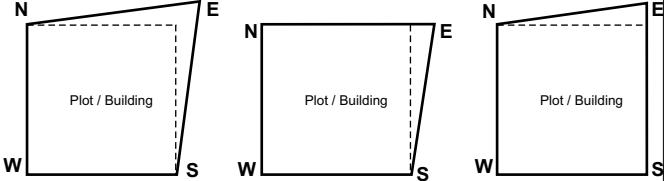
पश्चिम/दक्षिण/साउथ–वेस्ट में पहाड़/ऊँची ईमारत इत्यादि होना।

प्लॉट/भवन के पश्चिम/दक्षिण/साउथ–वेस्ट में पहाड़, ऊँची ईमारतें इत्यादि होना शुभ होता है।

दिशा प्लॉट
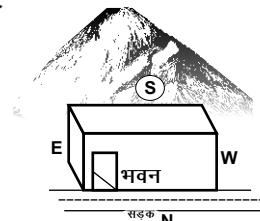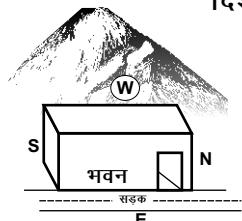
विदिशा प्लॉट

पश्चिम में पहाड़ इत्यादि: पुरूष स्वस्थ रहेंगे, मान–सम्मान व आत्मविश्वास में वृद्वि होगी। पुरूष थोड़े आलसी होंगे किन्तु इन्हें कम मेहनत में अच्छे परिणाम मिलेंगे।

दक्षिण में पहाड़ इत्यादि: महिलाएँ स्वस्थ रहेंगी, स्वभाव निर्मल होगा, मान–सम्मान व आत्मविश्वास में वृद्वि होगी। धन की कमी नहीं रहेगी।

साउथ–वेस्ट में पहाड़ इत्यादि : निवासी स्वस्थ रहेंगे, मान–सम्मान व आत्मविश्वास में वृद्वि होगी व कम मेहनत में अच्छे परिणाम मिलेंगे। घर के मुखिया व पहली संतान को विशेष लाभ मिलेगा।

पूर्व/उत्तर/नार्थ–ईस्ट में तालाब, कुआँ, गढ़्ढ़ा, ढ़लान होना।

प्लॉट/भवन के पूर्व/उत्तर/नार्थ–ईस्ट में तालाब, कुआँ, गढ़्ढ़ा, ढ़लान इत्यादि होना शुभ होता है।

दिशा प्लॉट
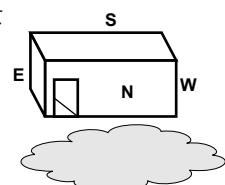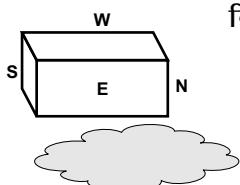
विदिशा प्लॉट

पूर्व में तालाब इत्यादि: पुरूष बुद्विमान, स्वस्थ, धार्मिक, निर्मल स्वभाव व समाज में प्रतिष्ठित होंगे।

उत्तर में तालाब इत्यादि: महिलाएँ स्वस्थ, बुद्विमान, धार्मिक व निर्मल स्वभाव की होंगी। धन की प्राप्ति होगी।

नार्थ–ईस्ट में तालाब इत्यादि: निवासी बुद्विमान, धार्मिक, मेहनती, ईमानदार, शिक्षित व उच्च पद पर कार्यरत व धन की प्राप्ति होगी। घर के मुखिया व पहली संतान को विशेष लाभ मिलेगा।

वास्तु के अनुसार भवन के निर्माण की विधि

ध्यान रखें : ऊपरी मंजिल पर रसोई / टॉयलेट / बॉथरूम के निर्माण में संक / गढ्ढ़ा बनाया जाता है, जिसमें से गन्दे पानी के पाईप फर्श में से ले जाते हैं। इससे भवन का वह भाग मोटा और वजनी हो जाता है। जिस दिशा में इस तरह से निर्माण होता है, उसके भारी होने के प्रभाव लागू होते हैं। इसलिए संक / गढ़ढ़ा न करें। भवन के केवल दक्षिण, पश्चिम व साउथ–वेस्ट भाग में ही मोटा व भारी कर सकते हैं।

दिशा प्लॉट उत्तर फेसिंग प्लॉट

सिर्फ ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए दरवाजा नीच स्थान पर होने पर भी सीढ़ी की वजह से दोष नहीं लगेगा।

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें।

बोरिंग नार्थ–ईस्ट में ही रखें। सेप्टिक टैंक उत्तर के मध्य में ही बनाएँ। कमरे, रसोई, टॉयलेट इत्यादि भवन में कहीं भी बना सकते हैं। सीढ़ी का निर्माण पश्चिम की दीवार के साथ करें, यह उत्तर की मुख्य दीवार से नहीं सटनी चाहिए। उत्तर फेसिंग भवन में बेसमेंट का निर्माण नहीं होना चाहिए, बेसमेंट अशुभ है।

कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल(रैलिंग)

दक्षिण और पश्चिम की कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई अधिक रखें। इन दीवारों पर काँच के टुकड़े या तार इत्यादि लगा सकते हैं।

उत्तर और पूर्व की कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई कम रखें और इन दीवारों पर काँच के टुकड़े या तार न लगाएँ।

छत पर निर्माण व ओवरहेड वॉटर टैंक / वजन

छत पर मुमटी, ओवरहेड वॉटर टैंक / वजन या अन्य कोई भी निर्माण नं0 1 में दिखाई गई जगह में ही करें। निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में करें। यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर हो।
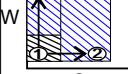
डूप्लेक्स हाउस / मेजानाईन फ्लोर

शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बिना शेड और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

मंदिर का स्थान

भवन / बेडरूम के शेड द्वारा दिखाए गए स्थान / दिशाओं में ही मंदिर रखें।

रोड से फर्श का लेबल व पानी का निकास
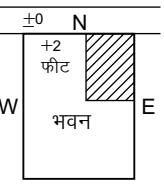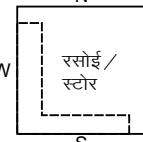
भवन में फर्श का लेबल रोड से कम से कम 2 फीट ऊँचा रखें। भवन में शेड द्वारा दिखाए गए भाग से ही पानी का निकास करें।

स्लैब का निर्माण

रसोई / स्टोर का निर्माण भवन में कहीं भी कर सकते हैं किन्तु स्लैब को दक्षिण और पश्चिम की दीवारों के साथ ही बनाएँ किसी भी हाल में उत्तर व पूर्व की दीवार के साथ न बनाएँ।

टॉयलेट का निर्माण
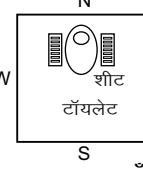
टॉयलेट भवन में कहीं भी बना सकते हैं किन्तु शीट इस प्रकार लगाएँ कि मल–मूत्र का त्याग करते समय मुख सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ न हो।

टाँड / परछत्ति व अलमारी
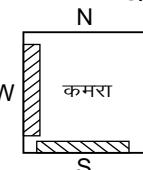
टाँड / परछत्ति, अलमारी या भारी सामान जैसे सोफा इत्यादि किसी भी कमरे की दक्षिण और पश्चिम की दीवारों पर शेड द्वारा दिखाए गए भाग में ही रखना चाहिए। यह कोनों से दूर हों।
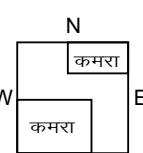
कमरों का आकार

उत्तर , पूर्व व नार्थ–ईस्ट में कमरों का आकार दक्षिण , पश्चिम व साउथ–वेस्ट के कमरों से छोटा होना चाहिए।
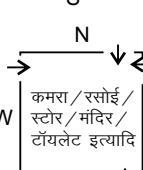
दरवाजों का स्थान

दरवाजे चित्र में दिखाई गई दिशाओं में ही रखें।
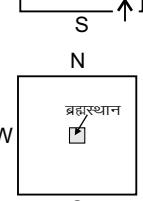
ब्रह्मस्थान

ब्रह्मस्थान में कोई भी निर्माण या गढ़ढ़ा नहीं होना चाहिए। यहाँ बोरिंग, सेप्टिक टैंक या स्तम्भ का निर्माण होने से पूरे परिवार का नाश होता है।

प्लॉट में कम निर्माण के लिए

प्रथम चयन

निर्माण उत्तर से दक्षिण तक पूरे भाग में करें। यह सर्वश्रेष्ठ है।
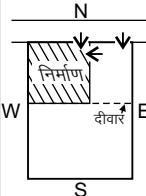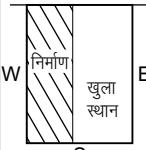
द्वितीय चयन

निर्माण पश्चिम की दीवार पर ही करें। पूर्व की तरफ खाली जगह छोड़ें। डॉटेड लाईन द्वारा दिखाए अनुसार ढ़ाई फीट ऊँची दीवार बनाकर पीछे के प्लॉट को अलग कर दें। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी।

बॉलकनी/छज्जे का निर्माण

छज्जा/बॉलकनी भवन के पूरे भाग में ही बनाएँ। इसका भार किसी स्तम्भ या दीवार पर ही रहना चाहिए।

छत की आर.सी.सी. स्लैब का निर्माण

छत की आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रखें। यह किसी भी दिशा में झुकी नहीं होनी चाहिए।

पूर्व फेसिंग प्लॉट

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें।

सिर्फ ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए दरवाजा नीच स्थान पर होने पर भी सीढ़ी की वजह से दोष नहीं लगेगा।

बोरिंग नार्थ–ईस्ट में ही रखें। सेप्टिक टैंक पूर्व के मध्य में ही बनाएँ। कमरे, रसोई, टॉयलेट इत्यादि भवन में कहीं भी बना सकते हैं। सीढ़ी का निर्माण दक्षिण की दीवार के साथ करें, यह पूर्व की मुख्य दीवार से नहीं सटनी चाहिए। पूर्व फेसिंग भवन में बेसमेंट का निर्माण नहीं होना चाहिए, बेसमेंट अशुभ है।

रोड से फर्श का लेबल व पानी का निकास

भवन में फर्श का लेबल रोड से कम से कम 2 फीट ऊँचा रखें। भवन में शेड द्वारा दिखाए गए भाग से ही पानी का निकास करें।

स्लैब का निर्माण

रसोई/स्टोर का निर्माण भवन में कहीं भी कर सकते हैं किन्तु स्लैब को दक्षिण और पश्चिम की दीवारों के साथ ही बनाएँ किसी भी हाल में उत्तर व पूर्व की दीवार के साथ न बनाएँ।

कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल(रैलिंग)

उत्तर और पूर्व की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई कम रखें और इन दीवारों पर काँच के टुकड़े या तार न लगाएँ।

दक्षिण और पश्चिम की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई अधिक रखें। इन दीवारों पर काँच के टुकड़े या तार इत्यादि लगा सकते हैं।

टॉयलेट का निर्माण

टॉयलेट भवन में कहीं भी बना सकते हैं किन्तु शीट इस प्रकार लगाएँ कि मल–मूत्र का त्याग करते समय मुख सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ न हो।

छत पर निर्माण व ओवरहेड वॉटर टैंक/वजन

छत पर मुमटी, ओवरहेड वॉटर टैंक/ वजन या अन्य कोई भी निर्माण नं0 1 में दिखाई गई जगह में ही करें। निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में करें। यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर हो।

टाँड/परछत्ति व अलमारी

टाँड/परछत्ति, अलमारी या भारी सामान जैसे सोफा इत्यादि किसी भी कमरे की दक्षिण और पश्चिम की दीवारों पर शेड द्वारा दिखाए गए भाग में ही रखना चाहिए। यह कोनों से दूर हों।

मंदिर का स्थान

भवन/बेडरूम के शेड द्वारा दिखाए गए स्थान/ दिशाओं में ही मंदिर रखें।

कमरों का आकार

उत्तर, पूर्व व नार्थ–ईस्ट में कमरों का आकार दक्षिण, पश्चिम व साउथ–वेस्ट के कमरों से छोटा होना चाहिए।

डूप्लेक्स हाउस / मेजानाईन फ्लोर

शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बिना शेड और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

प्लॉट में कम निर्माण के लिए

प्रथम चयन

निर्माण पूर्व से पश्चिम तक पूरे भाग में करें। यह सर्वश्रेष्ठ है।

द्वितीय चयन

निर्माण दक्षिण की दीवार पर ही करें। उत्तर की तरफ खाली जगह छोड़ें। डॉटेड लाईन द्वारा दिखाए अनुसार ढ़ाई फीट ऊँची दीवार बनाकर पीछे के प्लॉट को अलग कर दें। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी।

दरवाजों का स्थान

दरवाजे चित्र में दिखाई गई दिशाओं में ही रखें।

ब्रह्मस्थान

ब्रह्मस्थान में कोई भी निर्माण या गढ़ढ़ा नहीं होना चाहिए। यहाँ बोरिंग, सेप्टिक टैंक या स्तम्भ का निर्माण होने से पूरे परिवार का नाश होता है।

बॉलकनी / छज्जे का निर्माण

छज्जा / बॉलकनी भवन के पूरे भाग में ही बनाएँ। इसका भार किसी स्तम्भ या दीवार पर ही रहना चाहिए।

छत की आर.सी.सी. स्लैब का निर्माण

छत की आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रखें। यह किसी भी दिशा में झुकी नहीं होनी चाहिए।

दक्षिण फेसिंग प्लॉट

सिर्फ ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए दरवाजा नीच स्थान पर होने पर भी सीढ़ी की वजह से दोष नहीं लगेगा।

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें।

बोरिंग नार्थ–ईस्ट में ही रखें। सेप्टिक टैंक उत्तर या पूर्व के मध्य में ही बनाएँ। कमरे, रसोई, टॉयलेट इत्यादि भवन में कहीं भी बना सकते हैं। सीढ़ी का निर्माण दक्षिण या पश्चिम की दीवार के साथ करें। बोरिंग व सेप्टिक टैंक घर से बाहर बना सकते हैं, इससे आंशिक दोष रहेंगे।

कमरों का आकार

उत्तर, पूर्व व नार्थ–ईस्ट में कमरों का आकार दक्षिण, पश्चिम व साउथ–वेस्ट के कमरों से छोटा होना चाहिए।

दरवाजों का स्थान

दरवाजे चित्र में दिखाई गई दिशाओं में ही रखें।

मंदिर का स्थान

भवन / बेडरूम के शेड द्वारा दिखाए गए स्थान / दिशाओं में ही मंदिर रखें।

ब्रह्मस्थान

ब्रह्मस्थान में कोई भी निर्माण या गढ़ढ़ा नहीं होना चाहिए। यहाँ बोरिंग, सेप्टिक टैंक या स्तम्भ का निर्माण होने से पूरे परिवार का नाश होता है।

कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल (रैलिंग)

उत्तर और पूर्व की कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई कम रखें और इन दीवारों पर काँच के टुकड़े या तार न लगाएँ।

दक्षिण और पश्चिम की कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई अधिक रखें। इन दीवारों पर काँच के टुकड़े या तार इत्यादि लगा सकते हैं।

छत पर निर्माण व ओवरहेड वॉटर टैंक/वजन

छत पर मुमटी, ओवरहेड वॉटर टैंक/ वजन या अन्य कोई भी निर्माण नं0 1 में दिखाई गई जगह में ही करें। निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में करें। यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर हो।

बेसमेंट का निर्माण अतिआवश्यक

साउथ फेसिंग भवन में बेसमेंट बनाना जरूरी है। बेसमेंट भवन के पूरे भाग या कम से कम 1/6वें भाग नार्थ–ईस्ट कोने में बनाना अति आवश्यक है। किन्तु ध्यान रहे भवन के पूरे भाग में बेसमेंट होने पर उत्तर/पूर्व में सड़क/खुला स्थान होने पर भी दरवाजा नहीं होना चाहिए। पश्चिम में दरवाजा रख सकते हैं। बेसमेंट/अन्डरग्राउन्ड टैंक को दिखाए अनुसार उत्तर व पूर्व की दीवारों से कम से कम 1 फीट दूर बनाएँ।

बेसमेंट/अन्डरग्राउन्ड पानी का टैंक

स्लैब का निर्माण

रसोई/स्टोर का निर्माण भवन में कहीं भी कर सकते हैं किन्तु स्लैब को दक्षिण और पश्चिम की दीवारों के साथ ही बनाएँ किसी भी हाल में उत्तर व पूर्व की दीवार के साथ न बनाएँ।

टॉयलेट का निर्माण

टॉयलेट भवन में कहीं भी बना सकते हैं किन्तु शीट इस प्रकार लगाएँ कि मल–मूत्र का त्याग करते समय मुख सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ न हो।

प्लॉट में कम निर्माण के लिए

प्रथम चयन

निर्माण दक्षिण से उत्तर तक पूरे भाग में करें। यह सर्वश्रेष्ठ है।

द्वितीय चयन

निर्माण दक्षिण और पश्चिम की दीवार पर ही करें। पूर्व और उत्तर की तरफ खाली जगह छोड़ें। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी।
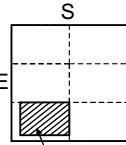
डूप्लेक्स हाउस/मेजानाईन फ्लोर

शेड द्वारा दिखाए गए भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बिना शेड और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।

शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान

शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

रोड से फर्श का लेबल व पानी का निकास

भवन में फर्श का लेबल रोड से 1 फीट से ऊपर नही होना चाहिए। फर्श का ढ़ाल साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की ओर ही रखें। शेड द्वारा दिखाए गए भाग से ही पानी का निकास करें, नार्थ–ईस्ट से अंडरग्राउन्ड पाईप के द्वारा पानी कहीं से भी निकाल सकते हैं।

टाँड/परछत्ति व अलमारी

टाँड/परछत्ति, अलमारी या भारी सामान जैसे सोफा इत्यादि किसी भी कमरे की दक्षिण और पश्चिम की दीवारों पर शेड द्वारा दिखाए गए भाग में ही रखना चाहिए। यह कोनों से दूर हों।

बॉलकनी/छज्जे का निर्माण

छज्जा/बॉलकनी भवन के पूरे भाग में ही बनाएँ।

छत की आर.सी.सी. स्लैब का निर्माण

छत की आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रखें। यह किसी भी दिशा में झुकी नहीं होनी चाहिए।

पश्चिम फेसिंग प्लॉट
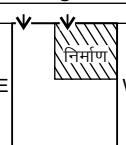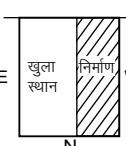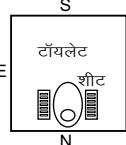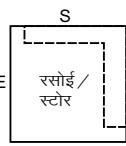
बोरिंग नार्थ–ईस्ट में ही रखें। सेप्टिक टैंक उत्तर या पूर्व के मध्य में ही बनाएँ। कमरे, रसोई, टॉयलेट इत्यादि भवन में कहीं भी बना सकते हैं। सीढ़ी का निर्माण दक्षिण या पश्चिम की दीवार के साथ करें। बोरिंग व सेप्टिक टैंक भवन/बेडरूम से बाहर बना सकते हैं, इससे आंशिक दोष रहेंगे।

दक्षिण और पश्मिच की दीवारों की मोटाई अधिक या बराबर रखें।

उत्तर और पूर्व की दीवारों की मोटाई कम या बराबर रखें।
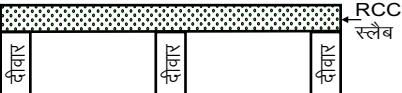
सिर्फ ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए दरवाजा नीच स्थान पर होने पर भी सीढ़ी की वजह से दोष नहीं लगेगा।

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें।

कमरों का आकार

उत्तर, पूर्व व नार्थ–ईस्ट में कमरों का आकार दक्षिण, पश्चिम व साउथ–वेस्ट के कमरों से छोटा होना चाहिए।

दरवाजों का स्थान

दरवाजे चित्र में दिखाई गई दिशाओं में ही रखें।
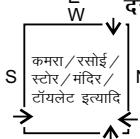
बेसमेंट का निर्माण अतिआवश्यक
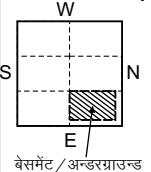
बेसमेंट / अन्डरग्राउन्ड पानी का टैंक

पश्चिम फेसिंग भवन में बेसमेंट बनाना जरूरी है। बेसमेंट भवन के पूरे भाग या कम से कम 1/6वें भाग नार्थ-ईस्ट कोने में बनाना अति आवश्यक है। किन्तु ध्यान रहे भवन के पूरे भाग में बेसमेंट होने पर उत्तर/पूर्व में सड़क/खुला स्थान होने पर भी दरवाजा नहीं होना चाहिए। दक्षिण में दरवाजा बना सकते हैं। बेसमेंट/अन्डरग्राउन्ड टैंक को दिखाए अनुसार उत्तर व पूर्व की दीवारों से कम से कम 1 फीट दूर बनाएँ।

कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल(रैलिंग)

दक्षिण और पश्चिम की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की उँचाई व मोटाई अधिक रखें। इन दीवारों पर काँच के टुकड़े या तार इत्यादि लगा सकते हैं।

उत्तर और पूर्व की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई कम रखें और इन दीवारों पर काँच के टुकड़े या तार न लगाएँ।

छत पर निर्माण व ओवरहेड वॉटर टैंक/वजन

छत पर मुमटी, ओवरहेड वॉटर टैंक/ वजन या अन्य कोई भी निर्माण नं0 1 में दिखाई गई जगह में ही करें। निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में करें। यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर हो।

डूप्लेक्स हाउस/मेजानाईन फ्लोर
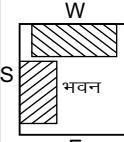
शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बिना शेड और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।

शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान

शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

रोड से फर्श का लेबल व पानी का निकास

भवन में फर्श का लेबल रोड से 1 फीट से ऊपर नही होना चाहिए। फर्श का ढ़ाल साउथ-वेस्ट से नार्थ-ईस्ट की ओर ही रखें। शेड द्वारा दिखाए गए भाग से ही पानी का निकास करें, नार्थ-ईस्ट से अंडरग्राउन्ड पाईप के द्वारा पानी कहीं से भी निकाल सकते हैं।

स्लैब का निर्माण

रसोई/स्टोर का निर्माण भवन में कहीं भी कर सकते हैं किन्तु स्लैब को दक्षिण और पश्चिम की दीवारों के साथ ही बनाएँ किसी भी हाल में उत्तर व पूर्व की दीवार के साथ न बनाएँ।
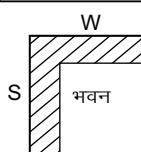
मंदिर का स्थान

भवन/बेडरूम के शेड द्वारा दिखाए गए स्थान/ दिशाओं में ही मंदिर रखें।
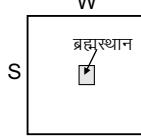
ब्रह्मस्थान

ब्रह्मस्थान में कोई भी निर्माण या गढ़ढ़ा नहीं होना चाहिए। यहाँ बोरिंग, सेप्टिक टैंक या स्तम्भ का निर्माण होने से पूरे परिवार का नाश होता है।

टॉयलेट का निर्माण

टॉयलेट भवन में कहीं भी बना सकते हैं किन्तु शीट इस प्रकार लगाएँ कि मल-मूत्र का त्याग करते समय मुख सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ न हो।
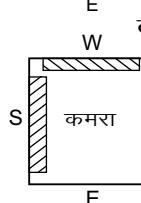
टाँड/परछत्ति व अलमारी

टाँड/परछत्ति, अलमारी या भारी सामान जैसे सोफा इत्यादि किसी भी कमरे की दक्षिण और पश्चिम की दीवारों पर शेड द्वारा दिखाए गए भाग में ही रखना चाहिए। यह कोनों से दूर हों।
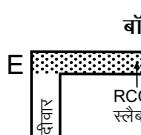
बॉलकनी/छज्जे का निर्माण

छज्जा/बॉलकनी भवन के पूरे भाग में ही बनाएँ।
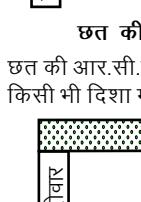
छत की आर.सी.सी. स्लैब का निर्माण

छत की आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रखें। यह किसी भी दिशा में झुकी नहीं होनी चाहिए।
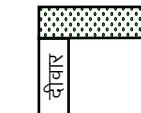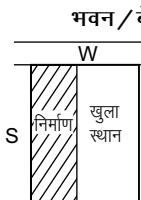
भवन/बेडरूम में कम निर्माण के लिए
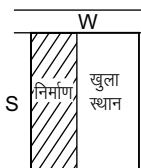
प्रथम चयन

निर्माण पश्चिम से पूर्व तक पूरे भाग में करें। यह सर्वश्रेष्ठ है।
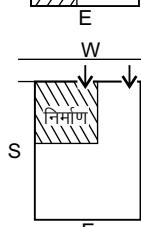
द्वितीय चयन

निर्माण दक्षिण और पश्चिम की दीवार पर ही करें। उत्तर और पूर्व की तरफ खाली जगह छोड़ें। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी।

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट फेसिंग प्लॉट

सिर्फ ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए दरवाजा नीच स्थान पर होने पर भी सीढ़ी की वजह से दोष नहीं लगेगा।

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें।

बोरिंग पूर्व में ही रखें। सेप्टिक टैंक उत्तर में ही बनाएँ। कमरे, रसोई, टॉयलेट इत्यादि भवन में कहीं भी बना सकते हैं। सीढ़ी का निर्माण नार्थ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवारों से कम 3 फीट दूर करें। नार्थ–ईस्ट फेसिंग भवन में बेसमेंट का निर्माण नहीं होना चाहिए, बेसमेंट अशुभ है।

कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल(रैलिंग)

नार्थ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/ पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई कम रखें और इस दीवार पर काँच के टुकड़े या तार न लगाएँ।

नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/ पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई एक समान ही होनी चाहिए।

साउथ–वेस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/ पैराफिट वॉल की उँचाई व मोटाई अधिक रखें। इस दीवार पर काँच के टुकड़े या तार इत्यादि लगा सकते हैं।

छत पर निर्माण व ओवरहेड वॉटर टैंक/वजन

छत पर मुमटी, ओवरहेड वॉटर टैंक/ वजन या अन्य कोई भी निर्माण नं0 1 में दिखाई गई जगह में ही करें। निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में करें। यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर हो।

डूप्लेक्स हाउस/मेजानाईन फ्लोर

शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बिना शेड और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।

शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान

शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

रोड से फर्श का लेबल व पानी का निकास

भवन में फर्श का लेबल रोड से कम से कम 2 फीट ऊँचा रखें। भवन में शेड द्वारा दिखाए गए भाग से ही पानी का निकास करें।

कमरों का आकार

नार्थ–ईस्ट के कमरों का आकार साउथ–वेस्ट के कमरों से छोटा होना चाहिए।
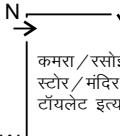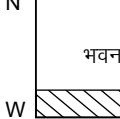
दरवाजों का स्थान

दरवाजे चित्र में दिखाई गई दिशाओं में ही रखें।

मंदिर का स्थान

भवन/बेडरूम के शेड द्वारा दिखाए गए स्थान/ दिशाओं में ही मंदिर रखें।

ब्रह्मस्थान

ब्रह्मस्थान में कोई भी निर्माण या गढ़ढ़ा नहीं होना चाहिए। यहाँ बोरिंग, सेप्टिक टैंक या स्तम्भ का निर्माण होने से पूरे परिवार का नाश होता है।

स्लैब का निर्माण
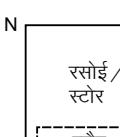
रसोई/स्टोर का निर्माण भवन में कहीं भी कर सकते हैं किन्तु स्लैब को साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ ही बनाएँ। किसी भी हाल में नार्थ–ईस्ट, साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवार पर नहीं।

टॉयलेट का निर्माण
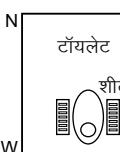
टॉयलेट भवन में कहीं भी बना सकते हैं किन्तु शीट इस प्रकार लगाएँ कि मल–मूत्र का त्याग करते समय मुख सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ न हो।

टाँड/परछत्ति व अलमारी
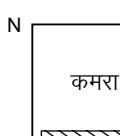
टाँड/परछत्ति, अलमारी या भारी सामान जैसे सोफा इत्यादि किसी भी कमरे की साउथ–वेस्ट की दीवारों पर शेड द्वारा दिखाए गए भाग में ही रखना चाहिए। यह कोनों से दूर हों।

बॉलकनी/छज्जे का निर्माण
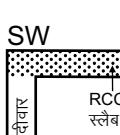
छज्जा/बॉलकनी भवन के पूरे भाग में ही बनाएँ। इसका भार किसी स्तम्भ या दीवार पर ही रहना चाहिए।
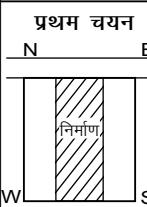
प्रथम चयन

नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में खुला स्थान एक बराबर होना चाहिए।

निर्माण नार्थ–ईस्ट से साउथ–वेस्ट तक पूरे भाग में करें। यह सर्वश्रेष्ठ है।

प्लॉट में कम निर्माण के लिए
द्वितीय चयन

निर्माण प्लॉट के मध्य में ही करें। नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में खुला स्थान एक बराबर होना चाहिए। डॉटेड लाईन द्वारा दिखाए अनुसार ढ़ाई फीट ऊँची दीवार बनाकर पीछे के भाग को अलग कर दें। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी।

छत की आर.सी.सी. स्लैब का निर्माण

छत की आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रखें। यह किसी भी दिशा में झुकी नहीं होनी चाहिए।
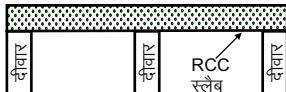
साउथ–ईस्ट फेसिंग प्लॉट

सिर्फ ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए दरवाजा नीच स्थान पर होने पर भी सीढ़ी की वजह से दोष नहीं लगेगा।

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें।

बोरिंग व सेप्टिक टैंक पूर्व में ही बनाएँ। कमरे, रसोई, टॉयलेट इत्यादि भवन में कहीं भी बना सकते हैं। सीढ़ी का निर्माण साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ, साउथ–ईस्ट की दीवार से न सटते हुए करें। साउथ–ईस्ट फेसिंग भवन में बेसमेंट का निर्माण नहीं होना चाहिए, बेसमेंट अशुभ है।

नार्थ–ईस्ट की दीवार की मोटाई कम रखें। नार्थ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट की दीवार की मोटाई एक समान रखें। साउथ–वेस्ट की दीवार की मोटाई अधिक रखें।

कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल(रैलिंग)

नार्थ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई कम रखें और इस दीवार पर काँच के टुकड़े या तार न लगाएँ।

साउथ–वेस्ट की कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई अधिक रखें। इस दीवार पर काँच के टुकड़े या तार इत्यादि लगा सकते हैं।

नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल / पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई एक समान ही होनी चाहिए।

छत पर निर्माण व ओवरहेड वॉटर टैंक / वजन

छत पर मुमटी, ओवरहेड वॉटर टैंक / वजन या अन्य कोई भी निर्माण नं0 1 में दिखाई गई जगह में ही करें। निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में करें। यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर हो।

डूप्लेक्स हाउस / मेजानाईन फ्लोर

शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बिना शेड और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

कमरों का आकार

साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट के कमरों का आकार एक दूसरे के बराबर ही होना चाहिए।
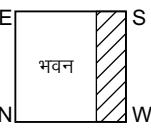
दरवाजों का स्थान

दरवाजे चित्र में दिखाई गई दिशाओं में ही रखें।

मंदिर का स्थान

भवन / बेडरूम के शेड द्वारा दिखाए गए स्थान / दिशाओं में ही मंदिर रखें।
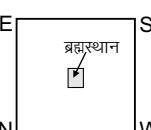
ब्रह्मस्थान

ब्रह्मस्थान में कोई भी निर्माण या गढ़ढ़ा नहीं होना चाहिए। यहाँ बोरिंग, सेप्टिक टैंक या स्तम्भ का निर्माण होने से पूरे परिवार का नाश होता है।

रोड से फर्श का लेबल व पानी का निकास

भवन में फर्श का लेबल रोड से अधिक से अधिक 9 इंच ऊँचा रखें। भवन में शेड द्वारा दिखाए गए भाग से ही पानी का निकास करें।

स्लैब का निर्माण

रसोई / स्टोर का निर्माण भवन में कहीं भी कर सकते हैं किन्तु स्लैब को साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ ही बनाएँ। किसी भी हाल में नार्थ–ईस्ट, साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवार पर नहीं।

टॉयलेट का निर्माण

टॉयलेट भवन में कहीं भी बना सकते हैं किन्तु शीट इस प्रकार लगाएँ कि मल–मूत्र का त्याग करते समय मुख सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ न हो।

टाँड/परछत्ति व अलमारी

टाँड/परछत्ति, अलमारी या भारी सामान जैसे सोफा इत्यादि किसी भी कमरे की साउथ–वेस्ट की दीवारों पर शेड द्वारा दिखाए गए भाग में ही रखना चाहिए। यह कोनों से दूर हों।

प्लॉट में कम निर्माण के लिए

निर्माण नार्थ–वेस्ट से साउथ–ईस्ट तक पूरे भाग में करें। यह सर्वश्रेष्ठ है।

निर्माण साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ ही करें। नार्थ–ईस्ट में खुला स्थान छोड़ें। डॉटेड लाईन द्वारा दिखाए अनुसार ढ़ाई फीट ऊँची दीवार बनाकर पीछे के भाग को अलग कर दें। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी।

छत की आर.सी.सी. स्लैब का निर्माण

छत की आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रखें। यह किसी भी दिशा में झुकी नहीं होनी चाहिए।

बॉलकनी/छज्जे का निर्माण

छज्जा/बॉलकनी भवन के पूरे भाग में ही बनाएँ। साउथ–ईस्ट या नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन में बॉलकनी/छज्जा दोनो तरफ एक समान लम्बाई, चौंड़ाई व भार का बनाएँ या किसी भी तरफ इसका निर्माण न करें। किसी भी एक तरफ इसका निर्माण वर्जित है।

साउथ–वेस्ट फेसिंग प्लॉट
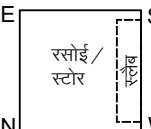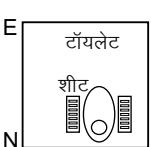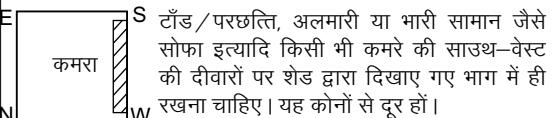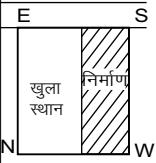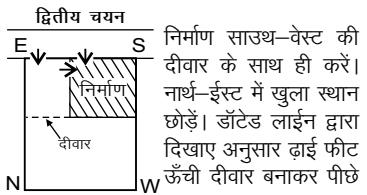
ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें।

बोरिंग को पूर्व में बनाएँ। सेप्टिक टैंक उत्तर में ही बनाएँ। कमरे, रसोई, टॉयलेट इत्यादि भवन में कहीं भी बना सकते हैं। सीढ़ी का निर्माण साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ, साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवार न सटते हुए करें। बोरिंग व सेप्टिक टैंक घर से बाहर बना सकते हैं, इससे आंशिक दोष रहेंगे।

छत पर निर्माण व ओवरहेड वॉटर टैंक/वजन

छत पर मुमटी, ओवरहेड वॉटर टैंक/वजन या अन्य कोई भी निर्माण नं0 1 में दिखाई गई जगह में ही करें। निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में करें। यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर हो।

स्लैब का निर्माण

रसोई/स्टोर का निर्माण भवन में कहीं भी कर सकते हैं किन्तु स्लैब को साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ ही बनाएँ। किसी भी हाल में नार्थ–ईस्ट, साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवार पर नहीं।

कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल(रैलिंग)

नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई एक समान ही होनी चाहिए।
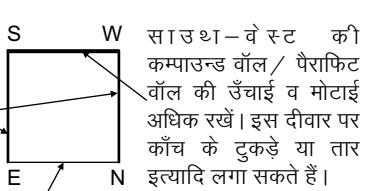
साउथ–वेस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/ पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई अधिक रखें। इस दीवार पर काँच के टुकड़े या तार इत्यादि लगा सकते हैं।

नार्थ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई कम रखें और इस दीवार पर काँच के टुकड़े या तार न लगाएँ।

कमरों का आकार

साउथ–वेस्ट के कमरों का आकार नार्थ–ईस्ट के कमरों से बड़ा होना चाहिए।

दरवाजों का स्थान

दरवाजे चित्र में दिखाई गई दिशाओं में ही रखें।

बेसमेंट का निर्माण अतिआवश्यक

साउथ–वेस्ट फेसिंग भवन में बेसमेंट बनाना जरूरी है। बेसमेंट भवन के पूरे भाग या कम से कम 1/6वें नार्थ–ईस्ट भाग में बनाना अति आवश्यक है। किन्तु ध्यान रहे भवन के पूरे भाग में बेसमेंट होने पर साउथ–ईस्ट/नार्थ–वेस्ट/नार्थ–ईस्ट में सड़क/खुला स्थान होने पर भी दरवाजा नहीं होना चाहिए। बेसमेंट/अन्डरग्राउन्ड टैंक को दिखाए अनुसार उत्तर व पूर्व की दीवारों से कम से कम 1 फीट दूर बनाएँ।

टॉयलेट का निर्माण

टॉयलेट भवन में कहीं भी बना सकते हैं किन्तु शीट इस प्रकार लगाएँ कि मल–मूत्र का त्याग करते समय मुख सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ न हो।

टाँड / परछत्ति व अलमारी

टाँड / परछत्ति, अलमारी या भारी सामान जैसे सोफा इत्यादि किसी भी कमरे की साउथ–वेस्ट की दीवारों पर शेड द्वारा दिखाए गए भाग में ही रखना चाहिए। यह कोनों से दूर हों।

डूप्लेक्स हाउस / मेजानाईन फ्लोर

शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बिना शेड और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

रोड से फर्श का लेबल व पानी का निकास

भवन में फर्श का लेबल रोड से 1 फीट से ऊँचा नही होना चाहिए। फर्श का ढ़ाल साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की ओर ही रखें। शेड द्वारा दिखाए गए भाग से ही पानी का निकास करें, नार्थ–ईस्ट से अंडरग्राउन्ड पाईप के द्वारा पानी कहीं से भी निकाल सकते हैं।

मंदिर का स्थान

भवन / बेडरूम के शेड द्वारा दिखाए गए स्थान / दिशाओं में ही मंदिर रखें।

ब्रह्मस्थान

ब्रह्मस्थान में कोई भी निर्माण या गढ़ढ़ा नहीं होना चाहिए। यहाँ बोरिंग, सेप्टिक टैंक या स्तम्भ का निर्माण होने से पूरे परिवार का नाश होता है।

बॉलकनी / छज्जे का निर्माण

छज्जा / बॉलकनी भवन के पूरे भाग में ही बनाएँ।

छत की आर.सी.सी. स्लैब का निर्माण

छत की आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रखें। यह किसी भी दिशा में झुकी नहीं होनी चाहिए।

प्लॉट में कम निर्माण के लिए

प्रथम चयन

निर्माण साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट तक पूरे भाग में करना ही सर्वश्रेष्ठ है।

नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में खुला स्थान एक बराबर होना चाहिए।

द्वितीय चयन
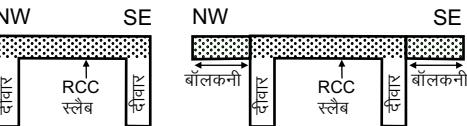
निर्माण प्लॉट के मध्य में ही करें। नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में खुला स्थान एक बराबर होना चाहिए। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी।

नार्थ–वेस्ट फेसिंग प्लॉट

सिर्फ ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए दरवाजा नीच स्थान पर होने पर भी सीढ़ी की वजह से दोष नहीं लगेगा।

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें।

बोरिंग व सेप्टिक टैंक उत्तर में ही बनाएँ। कमरे, रसोई, टॉयलेट इत्यादि भवन में कहीं भी बना सकते हैं। सीढ़ी का निर्माण साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ नार्थ–वेस्ट की दीवार से न सटते हुए करें। नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन में बेसमेंट का निर्माण नहीं होना चाहिए, बेसमेंट अशुभ है।

रोड से फर्श का लेबल व पानी का निकास

भवन में फर्श का लेबल रोड से अधिक से अधिक +9 इंच ऊँचा रखें। भवन में शेड द्वारा दिखाए गए भाग से ही पानी का निकास करें।

स्लैब का निर्माण

रसोई / स्टोर का निर्माण भवन में कहीं भी कर सकते हैं किन्तु स्लैब को दक्षिण और पश्चिम की दीवारों के साथ ही बनाएँ किसी भी हाल में उत्तर व पूर्व की दीवार के साथ न बनाएँ।

कमरों का आकार

नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट के कमरों का आकार एक दूसरे के बराबर ही होना चाहिए।

दरवाजों का स्थान

दरवाजे चित्र में दिखाई गई दिशाओं में ही रखें।

कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल(रैलिंग)

नार्थ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई कम रखें और इस दीवार पर काँच के टुकड़े या तार न लगाएँ।

साउथ–वेस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई अधिक रखें। इस दीवार पर काँच के टुकड़े या तार इत्यादि लगा सकते हैं।

नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल/पैराफिट वॉल की ऊँचाई व मोटाई एक समान ही होनी चाहिए।

छत पर निर्माण व ओवरहेड वॉटर टैंक/वजन

छत पर मुमटी, ओवरहेड वॉटर टैंक/ वजन या अन्य कोई भी निर्माण नं0 1 में दिखाई गई जगह में ही करें। निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में करें। यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर हो।

डूप्लेक्स हाउस/मेजानाईन फ्लोर

शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बिना शेड और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।

शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान

शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

प्लॉट में कम निर्माण के लिए

प्रथम चयन

निर्माण नार्थ–वेस्ट से साउथ–ईस्ट तक पूरे भाग में करें। यह सर्वश्रेष्ठ है।

द्वितीय चयन

निर्माण साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ ही करें। नार्थ–ईस्ट में खुला स्थान छोड़ें। डॉटेड लाईन द्वारा दिखाए अनुसार ढ़ाई फीट ऊँची दीवार बनाकर पीछे के भाग को अलग कर दें। इस तरह से निर्माण अस्थाई तौर पर ही करें क्योंकि इससे पूरी तरह से प्रगति नहीं मिलेगी।

टॉयलेट का निर्माण
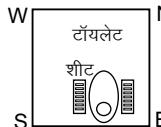
टॉयलेट भवन में कहीं भी बना सकते हैं किन्तु शीट इस प्रकार लगाएँ कि मल–मूत्र का त्याग करते समय मुख सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ न हो।

मंदिर का स्थान
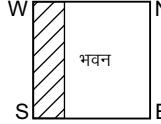
भवन/बेडरूम के शेड द्वारा दिखाए गए स्थान/ दिशाओं में ही मंदिर रखें।

टाँड/परछत्ति व अलमारी
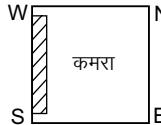
टाँड/परछत्ति, अलमारी या भारी सामान जैसे सोफा इत्यादि किसी भी कमरे की साउथ–वेस्ट की दीवारों पर शेड द्वारा दिखाए गए भाग में ही रखना चाहिए। यह कोनों से दूर हों।

ब्रह्मस्थान
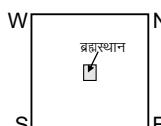
ब्रह्मस्थान में कोई भी निर्माण या गढ़ढ़ा नहीं होना चाहिए। यहाँ बोरिंग, सेप्टिक टैंक या स्तम्भ का निर्माण होने से पूरे परिवार का नाश होता है।

छत की आर.सी.सी. स्लैब का निर्माण
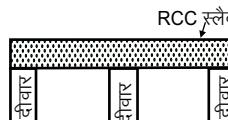
छत की आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रखें। यह किसी भी दिशा में झुकी नहीं होनी चाहिए।

बॉलकनी/छज्जे का निर्माण

छज्जा/बॉलकनी भवन के पूरे भाग में ही बनाएँ। साउथ–ईस्ट या नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन में बॉलकनी/छज्जा दोनो तरफ एक समान लम्बाई, चौंड़ाई व भार का बनाएँ या किसी भी तरफ इसका निर्माण न करें। किसी भी एक तरफ इसका निर्माण वर्जित है।
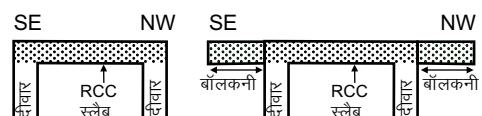
कम्पाउन्ड वॉल

नीचे दिए गए नियमों को ध्यान में रखकर ही इसका निर्माण करें। कम्पाउन्ड वॉल के निर्माण में दोष होने पर इसके गंभीर प्रभाव होते हैं।

दिशा प्लॉट

1. उत्तर और पूर्व की दीवार पर कम्पाउन्ड वॉल की मोटाई व ऊँचाई कम रखें।
2. दक्षिण और पश्चिम की दीवार पर मोटाई व ऊँचाई ज्यादा रखें।
3. फर्श का ढ़ाल साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की ओर ही रखें
4. फर्श का ढ़ाल बनाने के बाद यह ध्यान रखें कि इसके ऊपर दक्षिण और पश्चिम की कम्पाउन्ड वॉल की ऊँचाई, उत्तर और पूर्व की कम्पाउन्ड वॉल से अधिक होनी चाहिए।
5. कम्पाउन्ड वॉल की माप फर्श के तल से ही करें।
6. उत्तर व पूर्व की दीवार पर तार या काँच के टुकड़े न लगाएँ क्योंकि इससे उत्तर व पूर्व की ओर से आनी वाली उर्जा के लिए यह काँटे का कार्य करते हैं, जोकि शुभ नहीं है।
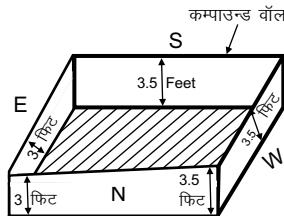
विदिशा प्लॉट

1. नार्थ–ईस्ट में कम्पाउन्ड वॉल की मोटाई व ऊँचाई कम रखें।
2. साउथ–वेस्ट में मोटाई व ऊँचाई ज्यादा रखें।
3. साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट में कम्पाउन्ड वॉल की ऊँचाई व मोटाई एक समान ही होनी चाहिए।
4. दक्षिण कोने से पूर्व कोने और पश्चिम कोने से उत्तर कोने तक कम्पाउन्ड वॉल को चित्र में दिखाए अनुसार ढ़ालयुक्त बनाएँ।
5. फर्श का ढ़ाल साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की ओर ही रखें।
6. फर्श का ढ़ाल बनाने के बाद यह ध्यान रखें कि इसके ऊपर साउथ–वेस्ट की कम्पाउन्ड वॉल की ऊँचाई, नार्थ–ईस्ट की कम्पाउन्ड वॉल से अधिक होनी चाहिए।
7. कम्पाउन्ड वॉल की माप फर्श के तल से ही करें।
8. नार्थ–ईस्ट की दीवार पर तार या काँच के टुकड़े न लगाएँ। क्योंकि इससे उत्तर व पूर्व की ओर से आनी वाली उर्जा के लिए यह काँटे का कार्य करते हैं, जोकि शुभ नहीं है।

कम्पाउन्ड वॉल के अंदर निर्माण के प्रभाव

नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व

दिशा प्लॉट **विदिशा प्लॉट**

उत्तर में धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान कम व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

पूर्व में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

नार्थ–वेस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

ब्रह्मस्थान में घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी व घर से बाहर रहना संभव है।

साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

पश्चिम में घर का मुखिया व पुरूष संतान घर से बाहर रहेंगे।
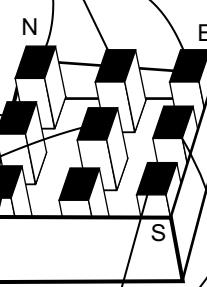
दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।

बोरिंग व अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक
बोरिंग व अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक घर के अंदर होने पर गंभीर व घर के बाहर होने पर आंशिक प्रभाव होते हैं।
दिशा प्लॉट
शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह
विदिशा प्लॉट
तृतीय चयन
इस भाग में कहीं भी बोरिंग व अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बना सकते हैं।
प्रथम चयन
इस भाग में कहीं भी बोरिंग व अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना सर्वश्रेष्ठ है।
N
3
उत्तर
1
नार्थ–ईस्ट
नार्थ–वेस्ट
W
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
2
पूर्व
E
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
S
द्वितीय चयन
इस भाग में कहीं भी बोरिंग व अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बना सकते हैं।
N
E
3
उत्तर
2
नार्थ–ईस्ट
1
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
W
S
शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में बोरिंग व अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक के प्रभाव
दिशा प्लॉट
नार्थ–वेस्ट में धन की कमी, महिलाएं बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मान–सम्मान कम होगा।
वेस्ट–नार्थ महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
विदिशा प्लॉट
ब्रह्मस्थान में घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।
N
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
W
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
E
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
S
पश्चिम में घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।
साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।
N
E
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
W
S
दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।
ईस्ट–साउथ में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।
साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
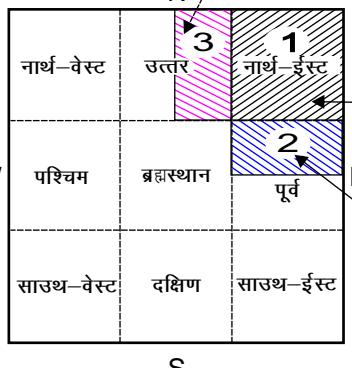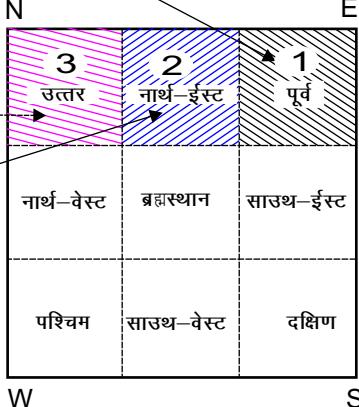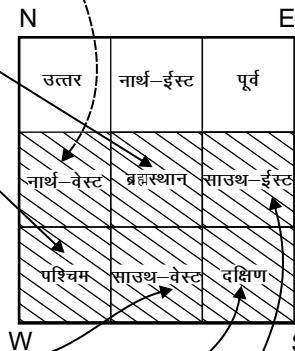
दरवाजे

मुख्य द्वार गलत दिशा में होने पर गंभीर प्रभाव होते हैं। कमरे, रसोई, बाथरूम, स्टोर इत्यादि में दरवाजों की गलत स्थिति होने पर आंशिक प्रभाव होते हैं।

शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह

दिखाई गई दिशाओं में ही मुख्य द्वार, बेडरूम, रसोई, बाथरूम, स्टोर इत्यादि के दरवाजे बनाएँ।
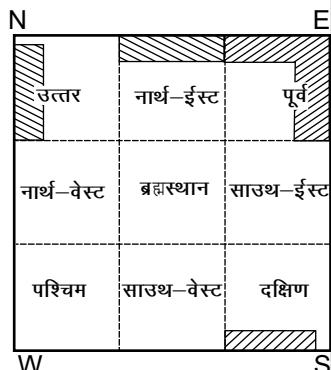
शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में दरवाजे के प्रभाव

नार्थ–वेस्ट में धन की कमी, महिलाएं बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मान–सम्मान कम होगा।

नार्थ–नार्थवेस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

ईस्ट–साउथईस्ट में महिलाएं बीमार, पुरूषों में भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
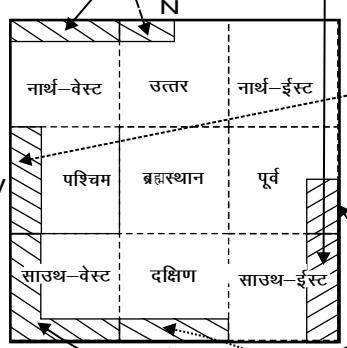
पश्चिम में घर के मुखिया व पुरुष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।
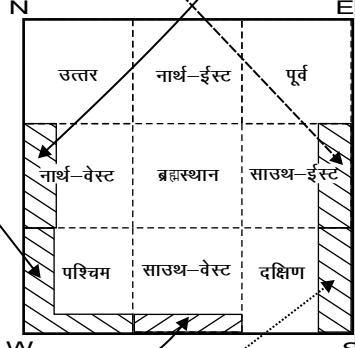
साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया व पहली संतान बीमार, बुरी आदतें व घर से बाहर रहना संभव है।

ईस्ट–साउथ में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।

मुख्य द्वार के साथ सीढ़ी का निर्माण

अक्सर हम मुख्य द्वार उच्च स्थान में बनाते हैं किन्तु सीढ़ी और मुमटी भी इसी स्थान पर बना देते हैं। इससे मुख्य द्वार के अच्छे प्रभाव नहीं प्राप्त होते हैं बल्कि सीढ़ी और मुमटी के अशुभ प्रभाव लागू होते हैं। मुमटी के ऊपर पानी की टंकी या कोई वजन होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाते हैं।

दिशा प्लॉट

उत्तर फेसिंग भवन

सीढ़ी व मुमटी के निर्माण का दोष

भवन के उत्तर में सड़क है। मुख्य द्वार नार्थ–नार्थईस्ट में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी और मुमटी का निर्माण भी इसी कोने में है। इससे मुख्य द्वार के अच्छे प्रभाव प्राप्त नहीं होगें बल्कि सीढ़ी और मुमटी बनने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे घर के मुखिया, कमाने वाले पुरूष सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन व मान–सम्मान में कमी, पहली और चौथी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेगी।

दोष का समाधान नं0 1

सीढ़ी के दोष को दूर करने के लिए इसे नार्थ–ईस्ट कोने से नहीं सटते हुए बनाएँ। सीढ़ी व मुमटी नार्थ–ईस्ट कोने से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष का प्रभाव कम हो जाएगा। यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष काफी कम हो जाएगा। सीढ़ी की लैन्डिंग और मुमटी का निर्माण किसी भी हाल में नार्थ–ईस्ट कोने से नहीं सटना चाहिए। मुमटी की छत हल्की से हल्की सामग्री से ही बनाएँ व इसकी ऊँचाई कम से कम रखें और इस पर कोई भी सामान नहीं रखें।

दोष का समाधान नं0 2

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें। सीढ़ी व मुमटी को पश्चिम की दीवार के साथ बनाएँ। यह उत्तर की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा। ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए सीढ़ी की वजह से नीच स्थान पर दरवाजा होने का दोष नहीं लगेगा।

कम्पाउन्ड वॉल और ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान में ही रखें। सीढ़ी के लिए भवन के अन्दर से भी दरवाजा बना सकते हैं।
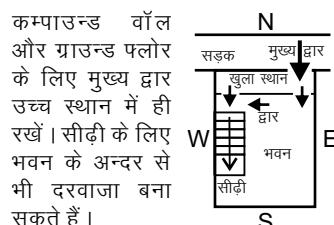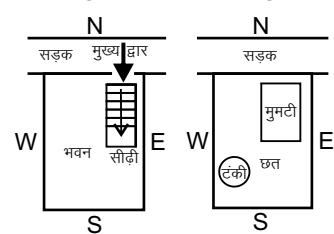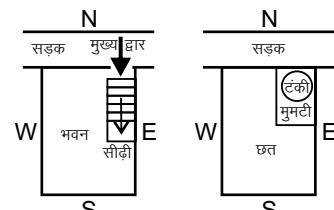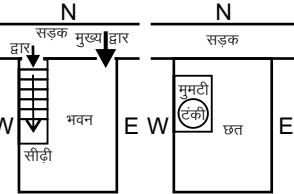
पूर्व फेसिंग भवन

सीढ़ी व मुमटी के निर्माण का दोष

भवन के पूर्व में सड़क है। मुख्य द्वार नार्थ–नार्थईस्ट में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी और मुमटी का निर्माण भी इसी कोने में है। इससे दोष के प्रभाव अधिक गम्भीर हो जाएँगे। इससे घर के मुखिया, कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन व मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान नं0 1

सीढ़ी के दोष को दूर करने के लिए इसे नार्थ–ईस्ट कोने से नहीं सटते हुए बनाएँ। सीढ़ी व मुमटी नार्थ–ईस्ट कोने से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष का प्रभाव कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष काफी कम हो जाएगा। सीढ़ी की लैन्डिंग व मुमटी का निर्माण किसी भी हाल में नार्थ–ईस्ट कोने से नहीं सटनी चाहिए। मुमटी की छत हल्की से हल्की सामग्री से ही कवर करें व इसकी ऊँचाई कम से कम रखें और इस पर कोई भी सामान नहीं रखें।

दोष का समाधान नं0 2

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें। सीढ़ी व मुमटी को पश्चिम की दीवार के साथ बनाएँ। यह पूर्व की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा। ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए सीढ़ी की वजह से नीच स्थान पर दरवाजा होने का दोष नहीं लगेगा।

कम्पाउन्ड वॉल और ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान में ही रखें। सीढ़ी के लिए भवन के अन्दर से भी दरवाजा बना सकते हैं।
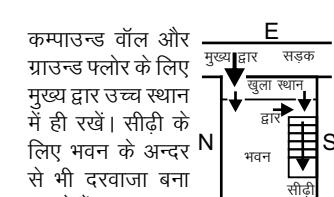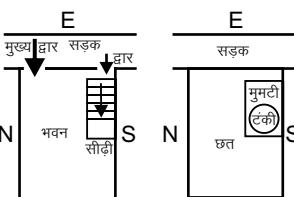
दक्षिण फेसिंग भवन

सीढ़ी व मुमटी के निर्माण का दोष

भवन के दक्षिण में सड़क है। मुख्य द्वार साउथ–साउथईस्ट में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी और मुमटी का निर्माण भी इस कोने में होने से दोष के प्रभाव गम्भीर होंगे। इससे महिलाएं बीमार, पुरूषों में भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान नं0 1

सीढ़ी के दोष को दूर करने के लिए इसे साउथ–ईस्ट कोने से न सटते हुए बनाएँ। सीढ़ी व मुमटी पूर्व की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष का प्रभाव काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा।
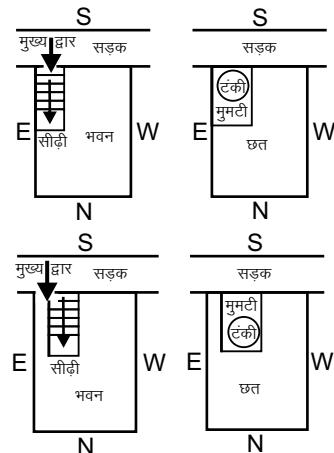
दोष का समाधान नं0 2

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें। सीढ़ी व मुमटी को पश्चिम की दीवार के साथ बनाएँ। यह दक्षिण की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा। ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए सीढ़ी की वजह से नीच स्थान पर दरवाजा होने का दोष नहीं लगेगा।
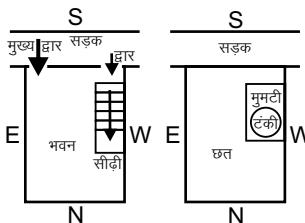
कम्पाउन्ड वॉल और ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान में ही रखें। सीढ़ी के लिए भवन के अन्दर से भी दरवाजा बना सकते हैं।
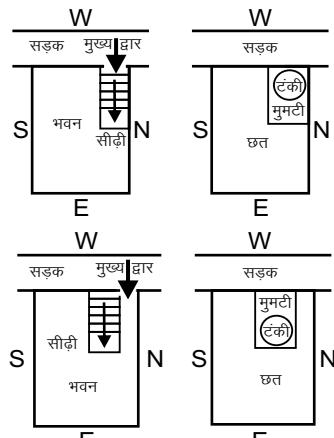
पश्चिम फेसिंग भवन

सीढ़ी व मुमटी के निर्माण का दोष

भवन के पश्चिम में सड़क है। मुख्य द्वार वेस्ट–नार्थवेस्ट में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी और मुमटी का निर्माण भी इस कोने में होने से प्रभाव गम्भीर होंगे। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान नं0 1

सीढ़ी के दोष को दूर करने के लिए इसे नार्थ–वेस्ट कोने से न सटते हुए बनाएँ। सीढ़ी व मुमटी उत्तर की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष का प्रभाव काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा।

दोष का समाधान नं0 2

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें। सीढ़ी व मुमटी को दक्षिण की दीवार के साथ बनाएँ। यह पश्चिम की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा। ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए सीढ़ी की वजह से नीच स्थान पर दरवाजा होने का दोष नहीं लगेगा।
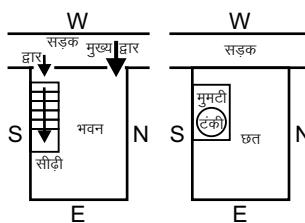
कम्पाउन्ड वॉल और ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान में ही रखें। सीढ़ी के लिए भवन के अन्दर से भी दरवाजा बना सकते हैं।

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट फेसिंग भवन

पूर्व कोने में निर्माण के दोष :

भवन के नार्थ–ईस्ट में सड़क है। मुख्य द्वार पूर्व कोने में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी और मुमटी का निर्माण भी इस कोने में होने से प्रभाव गम्भीर होंगे। इससे पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

N E सड़क मुख्य द्वार भवन सीढ़ी W S

N E सड़क टंकी मुमटी छत W S
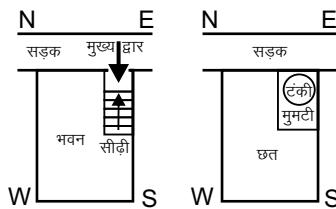
उत्तर कोने में निर्माण का दोष :

भवन के नार्थ–ईस्ट में सड़क है। मुख्य द्वार उत्तर कोने में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी व मुमटी का निर्माण भी इस कोने में होने से प्रभाव अधिक गम्भीर होंगे। इससे धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा व सख्त होगा।

N E मुख्य द्वार सड़क सीढ़ी भवन W S

N E सड़क टंकी मुमटी छत W S
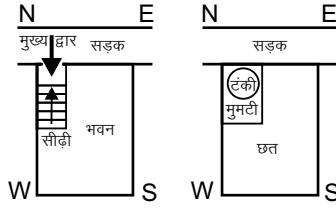
दोष का समाधान

सीढ़ी किसी भी दीवार से नहीं सटनी चाहिए और इसका वजन किसी भी दीवार पर नहीं आना चाहिए। संभव हो तो भूमि पर स्तम्भ बनाकर उस पर वजन रखें और छत से जोड़ दें। सीढ़ी व मुमटी कोने से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष का प्रभाव कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष काफी कम हो जाएगा। मुमटी की छत हल्की से हल्की सामग्री से ही कवर करें व इसकी ऊँचाई कम से कम रखें और इस पर कोई भी सामान नहीं रखें।

N E सड़क मुख्य द्वार भवन सीढ़ी W S

N E सड़क मुमटी टंकी छत W S

N E सड़क मुख्य द्वार सीढ़ी भवन W S

N E सड़क मुमटी छत टंकी W S
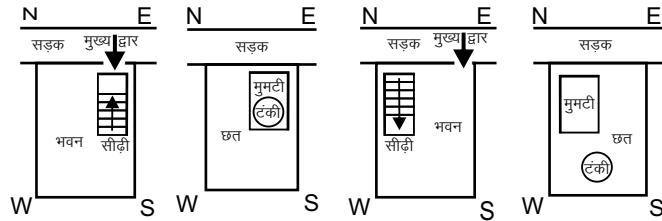
साउथ–ईस्ट फेसिंग भवन

सीढ़ी व मुमटी के निर्माण का दोष

भवन के साउथ–ईस्ट में सड़क है। मुख्य द्वार पूर्व कोने में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी और मुमटी का निर्माण भी इस कोने में होने से प्रभाव गम्भीर होंगे। इससे पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

E S मुख्य द्वार सड़क सीढ़ी भवन N W

E S सड़क टंकी मुमटी छत N W
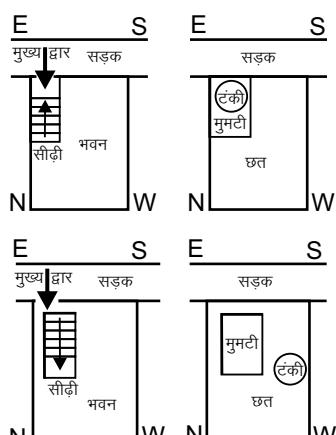
दोष का समाधान नं0 1

सीढ़ी के दोष को दूर करने के लिए इसे पूर्व कोने से नहीं सटते हुए बनाएँ। सीढ़ी व मुमटी पूर्व कोने से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष का प्रभाव कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष काफी कम हो जाएगा। सीढ़ी किसी भी दीवार से नहीं सटनी चाहिए और इसका वजन किसी भी दीवार पर नहीं आना चाहिए। संभव हो तो भूमि पर स्तम्भ बनाकर उस पर वजन रखें और छत से जोड़ दें। मुमटी किसी भी दीवार से नहीं सटनी चाहिए, इसकी छत हल्की से हल्की सामग्री से ही कवर करें व इसकी ऊँचाई कम से कम रखें और इस पर कोई भी सामान नहीं रखें।

E S मुख्य द्वार सड़क सीढ़ी भवन N W

E S सड़क मुमटी टंकी छत N W

दोष का समाधान नं0 2

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें। सीढ़ी व मुमटी को साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ बनाएँ। यह साउथ–ईस्ट की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा। ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए सीढ़ी की वजह से नीच स्थान पर दरवाजा होने का दोष नहीं लगेगा।

E S मुख्य द्वार सड़क द्वार भवन सीढ़ी N W

E S सड़क मुमटी टंकी छत N W

कम्पाउन्ड वॉल और ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान में ही रखें। सीढ़ी के लिए भवन के अन्दर से भी दरवाजा बना सकते हैं।

E S मुख्य द्वार सड़क खुला स्थान द्वार भवन सीढ़ी N W
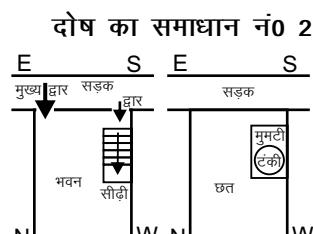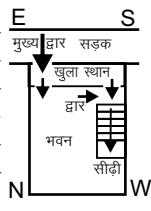
साउथ–वेस्ट फेसिंग भवन

सीढ़ी व मुमटी के निर्माण का दोष

भवन के साउथ–वेस्ट में सड़क है। मुख्य द्वार दक्षिण में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी और मुमटी का निर्माण भी इस कोने में होने से प्रभाव गम्भीर होगे। इससे घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान नं0 1

सीढ़ी के दोष को दूर करने के लिए इसे दक्षिण कोने से नहीं सटते हुए बनाएँ। सीढ़ी व मुमटी दक्षिण कोने से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष का प्रभाव कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष काफी कम हो जाएगा। सीढ़ी की लैन्डिंग किसी भी हाल में साउथ–ईस्ट की दीवार से नहीं सटनी चाहिए।
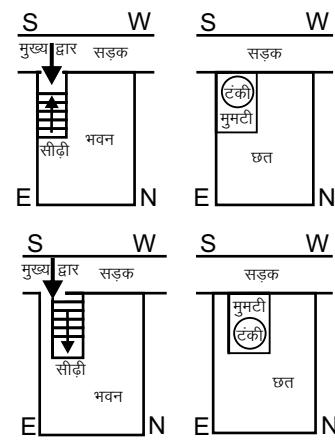
दोष का समाधान नं0 2

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें। सीढ़ी व मुमटी को साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ बनाएँ। साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा। ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए सीढ़ी की वजह से नीच स्थान पर दरवाजा होने का दोष नहीं लगेगा।

कम्पाउन्ड वॉल और ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान में ही रखें। सीढ़ी के लिए भवन के अन्दर से भी दरवाजा बना सकते हैं।
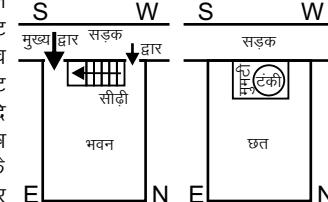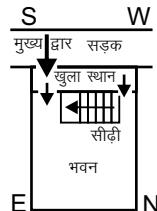
नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन

सीढ़ी व मुमटी के निर्माण का दोष

भवन के नार्थ–वेस्ट में सड़क है। मुख्य द्वार उत्तर में उच्च स्थान पर है। सीढ़ी और मुमटी का निर्माण भी इस कोने में होने से प्रभाव गम्भीर हो होंगे। इससे धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा व सख्त होगा।
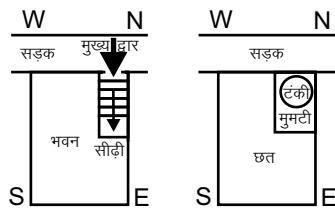
दोष का समाधान नं0 1

सीढ़ी के दोष को दूर करने के लिए इसे उत्तर कोने से नहीं सटते हुए बनाएँ। सीढ़ी व मुमटी उत्तर कोने से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष का प्रभाव कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष काफी कम हो जाएगा। सीढ़ी की लैन्डिंग और वजन किसी भी दीवार और छत पर नहीं आना चाहिए, संभव हो तो भूमि पर स्तम्भ बनाकर उस पर वजन रखें और छत से जोड़ दें। मुमटी किसी भी दीवार से नहीं सटनी चाहिए, इसकी छत हल्की से हल्की सामग्री से ही कवर करें व इसकी ऊँचाई कम से कम रखें और इस पर कोई भी सामान नहीं रखें।
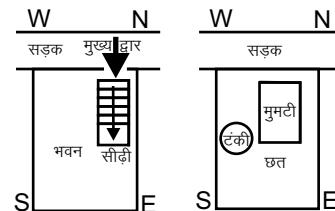
दोष का समाधान नं0 2

ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान पर ही रखें। सीढ़ी व मुमटी को साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ बनाएँ। यह नार्थ–वेस्ट की दीवार से कम से कम एक फीट दूर होने पर दोष काफी कम हो जाएगा, यदि तीन फीट या इससे अधिक दूर हो तो दोष नहीं लगेगा। ऊपर की मंजिलों पर जाने के लिए सीढ़ी की वजह से नीच स्थान पर दरवाजा होने का दोष नहीं लगेगा।

कम्पाउन्ड वॉल और ग्राउन्ड फ्लोर के लिए मुख्य द्वार उच्च स्थान में ही रखें। सीढ़ी के लिए भवन के अन्दर से भी दरवाजा बना सकते हैं।
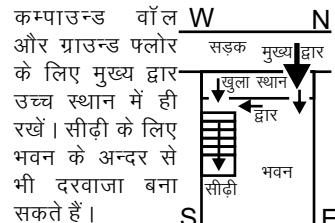
भवन/बेडरूम में दरवाजों की चाल (क्रम) के प्रभाव

भवन/बेडरूम में दरवाजों की चाल के शुभ व अशुभ परिणाम होते हैं। दरवाजों की चाल यदि भवन/बेडरूम के अंदर ही रूक जाती है तो इसके आंशिक प्रभाव लागू होते हैं किन्तु यदि दरवाजों की चाल भवन/बेडरूम में एक तरफ से शुरू होकर दूसरी तरफ खुल जाती है तो इसके अत्यधिक गंभीर प्रभाव लागू होते हैं।

दिशा प्लॉट — उत्तर फेसिंग भवन/बेडरूम

शुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थईस्ट से साउथ–साउथईस्ट की तरफ होने पर पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न, स्वस्थ, धन की प्राप्ति, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। पहली व चौथी संतान बेटी होने पर उसे विशेष लाभ मिलेगा।

यदि दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थईस्ट से साउथ– साउथईस्ट की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे। साथ ही दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे भी लाभ मिलेगा।
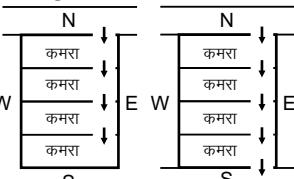
दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थईस्ट से साउथवेस्ट की तरफ होने पर नार्थ–नार्थईस्ट में मुख्य द्वार के शुभ प्रभावों में कमी आएगी।
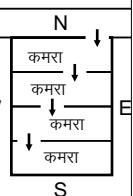
अशुभ प्रभाव

यदि दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थईस्ट से चलकर ईस्ट–साउथईस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।
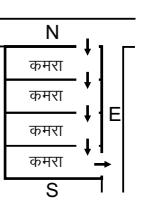
यदि दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थईस्ट से चलकर साउथ–साउथवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।
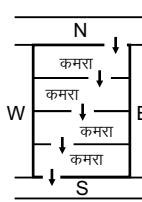
यदि दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थईस्ट से चलकर वेस्ट–साउथवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।

अत्यधिक अशुभ प्रभाव
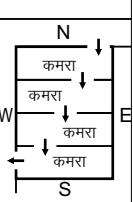
दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थवेस्ट से साउथ–साउथवेस्ट की तरफ होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दिवालिया होना, कोर्ट–केस व प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।
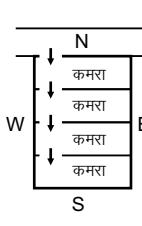
दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थवेस्ट से साउथईस्ट की तरफ होने पर नार्थ–नार्थवेस्ट में मुख्य द्वार के अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

यदि दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थवेस्ट से साउथ–साउथईस्ट की तरफ खुल जाती है तो प्रभाव सामान्य रहेंगे।
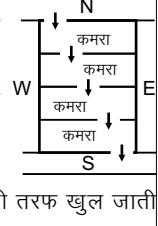
यदि दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थवेस्ट से साउथ–साउथवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।
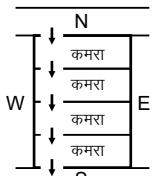
यदि दरवाजों की चाल नार्थ–नार्थवेस्ट से वेस्ट–साउथवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।
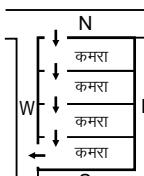
यदि दरवाजों की चाल नार्थ –नार्थवेस्ट से ईस्ट–साउथईस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

पूर्व फेसिंग भवन/बेडरूम
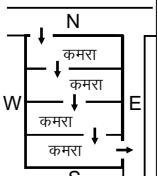
शुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल ईस्ट–नार्थईस्ट से वेस्ट–नार्थवेस्ट की तरफ होने पर पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न, स्वस्थ, धन की प्राप्ति, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। घर के मुखिया, पहली व चौथी संतान बेटा होने पर उसे विशेष लाभ मिलेगा।

यदि दरवाजों की चाल ईस्ट–नार्थईस्ट से वेस्ट–नार्थवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे। साथ ही तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे भी लाभ मिलेगा।
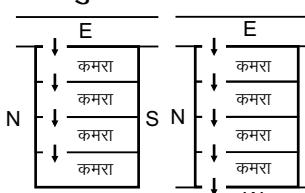
दरवाजों की चाल ईस्ट–नार्थईस्ट से साउथवेस्ट की तरफ होने पर ईस्ट–नार्थईस्ट में मुख्य द्वार के शुभ प्रभावों में कमी आएगी।
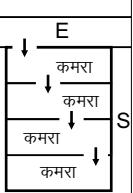
अशुभ प्रभाव

यदि दरवाजों की चाल ईस्ट–नार्थईस्ट से चलकर नार्थ–नार्थवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।
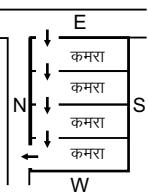
यदि दरवाजों की चाल ईस्ट–नार्थईस्ट से चलकर वेस्ट–साउथवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।
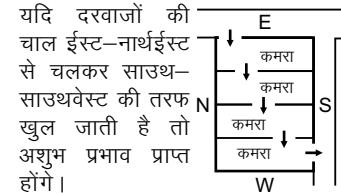
यदि दरवाजों की चाल ईस्ट–नार्थईस्ट से चलकर साउथ–साउथवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।

अत्यधिक अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल ईस्ट–साउथईस्ट से वेस्ट–साउथवेस्ट की तरफ होने पर पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस व प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।
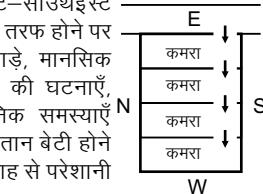
दरवाजों की चाल ईस्ट–साउथईस्ट से नार्थ–वेस्ट की तरफ होने पर ईस्ट–साउथईस्ट में मुख्य द्वार के अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

यदि दरवाजों की चाल ईस्ट–साउथईस्ट से वेस्ट–नार्थवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो प्रभाव सामान्य रहेंगे।

यदि दरवाजों की चाल ईस्ट–साउथईस्ट से वेस्ट–साउथवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।
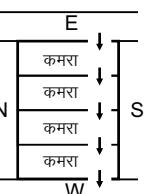
यदि दरवाजों की चाल ईस्ट–साउथईस्ट से साउथ–साउथवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

यदि दरवाजों की चाल ईस्ट–साउथईस्ट से नार्थ–नार्थवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

दक्षिण फेसिंग भवन/बेडरूम

शुभ प्रभाव
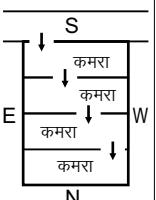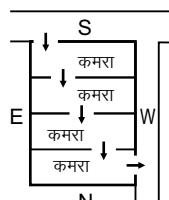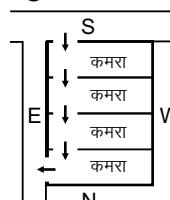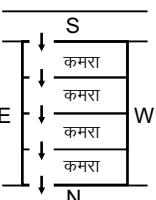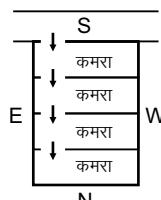
दरवाजों की चाल साउथ–साउथईस्ट से नार्थ–नार्थईस्ट की तरफ होने पर महिलाएँ स्वस्थ, सुखी रहेंगी व मान–सम्मान बढ़ेगा। दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे विशेष लाभ मिलेगा।

यदि दरवाजों की चाल साउथ– साउथईस्ट से नार्थ–नार्थईस्ट की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे। साथ ही पहली व चौथी संतान बेटी होने पर उसे भी लाभ मिलेगा।

यदि दरवाजों की चाल साउथ–साउथईस्ट से चलकर ईस्ट–नार्थईस्ट की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे। साथ ही पहली व चौथी संतान बेटा होने पर उसे भी लाभ मिलेगा।

यदि दरवाजों की चाल साउथ–साउथईस्ट से चलकर वेस्ट–नार्थवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे। साथ ही तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे भी लाभ मिलेगा।

दरवाजों की चाल साउथ–साउथईस्ट से नार्थवेस्ट की तरफ होने पर साउथ–साउथईस्ट में मुख्य द्वार के शुभ प्रभावों में कुछ कमी आएगी।

अशुभ प्रभाव

यदि दरवाजों की चाल साउथ–साउथईस्ट से चलकर नार्थ– नार्थवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।
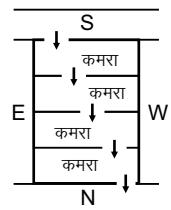
यदि दरवाजों की चाल साउथ–साउथवेस्ट से नार्थ–नार्थईस्ट या ईस्ट–नार्थईस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभावों में कुछ कमी आएगी।
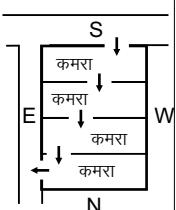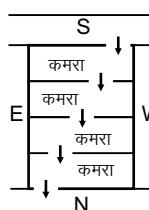
यदि दरवाजों की चाल साउथ–साउथवेस्ट से वेस्ट–नार्थवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।
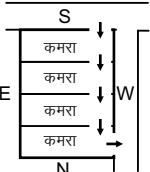
यदि दरवाजों की चाल साउथ–साउथवेस्ट से नार्थ–ईस्ट की तरफ है तो अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।
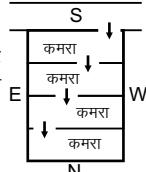
अत्यधिक अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल साउथ–साउथवेस्ट से नार्थवेस्ट की तरफ होने पर मुख्य महिला व महिलाएँ बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति, मान–सम्मान में कमी व पहली और पाँचवीं संतान बेटी होने पर उसे समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।
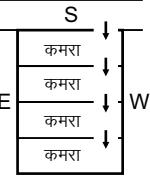
यदि दरवाजों की चाल साउथ–साउथवेस्ट से नार्थ–नार्थवेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।
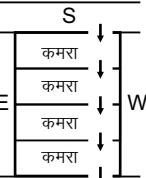
पश्चिम फेसिंग भवन/बेडरूम

शुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल वेस्ट–नार्थवेस्ट से ईस्ट–नार्थईस्ट की तरफ होने पर पुरूष स्वस्थ, सुखी व उच्च पद पर कार्यरत होंगे। तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे विशेष लाभ मिलेगा।
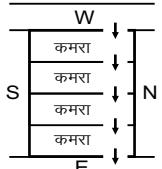
यदि दरवाजों की चाल वेस्ट–नार्थवेस्ट से ईस्ट–नार्थईस्ट की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे। साथ ही पहली व चौथी संतान बेटा होने पर उसे भी लाभ मिलेगा।
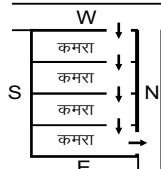
यदि दरवाजों की चाल वेस्ट–नार्थवेस्ट से चलकर ईस्ट–नार्थईस्ट की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे। साथ ही पहली व चौथी संतान बेटी होने पर उसे भी लाभ मिलेगा।
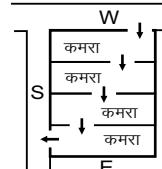
यदि दरवाजों की चाल वेस्ट–नार्थवेस्ट से चलकर साउथ–साउथईस्ट की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे। साथ ही दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे भी लाभ मिलेगा।
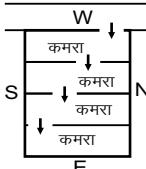
दरवाजों की चाल वेस्ट–नार्थवेस्ट से साउथ–ईस्ट की तरफ होने पर वेस्ट–नार्थवेस्ट में मुख्य द्वार के शुभ प्रभावों में कुछ कमी आएगी।
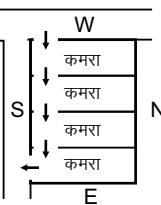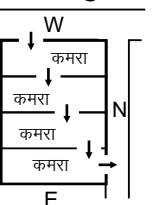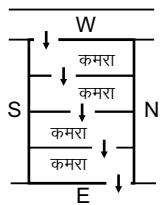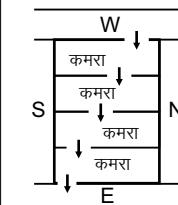
अशुभ प्रभाव

यदि दरवाजों की चाल वेस्ट–नार्थवेस्ट से चलकर ईस्ट– साउथईस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।

यदि दरवाजों की चाल वेस्ट–साउथवेस्ट से ईस्ट–नार्थईस्ट या नार्थ–नार्थईस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभावों में कुछ कमी होगी।

यदि दरवाजों की चाल वेस्ट–साउथवेस्ट से साउथ–साउथईस्ट की तरफ खुल जाती है तो साउथ–साउथवेस्ट में मुख्यद्वार के अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

दरवाजों की चाल वेस्ट–साउथवेस्ट से नार्थ–ईस्ट की तरफ होने पर वेस्ट–साउथवेस्ट में मुख्य द्वार के अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

अत्यधिक अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल वेस्ट–साउथवेस्ट से साउथईस्ट की तरफ होने पर घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बेटा होने पर बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।
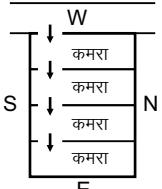
यदि दरवाजों की चाल वेस्ट–साउथवेस्ट से साउथईस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।
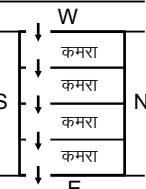
विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट फेसिंग भवन/बेडरूम

शुभ प्रभाव
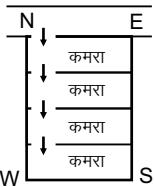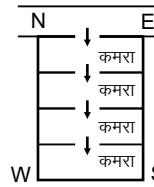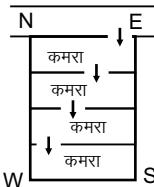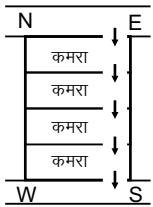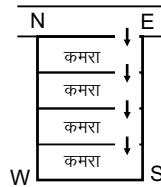
दरवाजों की चाल पूर्व कोने से दक्षिण कोने की तरफ होने पर पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न, पुरुष स्वस्थ, धन व मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी।

यदि दरवाजों की चाल पूर्व कोने से दक्षिण कोने की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।

दरवाजों की चाल पूर्व कोने से पश्चिम कोने की तरफ होने पर पूर्व कोने में मुख्य द्वार के शुभ प्रभावों में कमी आएगी।

नार्थ–ईस्ट से साउथ–वेस्ट की चाल को सामान्य माना गया है क्योंकि वापस में आने पर यह साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की चाल हो जाएगी।

उत्तर कोने से पश्चिम कोने की चाल शुभ नहीं माना गया है क्योंकि वापस में आने पर यह पश्चिम से उत्तर की चाल हो जाएगी।

अशुभ प्रभाव

यदि दरवाजों की चाल पूर्व कोने से चलकर दक्षिण कोने में साउथ–ईस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।
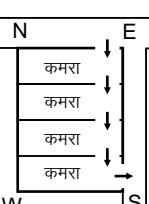
यदि दरवाजों की चाल उत्तर कोने से चलकर दक्षिण कोने में साउथ–वेस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव सामान्य होंगे।
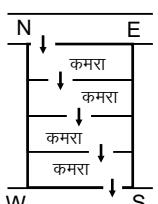
दरवाजों की चाल उत्तर कोने से दक्षिण कोने की तरफ होने पर उत्तर कोने में मुख्य द्वार के अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

अत्यधिक अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल उत्तर कोने से पश्चिम कोने की तरफ होने पर महिलाएँ बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति व मान–सम्मान में कमी होगी।

यदि दरवाजों की चाल उत्तर कोने से पश्चिम कोने की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

यदि दरवाजों की चाल उत्तर कोने से चलकर दक्षिण कोने में साउथ–ईस्ट की तरफ खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

साउथ–ईस्ट फेसिंग भवन/बेडरूम

शुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल पूर्व कोने से उत्तर कोने की तरफ होने पर पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न, महिलाएँ व पुरुष स्वस्थ, धन व मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी और निवासी बुद्धिमान होंगे।

यदि दरवाजों की चाल पूर्व कोने से उत्तर कोने की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।

दरवाजों की चाल पूर्व कोने से पश्चिम कोने की तरफ होने पर पूर्व कोने में मुख्य द्वार के शुभ प्रभावों में कमी आएगी।

अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल पूर्व कोने से पश्चिम कोने में खुल जाने पर अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

दरवाजों की चाल दक्षिण कोने से उत्तर कोने की तरफ होने पर अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

दरवाजों की चाल दक्षिण कोने से उत्तर कोने की तरफ होने पर अशुभ प्रभावों में कमी होगी।

अत्यधिक अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल दक्षिण कोने से पश्चिम कोने की तरफ होने पर अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।
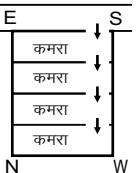
यदि दरवाजों की चाल दक्षिण कोने से चलकर पश्चिम कोने में खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।
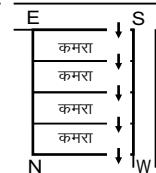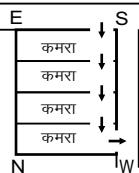
नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन/बेडरूम

शुभ प्रभाव
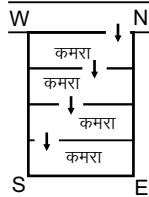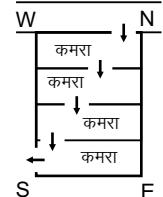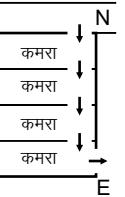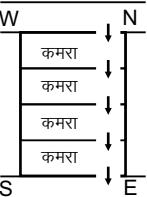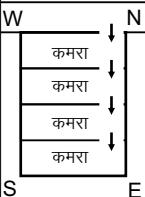
दरवाजों की चाल उत्तर कोने से पूर्व कोने की तरफ होने पर महिलाएँ सुखी, स्वस्थ, धन व मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी।

यदि दरवाजों की चाल उत्तर कोने से पूर्व कोने की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।

दरवाजों की चाल उत्तर कोने से दक्षिण में साउथ–वेस्ट की तरफ खुलने से शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।

दरवाजों की चाल उत्तर कोने से दक्षिण कोने की तरफ होने पर उत्तर कोने में मुख्य द्वार के शुभ प्रभावों में कमी आएगी।

अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल उत्तर कोने से दक्षिण कोने में खुल जाने पर अशुभ प्रभाव लागू होंगे।
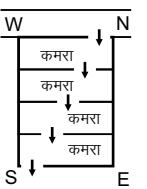
दरवाजों की चाल पश्चिम कोने से पूर्व कोने की तरफ होने पर अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।
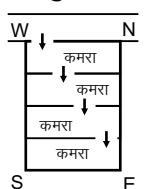
दरवाजों की चाल पश्चिम कोने से पूर्व कोने की तरफ खुलने पर अशुभ प्रभावों में कमी होगी।
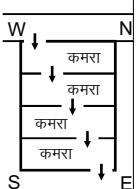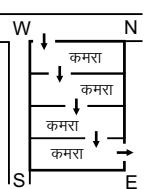
अत्यधिक अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल पश्चिम कोने से दक्षिण कोने की तरफ होने पर अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।
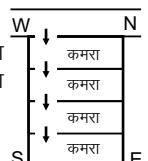
यदि दरवाजों की चाल पश्चिम कोने से चलकर दक्षिण कोने में खुल जाती है तो अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

साउथ–वेस्ट फेसिंग भवन/बेडरूम
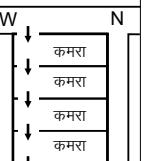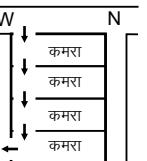
शुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल दक्षिण कोने से पूर्व कोने की तरफ होने पर मुख्य महिला व महिलाएँ सुखी, स्वस्थ व मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी।

यदि दरवाजों की चाल दक्षिण कोने से पूर्व या उत्तर कोने की तरफ खुल जाती है तो शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।

अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल पश्चिम कोने से पूर्व कोने की तरफ होने पर अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।
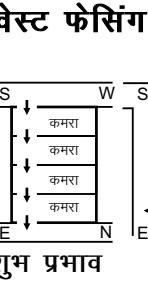
दरवाजों की चाल पश्चिम कोने से पूर्व या उत्तर कोने में खुल जाने पर अशुभ प्रभावों में कमी होगी।

अत्यधिक अशुभ प्रभाव

दरवाजों की चाल पश्चिम कोने से उत्तर कोने की तरफ होने या उत्तर कोने में खुल जाने पर अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।
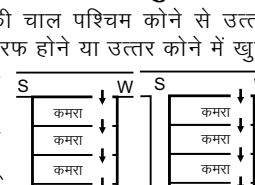
सीढ़ी व मुमटी

का निर्माण दक्षिण, पश्चिम या साउथ–वेस्ट भाग में ही होना चाहिए। किसी भी हाल में पूर्व , उत्तर , नार्थ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में नहीं होना चाहिए।

रसोई का स्थान

ऊपरी मंजिल पर रसोई के निर्माण में संक/गढ़ढ़ा बनाया जाता है, जिसमें से गन्दे पानी के पाईप फर्श में से ले जाते हैं। इससे भवन का वह भाग मोटा और वजनी हो जाता है। जिस दिशा में इस तरह से निर्माण होता है, उसके भारी होने के प्रभाव लागू होते हैं। इसलिए संक/गढ़ढ़ा न करें। भवन के केवल दक्षिण, पश्चिम व साउथ–वेस्ट भाग में ही मोटा व भारी कर सकते हैं।

दिशा प्लॉट उत्तर , पूर्व , दक्षिण या पश्चिम फेसिंग भवन में रसोई को किसी भी भाग में बना सकते हैं। स्लैब बनाते समय नीचे दिए गए नियमों का ध्यान रखें।
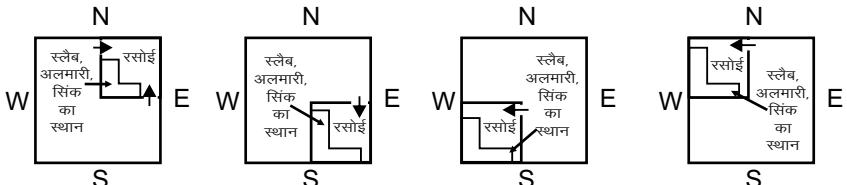
रसोई में दरवाजे दिखाई गई जगह में बना सकते हैं। स्लैब/अलमारी/सिंक , रसोई की दक्षिण और पश्चिम दीवारों पर ही बनाएँ। यह उत्तर और पूर्व की दीवार पर नहीं बननी चाहिए। लेकिन अलग से कांउटर, अलमारी या सिंक बनाकर जमीन पर दीवार से न सटते हुए कम से कम एक इंच दूर किसी भी दिशा में रख सकते हैं।

विदिशा प्लॉट नार्थ–ईस्ट , साउथ–ईस्ट, साउथ–वेस्ट या नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन में रसोई को किसी भी भाग में बना सकते हैं। स्लैब बनाते समय नीचे दिए गए नियमों का ध्यान रखें।
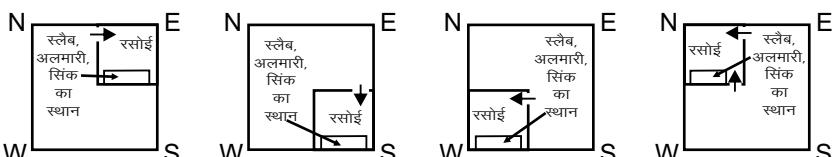
रसोई में दरवाजे दिखाई गई जगह में बना सकते हैं। स्लैब/अलमारी/सिंक रसोई की साउथ–वेस्ट की दीवार पर ही बनाएँ। यह नार्थ–ईस्ट , नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट की दीवार पर नहीं बननी चाहिए। लेकिन अलग से कांउटर, अलमारी या सिंक बनाकर जमीन पर दीवार से न सटते हुए कम से कम एक इंच दूर किसी भी दिशा में रख सकते हैं।

टॉयलेट का स्थान

ऊपरी मंजिल पर टॉयलेट/बॉथरूम के निर्माण में संक/गढ़ढ़ा बनाया जाता है, जिसमें से गन्दे पानी के पाईप फर्श में से ले जाते हैं। इससे भवन का वह भाग मोटा और वजनी हो जाता है। जिस दिशा में इस तरह से निर्माण होता है, उसके भारी होने के प्रभाव लागू होते हैं। इसलिए संक/गढ़ढ़ा न करें। भवन के केवल दक्षिण, पश्चिम व साउथ–वेस्ट भाग में ही मोटा व भारी कर सकते हैं।

नार्थ–ईस्ट में गंदगी वर्जित है टॉयलेट का निर्माण नहीं। आजकल आधुनिक तरीके से टॉयलेट का निर्माण किया जाता है जिसमें गंदगी नहीं होती इसलिए टॉयलेट को भवन के किसी भी भाग में बना सकते हैं। टॉयलेट की षीट इस प्रकार लगाएँ कि सूर्यदेव (पूर्व) की तरफ मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए। सूर्यदेव की तरफ मुख करके मल–मूत्र का त्याग करने पर जीवन के अन्तिम समय में अत्यधिक कष्ट होते हैं।

दिशा प्लॉट

विदिशा प्लॉट
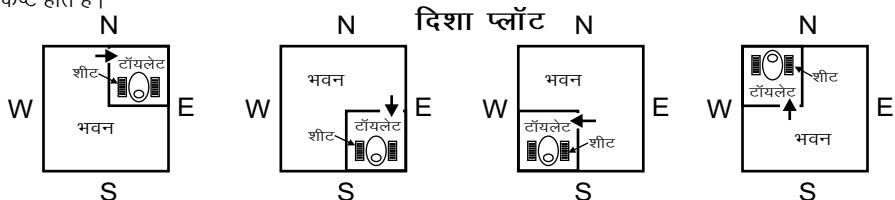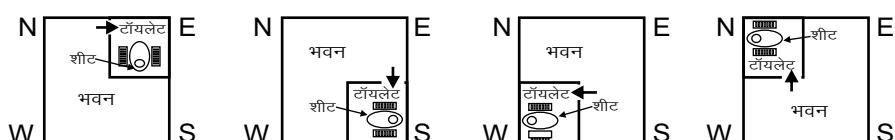
संगीत व वास्तु पुस्तक (PDF) मुफ्त डाउनलोड करें
36
देखें www.dwarkadheeshvatu.com
सेप्टिक टैंक
को जहाँ तक संभव हो घर के बाहर ही बनाएं इससे प्रभाव आंशिक रहेंगे। यदि घर के अंदर बनाना है तो इसकी चौड़ाई व गहराई कम से कम रखें।
शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह
दिशा प्लॉट
विदिशा प्लॉट
प्रथम चयन
भवन/कमरे के उत्तर भाग में कहीं भी सेप्टिक टैंक बना सकते हैं। घर के अंदर सेप्टिक टैंक होने से महिलाओं में हल्की बीमारी व धन की कमी रहेगी।
द्वितीय चयन
भवन/कमरे के नार्थ–ईस्ट भाग में कहीं भी सेप्टिक टैंक बना सकते हैं। घर के अंदर सेप्टिक टैंक होने से पूरे परिवार को हल्की समस्याएं रहेंगी।
N
नार्थ–वेस्ट
उत्तर 1
2 नार्थ–ईस्ट
W
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
3 पूर्व
E
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
S
तृतीय चयन
भवन/कमरे के पूर्व भाग में कहीं भी सेप्टिक टैंक बना सकते हैं। घर के अंदर सेप्टिक टैंक होने से पुरूषों
N
E
1 उत्तर
2 नार्थ–ईस्ट
3 पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
W
S
भवन/कमरे में शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में सेप्टिक टैंक के प्रभाव
दिशा प्लॉट
विदिशा प्लॉट
नार्थ–वेस्ट में धन की कमी, महिलाएं बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मान–सम्मान कम होगा।
वेस्ट–नार्थ महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
ब्रह्मस्थान में घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।
पश्चिम में घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।
साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।
दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।
ईस्ट–साउथ में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।
साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
N
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
W
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
E
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
S
N
E
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
W
S
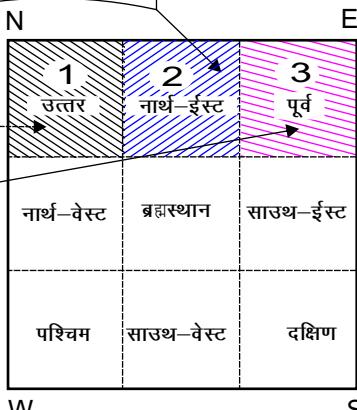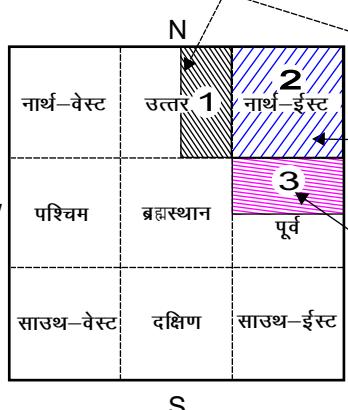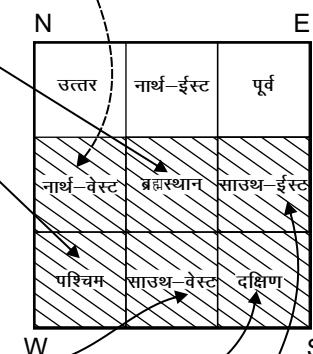
फर्श का लेबल/पानी का निकास

पूर्व , उत्तर व नार्थ–ईस्ट में फर्श का तल नीचा रखना सर्वश्रेष्ठ है व पानी का निकास भी इसी भाग से ही करें। यदि यहाँ पर लेबल नीचा रखना संभव न हो, तो पूरे फर्श का तल एक समान रख सकते हैं किन्तु दक्षिण , पश्चिम और साउथ–वेस्ट में लेबल नीचा नहीं होना चाहिए। साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट का लेबल एक बराबर होना चाहिए तथा ढ़ाल साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की ओर ही होना चाहिए। नार्थ–ईस्ट से अंडरग्राउन्ड पाईप के द्वारा पानी कहीं से भी निकाल सकते हैं।

शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह

दिशा प्लॉट

N / W / E / S

नार्थ–वेस्ट	उत्तर	नार्थ–ईस्ट
पश्चिम	ब्रह्मस्थान	पूर्व
साउथ–वेस्ट	दक्षिण	साउथ–ईस्ट
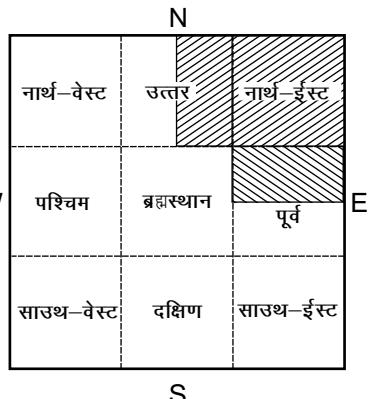
शुभ प्रभाव :

पूर्व , उत्तर व नार्थ–ईस्ट भाग में फर्श का लेबल नीचा होना व पानी का निकास श्रेष्ठ है। इससे पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न व स्वस्थ, परिवार की प्रगति, धन की प्राप्ति, व समाज में मान–सम्मान होगा।

विदिशा प्लॉट

N / E / W / S

उत्तर	नार्थ–ईस्ट	पूर्व
नार्थ–वेस्ट	ब्रह्मस्थान	साउथ–ईस्ट
पश्चिम	साउथ–वेस्ट	दक्षिण
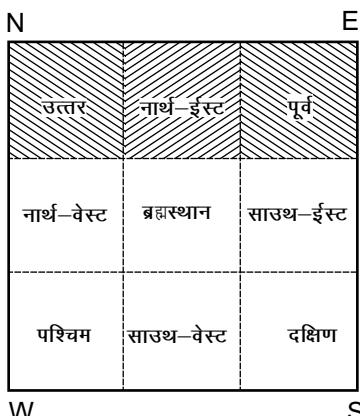
शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में फर्श का तल नीचा होने/पानी के निकास के प्रभाव

दिशा प्लॉट

नार्थ–वेस्ट	उत्तर	नार्थ–ईस्ट
पश्चिम	ब्रह्मस्थान	पूर्व
साउथ–वेस्ट	दक्षिण	साउथ–ईस्ट

विदिशा प्लॉट

उत्तर	नार्थ–ईस्ट	पूर्व
नार्थ–वेस्ट	ब्रह्मस्थान	साउथ–ईस्ट
पश्चिम	साउथ–वेस्ट	दक्षिण

नार्थ–वेस्ट में धन की कमी, महिलाएं बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मान–सम्मान कम होगा।

वेस्ट–नार्थ महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

ब्रह्मस्थान में घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

पश्चिम में घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।

ईस्ट–साउथ में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

फर्श का सड़क से लेवल

सड़क को प्लॉट का ही भाग माना जाता है।

दिशा प्लॉट

उत्तर में सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर यह दक्षिण में है। भवन के फर्श का लेवल सड़क से कम से कम 2 फीट ऊँचा रखें। इससे उत्तर नीचा व दक्षिण ऊँचा होने के शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। इससे धन की प्राप्ति, महिलाएं स्वस्थ, खुशहाल रहेंगी और परिवार का आत्मविश्वास बढ़ेगा।

N
सड़क लेवल 0
W भवन (लेवल +2फीट) E
S

E
सड़क लेवल 0
N भवन (लेवल +2फीट) S
W
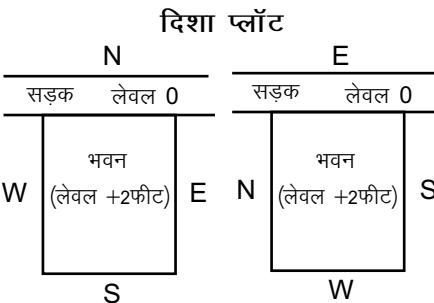
पूर्व में सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर यह पश्चिम में है। भवन के फर्श का लेवल सड़क से कम से कम 2 फीट ऊँचा रखें। इससे पूर्व नीचा व पश्चिम ऊँचा होने के शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। इससे धन की प्राप्ति, पुरूष स्वस्थ, खुशहाल रहेंगे और परिवार का आत्मविश्वास बढ़ेगा।

दक्षिण में सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर यह उत्तर में है। भवन के फर्श का लेवल सड़क के बराबर ही बनाएँ यदि यह संभव न हो तो अधिक से अधिक एक फीट ऊँचा रखें, इससे दोष आंशिक रहेंगे। इससे अधिक ऊँचा होने पर धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व पूरा परिवार परेशान रहेगा।

S
सड़क लेवल 0
E भवन (लेवल +1 फीट) W
N

W
सड़क लेवल 0
S भवन (लेवल +1 फीट) N
E
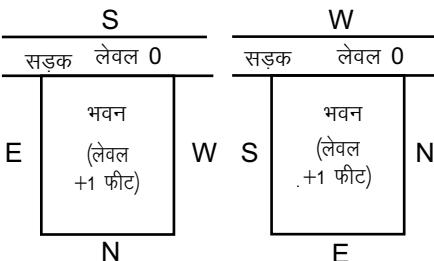
पश्चिम में सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर यह पूर्व में है। भवन के फर्श का लेवल सड़क के बराबर ही बनाएँ यदि यह संभव न हो तो अधिक से अधिक एक फीट ऊँचा रखें, इससे दोष आंशिक रहेंगे। इससे अधिक ऊँचा होने पर धन की कमी, पुरूष बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व पूरा परिवार परेशान रहेगा।

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट में सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर यह साउथ–वेस्ट में है। भवन के फर्श का लेवल सड़क से कम से कम 2 फीट ऊँचा रखें। इससे नार्थ–ईस्ट नीचा व साउथ–वेस्ट ऊँचा होने के शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार स्वस्थ, खुशहाल रहेगा, मान–सम्मान बढ़ेगा व पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।

N E
सड़क लेवल 0
भवन (लेवल +2फीट)
W S

S W
सड़क लेवल 0
भवन (लेवल +1 फीट)
E N
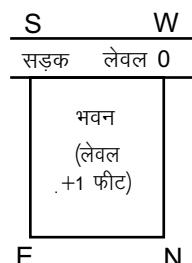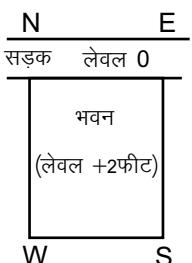
साउथ–वेस्ट में सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर यह नार्थ–ईस्ट में है। भवन के फर्श का लेवल सड़क के बराबर ही बनाएँ यदि यह संभव न हो तो अधिक से अधिक एक फीट ऊँचा रखें, इससे दोष आंशिक रहेंगे। इससे अधिक ऊँचा होने पर पूरा परिवार बीमार, परेशान, प्रगति न होना, धन व मान–सम्मान में कमी होगी। घर के मुखिया, पहली, चौथी और पाँचवीं संतान को गम्भीर बीमारी, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

साउथ–ईस्ट में सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर यह नार्थ–वेस्ट में है। भवन के फर्श का लेवल सड़क के बराबर ही बनाएँ यदि यह संभव न हो तो अधिक से अधिक 9 इंच ऊँचा रखें, इससे दोष आंशिक रहेंगे। इससे अधिक ऊँचा होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दिवालिया होना, आग व चोरी की घटनाएँ और दूसरी, तीसरी, छठी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

E S
सड़क लेवल 0
भवन (लेवल +9 इंच)
N W

W N
सड़क लेवल 0
भवन (लेवल +9 इंच)
S E
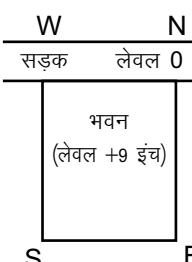
नार्थ–वेस्ट में सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर यह साउथ–ईस्ट में है। भवन के फर्श का लेवल सड़क के बराबर ही बनाएँ यदि यह संभव न हो तो अधिक से अधिक 9 इंच ऊँचा रखें, इससे दोष आंशिक रहेंगे। इससे अधिक ऊँचा होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, कोर्ट केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दिवालिया होना, आग व चोरी की घटनाएँ और दूसरी, तीसरी, छठी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

चबूतरे का निर्माण

दिशा प्लॉट

चबूतरा फर्श के तल से ऊँचा होने पर इसके गंभीर प्रभाव होते हैं।

उत्तर फेसिंग भवन

उत्तर भाग में होने पर धन की कमी, महिलाएँ बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

नार्थ–नार्थवेस्ट भाग में होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दिवालिया होना, तीसरी/ सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

N
चबूतरा
W भवन E
S

नार्थ–नार्थईस्ट भाग में होने पर धन की कमी, पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, पहली/पाँचवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

समाधान :
उत्तर फेसिंग भवन में चबूतरा फर्श के तल से ऊँचा होना वर्जित है। इसलिए इसे तोड़कर हटा दें।

N
W भवन E
S
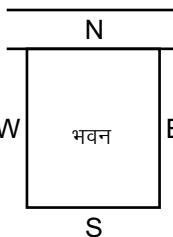
पूर्व फेसिंग भवन

पूर्व भाग में होने पर पुरूष बीमार, भय, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव अधिक गुस्सैल होगा।
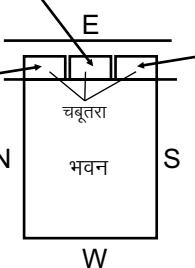
ईस्ट–नार्थईस्ट भाग में होने पर धन की कमी, पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, पहली/ पाँचवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

E
चबूतरा
N भवन S
W

ईस्ट–साउथईस्ट भाग में होने पर पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी/सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

समाधान :
उत्तर फेसिंग भवन में चबूतरा फर्श के तल से ऊँचा होना वर्जित है। इसलिए इसे तोड़कर हटा दें।

E
N भवन S
W
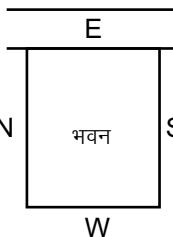
दक्षिण फेसिंग भवन

दक्षिण भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा। इससे मुख्य महिला व स्त्री संतान को बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

साउथ–साउथईस्ट भाग में होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ तीसरी/सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

S
चबूतरा
E भवन W
N
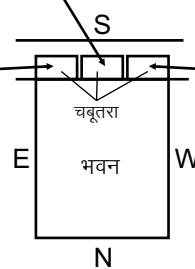
साउथ–साउथवेस्ट भाग में होने पर मुख्य महिला बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना व पहली/चौथी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

समाधान 1 :
दक्षिण फेसिंग भवन में किसी एक भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा, यह अशुभ है। इसलिए इसे तोड़कर हटा दें।

S
E भवन W
N

समाधान 2 :
यदि चबूतरा बनाना आवश्यक है तो इसे भवन के पूरे भाग में दिखाए अनुसार ही बनाएँ।

S
चबूतरा
E भवन W
N
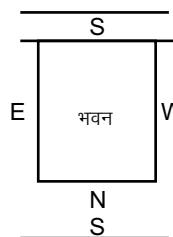
पश्चिम फेसिंग भवन

पश्चिम भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा। इससे मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

वेस्ट–साउथवेस्ट भाग में होने पर घर का मुखिया व पहली/चौथी संतान बेटा होने पर बीमार, बुरी आदतें अपराधी होना, जेल जाना व एक्सीडेंट संभव हैं।

W
चबूतरा
S भवन N
E
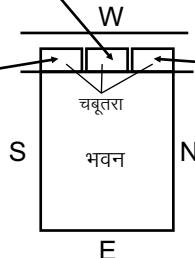
वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग में होने पर पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी/ सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

समाधान 1 :
पश्चिम फेसिंग भवन में किसी एक भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा, यह अशुभ है। इसलिए इसे तोड़कर हटा दें।

W
S भवन N
E

समाधान 2 :
यदि चबूतरा बनाना आवश्यक है तो इसे भवन के पूरे भाग में दिखाए अनुसार ही बनाएँ।

W
चबूतरा
S भवन N
E

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट फेसिंग भवन

नार्थ–ईस्ट भाग में होने पर धन की कमी, पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, पहली / पाँचवीं संतान को अधिक समस्याएँ रहेंगी।

उत्तर भाग में होने पर धन की कमी, महिलाएँ बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मानसिक अशान्ति रहेगी।
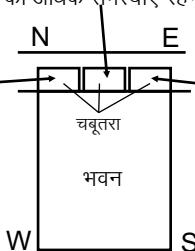
पूर्व भाग में होने पर पुरूष बीमार, भय, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव अधिक गुस्सैल होगा।

समाधान :
नार्थ–ईस्ट फेसिंग भवन में चबूतरा फर्श के तल से ऊँचा होना वर्जित है। इसलिए इसे तोड़कर हटा दें।
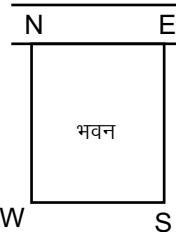
साउथ–ईस्ट फेसिंग भवन

साउथ–ईस्ट भाग में होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी / सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ रहेंगी।
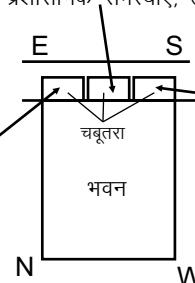
पूर्व भाग में होने पर पुरूष बीमार, भय, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव अधिक गुस्सैल होगा।

दक्षिण भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा। इससे मुख्य महिला व स्त्री संतान को बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

समाधान :
साउथ–ईस्ट फेसिंग भवन में चबूतरा फर्श के तल से ऊँचा होना वर्जित है। इसलिए इसे तोड़कर हटा दें।
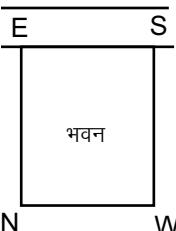
नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन

नार्थ–वेस्ट भाग में होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दिवालिया होना, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी / छठी संतान को अधिक समस्याएँ रहेंगी।

पश्चिम भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा। इससे मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।
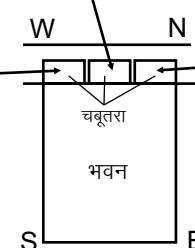
उत्तर भाग में होने पर धन की कमी, महिलाएँ बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

समाधान :
नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन में किसी एक भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा, यह अशुभ है। इसलिए इसे तोड़कर हटा दें।
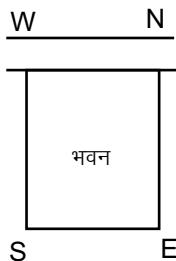
साउथ–वेस्ट फेसिंग भवन

साउथ–वेस्ट भाग में होने पर घर का मुखिया व पहली / चौथी संतान बीमार, बुरी आदतें अपराधी होना, जेल जाना व एक्सीडेंट संभव हैं।

दक्षिण भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा। इससे मुख्य महिला व स्त्री संतान को बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मानसिक अशान्ति रहेगी।
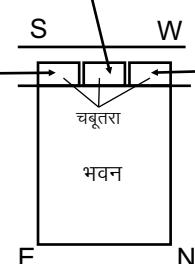
पश्चिम भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा। इससे मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

समाधान 1 :
साउथ–वेस्ट फेसिंग भवन में किसी एक भाग में चबूतरा होने से यह भाग बढ़ जाएगा, यह अशुभ है। इसलिए इसे तोड़कर हटा दें।
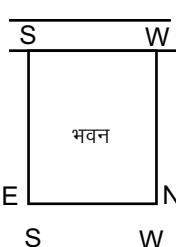
समाधान 2 :
यदि चबूतरा बनाना आवश्यक है तो इसे भवन के पूरे भाग में दिखाए अनुसार ही बनाएँ।
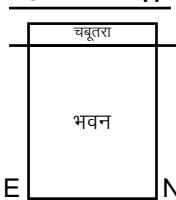
बेसमेंट

सड़क को प्लॉट का ही भाग माना जाता है। बेसमेंट मे उच्च स्थान पर मुख्य द्वार व सीढ़ी होने से पूरी बेसमेंट गलत दिशा में हो जाती है, इसके अत्यन्त गंभीर दोष होते हैं। इसलिए बेसमेंट में दिखाए अनुसार ही मुख्य द्वार व सीढ़ी बनाएँ।

दिशा प्लॉट

दक्षिण फेसिंग भवन

ध्यान रहे कि उत्तर/पूर्व में गली हो तो यहाँ दरवाजा लगाने से शुभ प्रभावों में कमी आएगी। यदि दक्षिण से उत्तर/पूर्व की सड़क अधिक चौड़ी है तो दरवाजा लगाने से अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

दक्षिण में मुख्य सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर उत्तर भाग में बेसमेंट है। जिससे उत्तर भाग नीचा व दक्षिण भाग ऊँचा हो गया है। इससे महिलाएँ व स्त्री संतान स्वस्थ, सुखी व उनके आत्मविश्वास में वृद्धि और धन की प्राप्ति होगी। यदि पश्चिम में गली या सड़क है तो यहाँ दरवाजा होने से शुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाऐंगे।

बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथ–साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में ही बनाएँ, इससे शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।
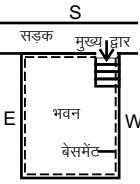
दक्षिण में मुख्य सड़क है। दक्षिण , उत्तर व पश्चिम में खाली जगह छोड़कर बेसमेंट का निर्माण है। दक्षिण में ऊँची जगह ज्यादा व उत्तर में कम है और पश्चिम भाग ऊँचा व पूर्व भाग नीचा है, इसके आंशिक शुभ प्रभाव होंगे, इससे पुरूष स्वस्थ व सुखी तथा उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और धन की प्राप्ति होगी, महिलाएँ स्वस्थ और सुखी रहेंगी व उनके मनोबल में वृद्धि होगी। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में ही बनाएँ।

पूर्व भाग ऊँचा व पश्चिम भाग नीचा है। इससे पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में ही बनाएँ।

पश्चिम फेसिंग भवन

ध्यान रहे कि पूर्व/उत्तर में गली हो तो यहाँ दरवाजा लगाने से शुभ प्रभावों में कमी आएगी। यदि पश्चिम से पूर्व/उत्तर की सड़क अधिक चौड़ी है तो दरवाजा लगाने से अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

पश्चिम में मुख्य सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर पूर्व भाग में बेसमेंट है। जिससे पूर्व भाग नीचा व पश्चिम भाग ऊँचा हो गया है। इससे पुरूष स्वस्थ, सुखी व उनके आत्मविश्वास में वृद्धि और धन की प्राप्ति होगी। यदि दक्षिण में गली या सड़क है तो यहाँ दरवाजा होने से शुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाऐंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ वेस्ट–साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में ही बनाएँ, इससे शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।
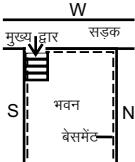
पश्चिम में मुख्य सड़क है। पश्चिम, दक्षिण व पूर्व में खाली जगह छोड़कर बेसमेंट का निर्माण है। पश्चिम में ऊँची जगह ज्यादा व पूर्व में कम है, और दक्षिण भाग ऊँचा व उत्तर भाग नीचा है, इसके आंशिक शुभ प्रभाव होंगे, इससे महिलाएँ व स्त्री संतान स्वस्थ व सुखी तथा उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और धन की प्राप्ति होगी, पुरुष स्वस्थ, सुखी व उनके मनोबल में वृद्धि होगी। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में ही बनाएँ।
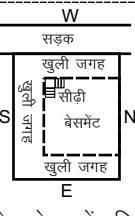
उत्तर भाग ऊँचा व दक्षिण भाग नीचा है। इससे महिला व स्त्री संतान को गम्भीर बीमारी, मान–सम्मान व धन की कमी, प्रशासनिक समस्याएँ, मानसिक अशान्ति व झगड़े रहेंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में ही बनाएँ।

उत्तर फेसिंग भवन

ध्यान रहे कि पूर्व में गली/सड़क हो तो यहाँ दरवाजा होने से अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाऐंगे। दक्षिण/पश्चिम में सड़क हो तो यहाँ दरवाजा होने से अशुभ प्रभावों में कमी आएगी।

उत्तर में मुख्य सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर दक्षिण भाग में बेसमेंट है। जिससे दक्षिण भाग नीचा व उत्तर भाग ऊँचा हो गया है। इससे धन की कमी, महिलाएँ व स्त्री संतान बीमार, परेशान, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति रहेगी। मुख्य द्वार व सीढ़ी को दिखाई गई जगह पर बनाने से अशुभ प्रभावों में कमी आएगी।

उत्तर में ऊँची जगह ज्यादा व दक्षिण में कम है और पश्चिम भाग ऊँचा व पूर्व भाग नीचा है। इससे उपरोक्त चित्र की अपेक्षा अशुभ परिणाम कुछ कम होंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

पूर्व फेसिंग भवन

ध्यान रहे कि उत्तर में गली/सड़क हो तो यहाँ दरवाजा होने से अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाऐंगे। दक्षिण/पश्चिम में सड़क हो तो यहाँ दरवाजा होने से अशुभ प्रभावों में कमी आएगी।

पूर्व में मुख्य सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर पश्चिम भाग में बेसमेंट है। जिससे पश्चिम भाग नीचा व पूर्व भाग ऊँचा हो गया है। इससे पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है। मुख्य द्वार व सीढ़ी को दिखाई गई जगह पर बनाने से अशुभ प्रभावों में कमी आएगी।
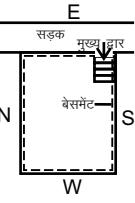
पूर्व में ऊँची जगह ज्यादा व पश्चिम में कम है और दक्षिण भाग ऊँचा व उत्तर भाग नीचा है। इससे उपरोक्त चित्र की अपेक्षा अशुभ परिणाम कुछ कम होंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

उत्तर में मुख्य सड़क है। उत्तर , दक्षिण व पश्चिम में खाली जगह छोड़कर बेसमेंट का निर्माण है। उत्तर में ऊँची जगह ज्यादा व दक्षिण में कम है, और पूर्व भाग ऊँचा व पश्चिम भाग नीचा है। इससे पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान—सम्मान व धन की कमी, कोर्ट—केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है, धन की कमी, महिलाएँ व स्त्री संतान बीमार, परेशान, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति रहेगी। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

पूर्व में मुख्य सड़क है। पूर्व , उत्तर व पश्चिम में खाली जगह छोड़कर बेसमेंट का निर्माण है। पूर्व में ऊँची जगह ज्यादा व पश्चिम में कम है और उत्तर भाग ऊँचा व दक्षिण भाग नीचा है। इससे धन की कमी, महिलाएँ व स्त्री संतान बीमार, परेशान, स्वभाव चिड़चिड़ा, मानसिक अशान्ति रहेगी, पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान—सम्मान व धन की कमी, कोर्ट—केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ साउथवेस्ट में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

विदिशा प्लॉट

साउथ—वेस्ट फेसिंग

ध्यान रहे कि साउथ—ईस्ट या नार्थ—वेस्ट में गली/सड़क है तो यहाँ दरवाजा होने से शुभ प्रभाव प्राप्त न होकर अशुभ प्रभाव होंगे। नार्थ—ईस्ट में गली हो तो दरवाजा लगाने से शुभ प्रभावों में कमी आएगी। यदि साउथ—वेस्ट से नार्थ—ईस्ट की सड़क/जगह अधिक चौड़ी है तो दरवाजा लगाने से अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

साउथ—वेस्ट में मुख्य सड़क है। सड़क से भवन को देखने पर नार्थ—ईस्ट भाग में बेसमेंट है। जिससे साउथ—वेस्ट भाग ऊँचा व नार्थ—ईस्ट भाग नीचा हो गया है, यह शुभ है। इससे पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न, प्रगतिशील, मान—सम्मान बढ़ेगा, निवासी उच्च पद पर कार्यरत होंगे व पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ मिलेगा। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में नार्थ—वेस्ट की दीवार से न सटते हुए दिखाए अनुसार बनाएँ, इससे शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।
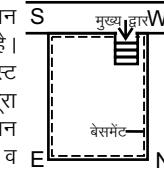
साउथ—वेस्ट में मुख्य सड़क है। साउथ—वेस्ट, नार्थ—ईस्ट व नार्थ—वेस्ट में खाली जगह छोड़कर बेसमेंट का निर्माण है। इससे साउथ—ईस्ट भाग नीचा और नार्थ—वेस्ट भाग ऊँचा हो गया है, यह अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, प्रशासनिक समस्याएं, दिवालिया होना, आग व चोरी की घटनाएं, कोर्ट—केस, दूसरी तीसरी, छठी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।
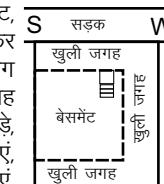
साउथ—ईस्ट भाग ऊँचा व नार्थ—वेस्ट भाग नीचा है, यह अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, प्रशासनिक समस्याएं, दिवालिया होना, आग व चोरी की घटनाएं, कोर्ट—केस, दूसरी तीसरी, छठी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

नार्थ—वेस्ट फेसिंग

ध्यान रहे कि नार्थ—ईस्ट व साउथ—ईस्ट में गली/सड़क होने पर यहाँ दरवाजा लगाने से अशुभ परिणाम कई गुना बढ़ जाएँगे। साउथ—वेस्ट में गली/सड़क होने पर यहाँ दरवाजा लगाने से अशुभ परिणामों में कमी आएगी।
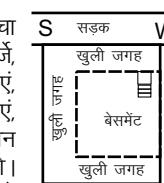
नार्थ—वेस्ट में सड़क है व भवन के पूरे भाग में बेसमेंट है। जिससे नार्थ—वेस्ट भाग ऊँचा व साउथ—ईस्ट भाग नीचा हो गया है, यह अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट—केस, प्रशासनिक समस्याएँ और दूसरी, तीसरी छठी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। मुख्य द्वार व सीढ़ी को दिखाई गई जगह पर बनाने से अशुभ प्रभावों में कमी आएगी।

नार्थ—वेस्ट में मुख्य सड़क है। नार्थ—वेस्ट , साउथ—वेस्ट व साउथ—ईस्ट में खाली जगह छोड़कर बेसमेंट का निर्माण हुआ है। नार्थ—वेस्ट में ऊँची जगह ज्यादा व साउथ—ईस्ट में कम है, यह अशुभ है। साउथ—वेस्ट भाग ऊँचा व नार्थ—ईस्ट भाग नीचा है, इससे उपरोक्त चित्र की अपेक्षा अशुभ परिणामों में कुछ कमी आएगी। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

नार्थ—ईस्ट भाग ऊँचा व साउथ—वेस्ट भाग नीचा है, यह अशुभ है। इससे उपरोक्त चित्र की अपेक्षा अशुभ परिणाम कई गुना बढ़ जाएंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।
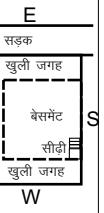
नार्थ–ईस्ट फेसिंग

ध्यान रहे कि साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट में गली/सड़क होने पर यहाँ दरवाजा लगाने से अशुभ परिणाम कई गुना बढ़ जाएँगे। साउथ–वेस्ट में गली/सड़क होने पर यहाँ दरवाजा लगाने से अशुभ परिणामों में कमी आएगी।

नार्थ–ईस्ट में मुख्य सड़क है व भवन के पूरे भाग में बेसमेंट है। जिससे नार्थ–ईस्ट भाग ऊँचा व साउथ–वेस्ट भाग नीचा हो गया है, यह अशुभ है। इससे घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। मुख्य द्वार व सीढ़ी को दिखाई गई जगह पर बनाने से अशुभ प्रभावों में कमी आएगी।
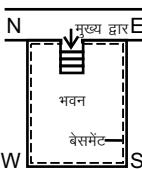
नार्थ–ईस्ट में मुख्य सड़क है। नार्थ–ईस्ट, साउथ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट में खाली जगह छोड़कर बेसमेंट का निर्माण है। नार्थ–ईस्ट में ऊँची जगह ज्यादा व साउथ–वेस्ट में कम है और नार्थ–वेस्ट भाग नीचा व साउथ–ईस्ट भाग ऊँचा है। इससे कर्जे, झगड़े, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ और दूसरी, तीसरी, छठी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।
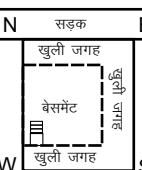
इस भवन में उपरोक्त चित्र के समान प्रभाव रहेंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

साउथ–ईस्ट फेसिंग

ध्यान रहे कि नार्थ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट में गली/सड़क होने पर यहाँ दरवाजा लगाने से अशुभ परिणाम कई गुना बढ़ जाएँगे। साउथ–वेस्ट में गली/सड़क होने पर यहाँ दरवाजा लगाने से अशुभ परिणामों में कमी आएगी।

साउथ–ईस्ट में मुख्य सड़क है व भवन के पूरे भाग में बेसमेंट है। जिससे साउथ–ईस्ट भाग ऊँचा व नार्थ–वेस्ट भाग नीचा हो गया है, यह अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, पुरूषों में भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ और दूसरी, तीसरी छठी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। मुख्य द्वार व सीढ़ी को दिखाई गई जगह पर बनाने से अशुभ प्रभावों में कमी आएगी।
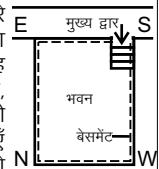
साउथ–ईस्ट में मुख्य सड़क है। साउथ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट व साउथ–वेस्ट में खाली जगह छोड़कर बेसमेंट का निर्माण हुआ है। साउथ–ईस्ट में ऊँची जगह ज्यादा व नार्थ–वेस्ट में कम है, यह अशुभ है। साउथ–वेस्ट भाग ऊँचा व नार्थ–ईस्ट भाग नीचा है, इससे उपरोक्त चित्र की अपेक्षा अशुभ परिणामों में कुछ कमी आएगी। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

नार्थ–ईस्ट भाग ऊँचा व साउथ–वेस्ट भाग नीचा है, यह अशुभ है। इससे उपरोक्त चित्र की अपेक्षा अशुभ परिणाम कई गुना बढ़ जाऐंगे। बेसमेंट में जाने के लिए द्वार व सीढ़ियाँ पश्चिम में दिखाई गई जगह में बनाने से दोषों के प्रभावों में कमी आएगी।

संगीत व वास्तु पुस्तक (PDF) मुफ्त डाउनलोड करें
44
देखें www.dwarkadheeshvatu.com
भवन/कमरे के किसी भी एक भाग में बेसमेंट के प्रभाव
सड़क चाहें किसी भी तरफ हो, भवन/कमरे के किसी एक भाग में बेसमेंट होने पर उसके प्रभाव नीचे दिखाए गए चित्रों के अनुसार ही होंगे।
दिशा प्लॉट
शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह
विदिशा प्लॉट
N
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
W
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
E
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
S
शुभ प्रभाव :
पूर्व, उत्तर व नार्थ–ईस्ट भाग में बेसमेंट होना श्रेष्ठ है। इससे पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न व स्वस्थ, परिवार की प्रगति, धन की प्राप्ति, व समाज में मान–सम्मान होगा।
N
E
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
W
S
शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में बेसमेंट होने के प्रभाव
दिशा प्लॉट
नार्थ–वेस्ट में धन की कमी, महिलाएं बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मान–सम्मान कम होगा।
वेस्ट–नार्थ महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
विदिशा प्लॉट
ब्रह्मस्थान में घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।
N
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
W
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
E
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
S
पश्चिम में घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।
साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।
N
E
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
W
S
दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।
ईस्ट–साउथ में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।
साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
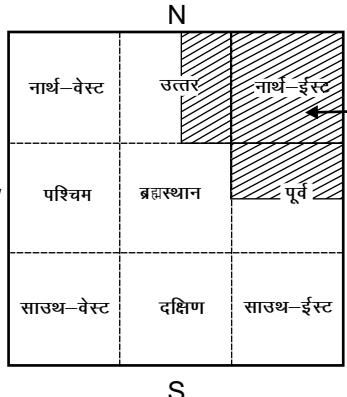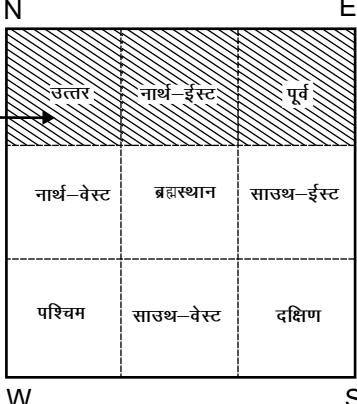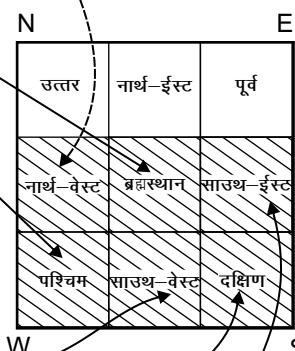
संगीत व वास्तु पुस्तक (PDF) मुफ्त डाउनलोड करें
45
देखें www.dwarkadheeshvatu.com
बेसमेंट के दोष को दूर करने का उपाय
नीचे दिखाए गए भवनों में बेसमेंट को भरवाकर पूरे भवन में फर्श का तल एक समान करें। इससे दोष दूर हो जाएगा।
दिशा प्लॉट
सड़क
मुख्य सड़क
गली
खुली जगह
बेसमेंट
भवन
N
E
S
W
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
विदिशा प्लॉट
नीचे दिखाए गए भवनों में बेसमेंट को पीछे की तरफ पूरे भाग में खुदवाना अति आवश्यक है। यह अति शुभ है।
दिशा प्लॉट
विदिशा प्लॉट
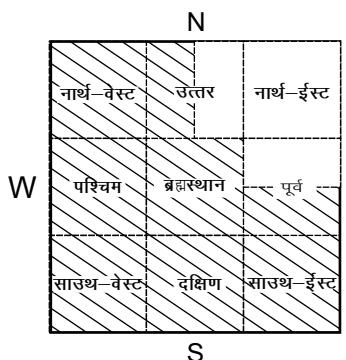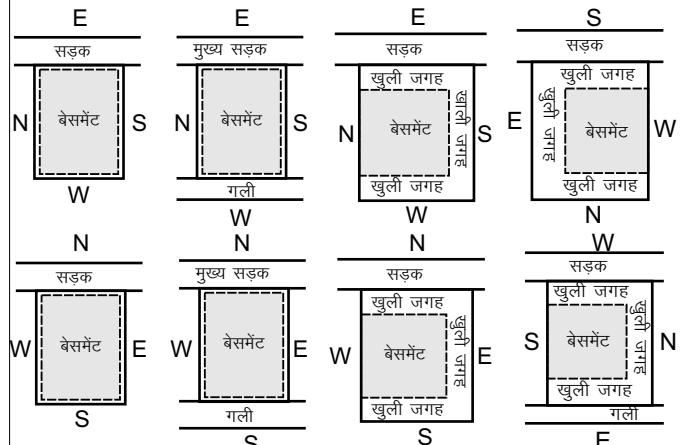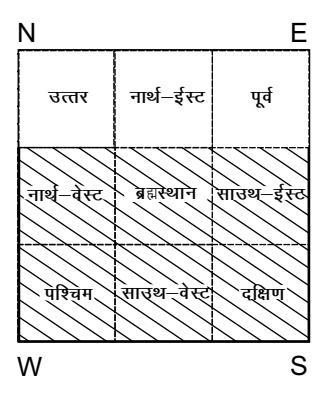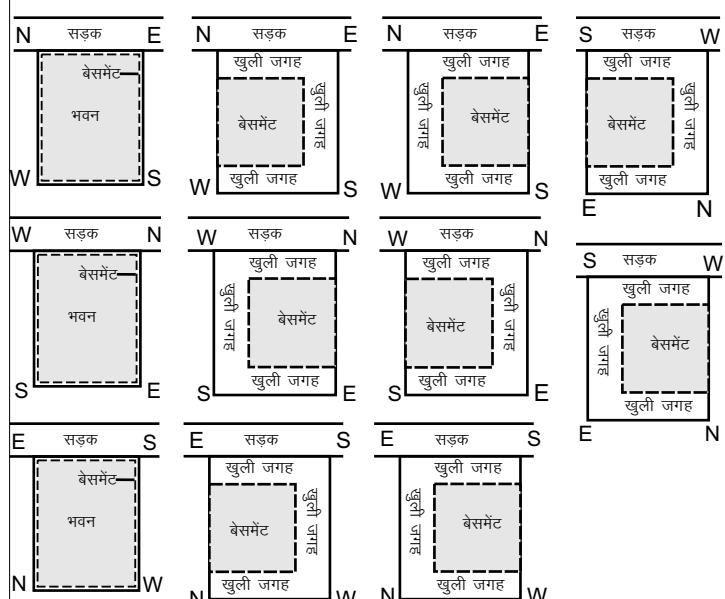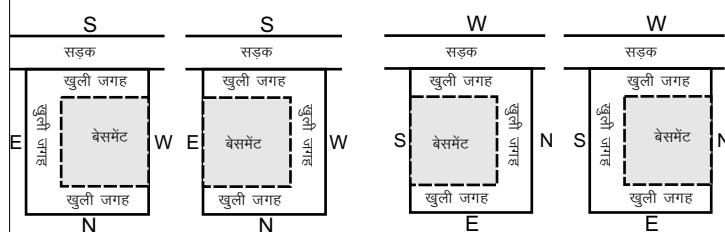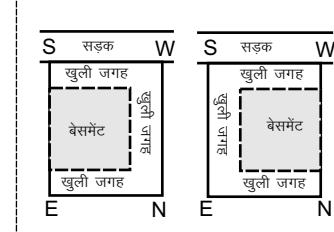
संगीत व वास्तु पुस्तक (PDF) मुफ्त डाउनलोड करें
46
देखें www.dwarkadheeshvatu.com
टाँड, परछत्ति व अलमारी
भवन या कमरे की पूर्व , उत्तर , नार्थ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट की दीवारों और किसी भी कोने में नहीं बननी चाहिए।
दिशा प्लॉट
शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह
विदिशा प्लॉट
N
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
W
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
E
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
S
भवन या कमरे की पूर्व, उत्तर, नार्थ–ईस्ट, साउथ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट दीवारों और किसी भी कोने मे टाँड/परछत्ति/ अलमारी या कोई वजन (सोफा, टी0वी0, गमला इत्यादि) होने पर इसके अशुभ प्रभाव होते हैं। लेकिन पहिए वाली अलमारी या कोई भी सामान जमीन पर दीवार से न सटते हुए कम से कम एक इंच दूर किसी भी दिशा में रख सकते हैं, इसमें दीमक भी नहीं लगती है।
भवन या कमरे की केवल पश्चिम, दक्षिण व साउथ–वेस्ट दीवारों पर ही इसका निर्माण करना चाहिए।
N
E
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
W
S
भवन या कमरे में शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में टाँड/परछत्ति/ अलमारी या कोई वजन (सोफा, टी0वी0, गमला इत्यादि) के प्रभाव
दिशा प्लॉट
विदिशा प्लॉट
नार्थ–वेस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
उत्तर में महिलाएं बीमार व धन की समस्या रहेगी।
नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
N
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
W
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
E
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
S
N
E
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
W
S
पूर्व में पुरूषों को बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।
साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, पुरूषों में भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया व पहली संतान को अधिक समस्याएँ व घर से बाहर रहेंगे।
पश्चिम में घर का मुखिया घर से बाहर रहेगा।
दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।
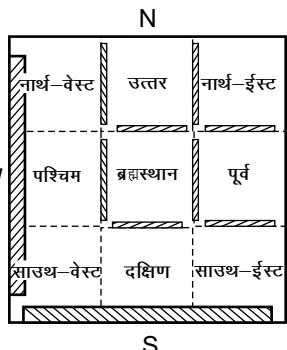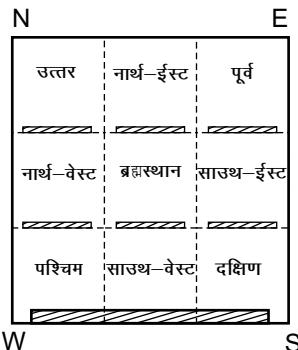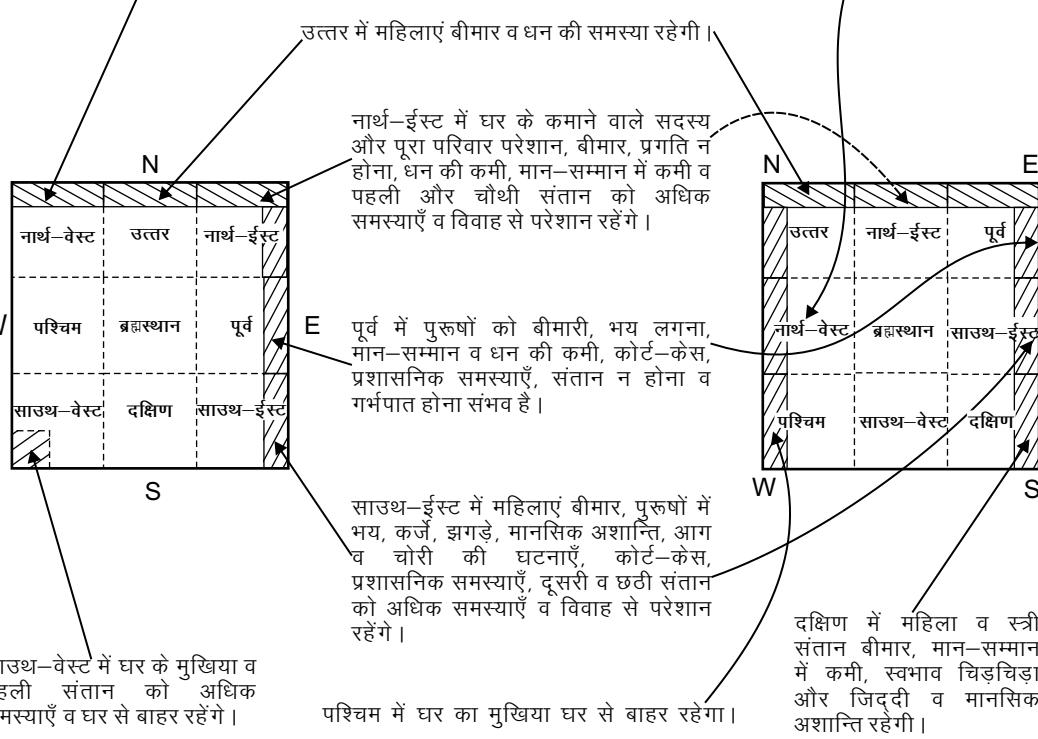
संगीत व वास्तु पुस्तक (PDF) मुफ्त डाउनलोड करें
47
देखें www.dwarkadheeshvatu.com
डूप्लेक्स हाउस/मेजानाईन फ्लोर
का निर्माण भवन की लम्बाई व चौड़ाई के एक तिहाई भाग से अधिक नहीं होना चाहिए।
दिशा प्लॉट
शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह
विदिशा प्लॉट
N
W
E
S
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
इस भाग में एक से अधिक मंजिलों का निर्माण कर सकते हैं। ध्यान रहे कि शेड द्वारा दिखाए गए पूरे भाग में ही निर्माण होना चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि बिना शेड दिखाए गए भाग की छत और शेड द्वारा दिखाए गए भाग की अन्तिम छत एक ही ऊँचाई पर होनी चाहिए।
N
E
W
S
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में डूप्लेक्स हाउस/मेजानाईन फ्लोर बनने के प्रभाव
दिशा प्लॉट
विदिशा प्लॉट
नार्थ–वेस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
उत्तर में महिलाएं बीमार व धन की समस्या रहेगी।
नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
N
W
E
S
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
पूर्व में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।
N
E
W
S
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, पुरूषों में भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
ब्रह्मस्थान में परिवार में झगड़े, बीमारी व वंश वृद्धि न होना संभव है।
साउथ में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।
साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया बड़ी संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।
पश्चिम में घर का मुखिया घर से बाहर रहेगा।
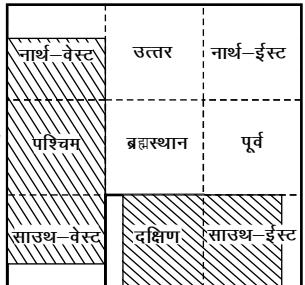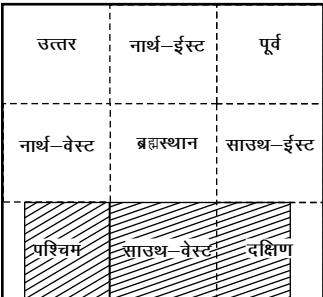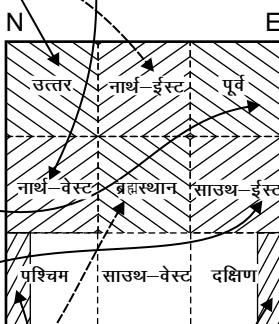
शाफ्ट / डक्ट / खुले स्थान के प्रभाव

दिशा प्लॉट

उत्तर में इसके आंशिक प्रभाव रहेंगे। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो इससे धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो परिणाम कई गुना बढ़ जाऐंगे।

नार्थ–वेस्ट में इससे कोई प्रभाव नहीं होगा। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

N W भवन E S

पूर्व में इसके आंशिक प्रभाव रहेंगे। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो इससे पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

पश्चिम में पुरूषों में भय रहेगा व आत्मविश्वास कम होगा। खुले स्थान को किसी भी मंजिल की छत या आखरी छत पर कवर कर सकते हैं।

साउथ–वेस्ट घर के मुखिया व बड़ी संतान को बीमारी, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना व एक्सीडेंट संभव है। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो घर का मुखिया, पहली और पॉचवीं संतान घर से बाहर रहेंगे।

दक्षिण में महिलाओं में भय रहेगा व आत्मविश्वास कम होगा। खुले स्थान को किसी भी मंजिल की छत या आखरी छत पर कवर कर सकते हैं।

साउथ–ईस्ट में इससे कोई प्रभाव नहीं होगा। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो महिलाएं बीमार, पुरूषों में भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान रखने का स्थान :

N W खुला स्थान E S

शाफ्ट / डक्ट बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

N W E S

उत्तर, नार्थ–ईस्ट व पूर्व में शाफ्ट / डक्ट मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर दिखाए अनुसार बना सकते हैं।

N W E S

पश्चिम में शाफ्ट / डक्ट होने पर इसके समान या अधिक लम्बाई व चौंड़ाई की शाफ्ट / डक्ट का निर्माण पूर्व में भी होना जरूरी है। किन्तु केवल पूर्व में शाफ्ट होने पर पश्चिम में होना जरूरी नहीं है।

N W E S

साउथ–वेस्ट में शाफ्ट / डक्ट होने पर इसके समान या अधिक लम्बाई व चौंड़ाई की शाफ्ट / डक्ट का निर्माण नार्थ–ईस्ट में भी होना जरूरी है। किन्तु केवल नार्थ–ईस्ट में शाफ्ट होने पर साउथ–वेस्ट में होना जरूरी नहीं है।

N W E S

साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट में शाफ्ट / डक्ट दोनो जगह पर एक समान लम्बाई व चौंड़ाई की होनी चाहिए। इनमें से किसी भी एक स्थान पर इसका निर्माण वर्जित है।

N W E S
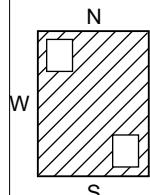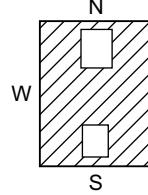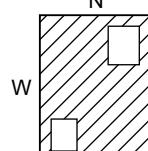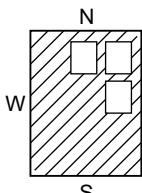
दक्षिण में शाफ्ट / डक्ट होने पर इसके समान या अधिक लम्बाई व चौंड़ाई की शाफ्ट / डक्ट का निर्माण उत्तर में भी होना जरूरी है। किन्तु केवल उत्तर में शाफ्ट होने पर दक्षिण में होना जरूरी नहीं है।

विदिशा प्लॉट

उत्तर में धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो परिणाम कई गुना बढ़ जाऐंगे।

नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो परिणाम कई गुना बढ़ जाऐंगे।

पूर्व में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है। खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो परिणाम कई गुना बढ़ जाऐंगे।

नार्थ–वेस्ट में खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

साउथ–ईस्ट में खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने से यदि इस भाग की ऊँचाई छत के तल से 1 फीट से अधिक हो जाती है तो महिलाएं बीमार, पुरूषों में भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

पश्चिम में घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है। खुले स्थान को किसी भी मंजिल की छत या आखरी छत पर कवर कर सकते हैं।

दक्षिण में महिलाओं में भय रहेगा व आत्मविश्वास कम होगा।

साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया व बड़ी संतान को बीमारी, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना व एक्सीडेंट संभव है। खुले स्थान को किसी भी मंजिल की छत या आखरी छत पर कवर कर सकते हैं।

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान रखने का स्थान :

शाफ्ट / डक्ट / खुला स्थान बिना शेड् द्वारा दिखाए गए भाग में ही रख सकते हैं। ध्यान रहे कि यह मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।

उत्तर, नार्थ–ईस्ट व पूर्व में शाफ्ट / डक्ट मुख्य दीवारों से कम से कम 3 फीट दूर दिखाए अनुसार बना सकते हैं।

पश्चिम में शाफ्ट / डक्ट होने पर इसके समान या अधिक लम्बाई व चौड़ाई की शाफ्ट / डक्ट का निर्माण पूर्व में भी होना जरूरी है। किन्तु केवल पूर्व में शाफ्ट होने पर पश्चिम में होना जरूरी नहीं है।
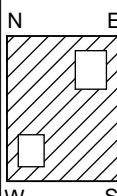
साउथ–वेस्ट में शाफ्ट / डक्ट होने पर इसके समान या अधिक लम्बाई व चौड़ाई की शाफ्ट / डक्ट का निर्माण नार्थ–ईस्ट में भी होना जरूरी है। किन्तु केवल नार्थ–ईस्ट में शाफ्ट होने पर साउथ–वेस्ट में होना जरूरी नहीं है।

साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट में शाफ्ट / डक्ट दोनो जगह पर एक समान लम्बाई व चौड़ाई की होनी चाहिए। इनमें से किसी भी एक स्थान पर इसका निर्माण वर्जित है।
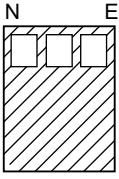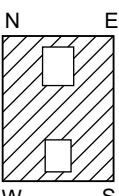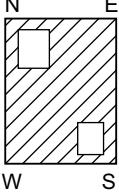
दक्षिण में शाफ्ट / डक्ट होने पर इसके समान या अधिक लम्बाई व चौड़ाई की शाफ्ट / डक्ट का निर्माण उत्तर में भी होना जरूरी है। किन्तु केवल उत्तर में शाफ्ट होने पर दक्षिण में होना जरूरी नहीं है।

कोनों का कटना व बढ़ना जानने की विधि

यदि किसी प्लॉट/भवन/कमरे का आकार अधिक टेंढ़ा हो तो कोनो व भागों के कटने व बढ़ने का निर्धारण नीचे दिखाए गए चित्र के अनुसार कर सकते हैं।

दिशा प्लॉट

उत्तर भाग बढ़ गया है।
N
नार्थ–वेस्ट कोना बढ़ गया है।
नार्थ–ईस्ट कोना कट गया है।
ईस्ट–नार्थईस्ट बढ़ गया है।
W
प्लॉट
E
ईस्ट–साउथईस्ट कट गया है।
साउथ–वेस्ट कोना कट गया है।
S
दक्षिण भाग बढ़ गया है।
साउथ–साउथईस्ट बढ़ गया है।

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट भाग बढ़ गया है।
N
उत्तर कोना बढ़ गया है।
E
पूर्व कोना कट गया है।
ईस्ट–साउथईस्ट बढ़ गया
प्लॉट
साउथ–साउथईस्ट कोना कट गया है।
W
S
पश्चिम कोना कट गया है।
साउथ–वेस्ट भाग बढ़ गया है।
साउथ–साउथवेस्ट भाग बढ़ गया
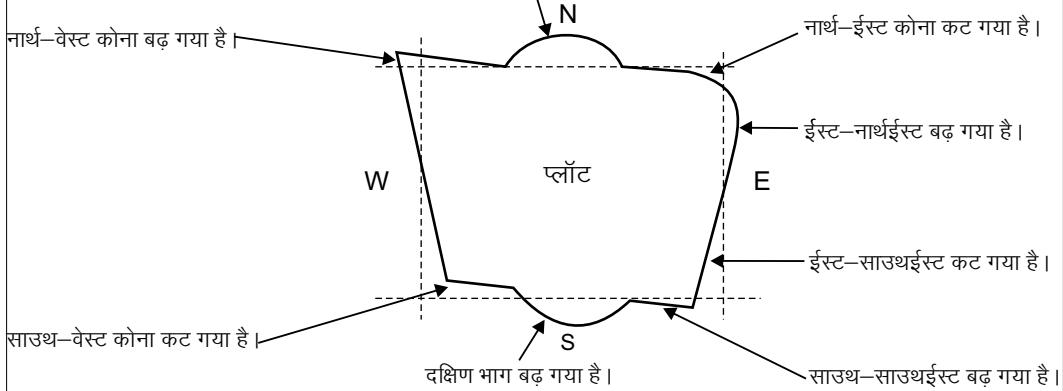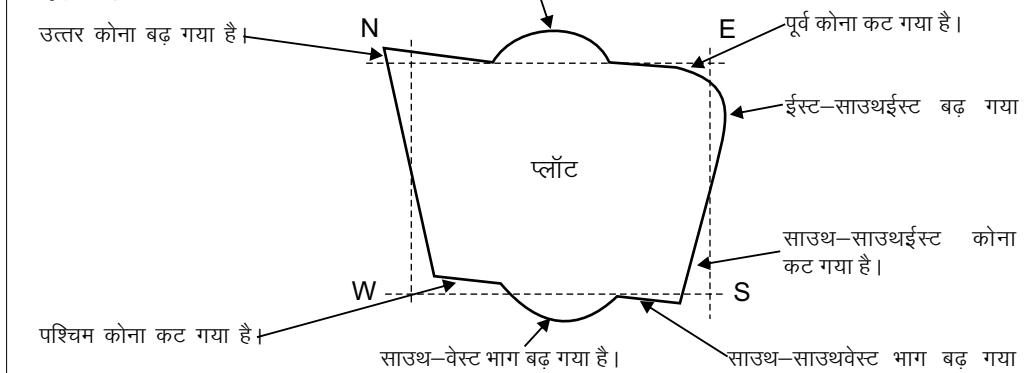
भवन/कमरे में बॉलकनी के प्रभाव

किसी एक कोने में बॉलकनी का निर्माण होने के गम्भीर प्रभाव होते हैं।

दिशा प्लॉट

नार्थ–नार्थईस्ट भाग में बॉलकनी का सही निर्माण होने से पूरा परिवार सुखी, धन की प्राप्ति, महिलाएँ चतुर, उच्च पद पर कार्यरत व पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ। निर्माण गलत होने पर अशुभ परिणाम होंगे।

N
W भवन E
S

ईस्ट–नार्थईस्ट भाग में बॉलकनी का सही निर्माण होने से पूरा परिवार सुखी, पुरूष संतान बुद्विमान, उच्च पद पर कार्यरत व पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा। निर्माण गलत होने पर अशुभ परिणाम होंगे।

N
W भवन E
S
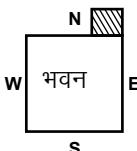
पूर्व भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से पूर्व बढ़ने के लाभ नहीं मिलेंगे बल्कि ईस्ट–नार्थईस्ट कटने के प्रभाव लागू होंगे। इससे पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, भय, मान–सम्मान में कमी, पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

N
W भवन E
S
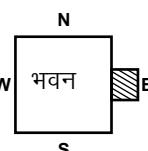
ईस्ट–साउथईस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से पुरूषं बीमार, भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी और छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

N
W भवन E
S
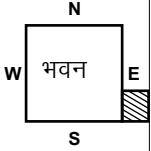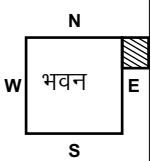
साउथ–साउथईस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी और छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

साउथ–साउथवेस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से घर के मुखिया, मुख्य महिला व पहली और पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

पश्चिम भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

नार्थ–नार्थवेस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी और सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
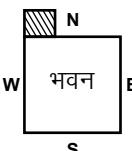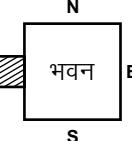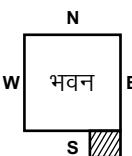
दक्षिण भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मान–सम्मान में कमी व मानसिक
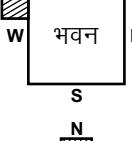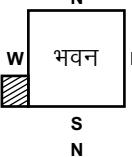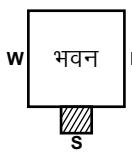
वेस्ट–साउथवेस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से घर के मुखिया व पहली और पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव

वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी और सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

उत्तर भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से उत्तर बढ़ने के लाभ नहीं मिलेंगे बल्कि नार्थ–नार्थईस्ट कोना कटने के प्रभाव लागू होंगे। इससे धन की कमी, पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
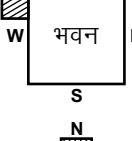
विदिशा प्लॉट
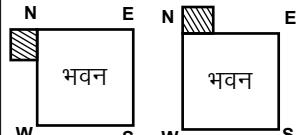
उत्तर भाग में बॉलकनी का सही निर्माण होने से धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ और सुखी रहेंगी, मान–सम्मान बढ़ेगा व स्वभाव निर्मल होगा। निर्माण गलत होने पर अशुभ परिणाम होंगे।

नार्थ–ईस्ट इस भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से इसके बढ़ने के शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि उत्तर और पूर्व कोने कटने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे धन की कमी, महिलाएँ व पुरूष बीमार, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव चिड़चिड़ा और गुस्सैल होगा।
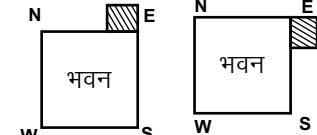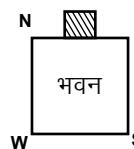
पूर्व भाग में बॉलकनी का सही निर्माण होने से पुरूष स्वस्थ और सुखी रहेंगे, स्वभाव निर्मल होगा, मान–सम्मान और आय बढ़ेगी व उच्च पद पर कार्यरत होंगे। निर्माण गलत होने पर अशुभ परिणाम होंगे।

साउथ–ईस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी और छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दक्षिण भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मान–सम्मान में कमी व मानसिक अशान्ति रहेगी।
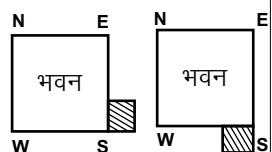
साउथ–वेस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से घर के मुखिया व पहली और पाँचवीं संतान को गम्भीर बीमारी, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

पश्चिम भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।
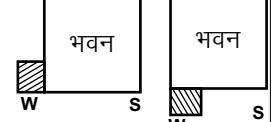
नार्थ–वेस्ट भाग में बॉलकनी का निर्माण होने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी और सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
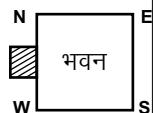
बहुमंजिला भवन में बॉलकनी के प्रभाव

छत और फर्श दोनों में समान रूप से कोई भी भाग बढ़ने पर प्रभाव पूर्ण रूप से लागू होते हैं। यदि कोई एक भाग बढ़ता है तो उसके आधे प्रभाव ही लागू होंगे।

दिशा प्लॉट

पूर्व फेसिंग भवन

ग्राउन्ड फ्लोर : छत में बॉलकनी के निर्माण से ईस्ट–साउथईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श चौरस है इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

पहली मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से ईस्ट–साउथईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव लागू होंगे। छत में बॉलकनी के निर्माण से ईस्ट–नार्थईस्ट बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

दूसरी मंजिल : छत में बॉलकनी के निर्माण से ईस्ट–साउथईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। फर्श में बॉलकनी के निर्माण से ईस्ट–नार्थईस्ट बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

तीसरी मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से ईस्ट–साउथईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत चौरस है इसलिए ईस्ट–साउथईस्ट बढ़ने के 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

W N S E छत तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क

उत्तर फेसिंग भवन

ग्राउन्ड फ्लोर : छत में बॉलकनी के निर्माण से नार्थ–नार्थईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श चौरस है। इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

पहली मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से नार्थ–नार्थईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे। छत में बॉलकनी के निर्माण से नार्थ–नार्थवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

दूसरी मंजिल : छत में बॉलकनी के निर्माण से नार्थ–नार्थईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे। फर्श में बॉलकनी के निर्माण से नार्थ–नार्थवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

तीसरी मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से नार्थ–नार्थईस्ट भाग बढ़ गया है, किन्तु छत चौरस है। इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

S W E N छत तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क

दक्षिण फेसिंग भवन

ग्राउन्ड फ्लोर : छत में बॉलकनी के निर्माण से साउथ–साउथवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श चौरस है। इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

पहली मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से साउथ–साउथवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। छत में बॉलकनी के निर्माण से साउथ–साउथईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव लागू ही होंगे।

दूसरी मंजिल : छत में बॉलकनी के निर्माण से साउथ–साउथवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। फर्श में बॉलकनी के निर्माण से साउथ–साउथईस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव लागू ही होंगे।

तीसरी मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से साउथ–साउथवेस्ट भाग बढ़ गया है, किन्तु छत चौरस है। इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

N E W S छत तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क

पश्चिम फेसिंग भवन

ग्राउन्ड फ्लोर : छत में बॉलकनी के निर्माण से वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श चौरस है। इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

पहली मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। छत में बॉलकनी के निर्माण से वेस्ट–साउथवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव लागू ही होंगे।

दूसरी मंजिल : छत में बॉलकनी के निर्माण से वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। फर्श में बॉलकनी के निर्माण से वेस्ट–साउथवेस्ट भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव लागू ही होंगे।

तीसरी मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग बढ़ गया है, किन्तु छत चौरस है। इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

E S N W छत तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट फेसिंग भवन

ग्राउन्ड फ्लोर : छत में बॉलकनी के निर्माण से पूर्व भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श चौरस है इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

पहली मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से पूर्व भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे। छत में बॉलकनी के निर्माण से उत्तर भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

दूसरी मंजिल : छत में बॉलकनी के निर्माण से पूर्व भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे। फर्श में बॉलकनी के निर्माण से उत्तर भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

तीसरी मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से पूर्व भाग बढ़ गया है किन्तु छत चौरस है इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

S W E छत N तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क

साउथ–ईस्ट फेसिंग भवन

ग्राउन्ड फ्लोर : छत में बॉलकनी के निर्माण से दक्षिण भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श चौरस है इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

पहली मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से दक्षिण भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। छत में बॉलकनी के निर्माण से पूर्व भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

दूसरी मंजिल : छत में बॉलकनी के निर्माण से दक्षिण भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। फर्श में बॉलकनी के निर्माण से पूर्व भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

तीसरी मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से दक्षिण भाग बढ़ गया है किन्तु छत चौरस है इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

W N S छत E तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क

साउथ–वेस्ट फेसिंग भवन

ग्राउन्ड फ्लोर : छत में बॉलकनी के निर्माण से पश्चिम भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श चौरस है इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

पहली मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से पश्चिम भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। छत में बॉलकनी के निर्माण से दक्षिण भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

दूसरी मंजिल : छत में बॉलकनी के निर्माण से पश्चिम भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे। फर्श में बॉलकनी के निर्माण से दक्षिण भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

तीसरी मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से पश्चिम भाग बढ़ गया है किन्तु छत चौरस है इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

N E W छत S तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क

नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन

ग्राउन्ड फ्लोर : छत में बॉलकनी के निर्माण से उत्तर भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श चौरस है इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

पहली मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से उत्तर भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे। छत में बॉलकनी के निर्माण से पश्चिम भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

दूसरी मंजिल : छत में बॉलकनी के निर्माण से उत्तर भाग बढ़ गया है किन्तु फर्श में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे। फर्श में बॉलकनी के निर्माण से पश्चिम भाग बढ़ गया है किन्तु छत में यह भाग बढ़ा हुआ नहीं है, इससे 50 प्रतिशत अशुभ प्रभाव ही लागू होंगे।

तीसरी मंजिल : फर्श में बॉलकनी के निर्माण से उत्तर भाग बढ़ गया है किन्तु छत चौरस है इससे 50 प्रतिशत शुभ प्रभाव ही मिलेंगे।

E S N छत W तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क

बॉलकनी के निर्माण की विधि

दिशा प्लॉट

दक्षिण / पश्चिम में बॉलकनी / छज्जा बनाने से मुख्य दीवार पर वजन आ जाता है। यह शुभ है। ध्यान रहे कि बॉलकनी / छज्जा भवन के पूरे भाग में ही बनना चाहिए, किसी एक कोने में नहीं।
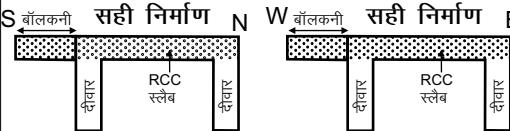
पूर्व / उत्तर / नार्थ–ईस्ट में बॉलकनी / छज्जा बनाने से मुख्य दीवार पर वजन ज्यादा आ जाता है, जिसके गम्भीर अशुभ परिणाम हैं।
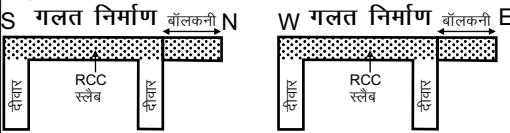
सही निर्माण की विधि
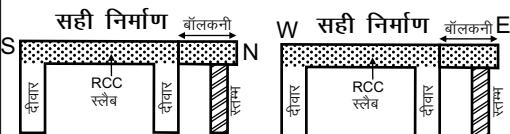
यदि पूर्व / उत्तर की तरफ बॉलकनी / छज्जा बनाना हो तो इसका भार किसी स्तम्भ या दीवार पर ही रहना चाहिए।

विदिशा प्लॉट

साउथ–वेस्ट में बॉलकनी / छज्जा बनाने से मुख्य दीवार पर वजन आ जाता है। यह शुभ है। ध्यान रहे कि बॉलकनी / छज्जा भवन के पूरे भाग में ही बनना चाहिए, किसी एक कोने में नहीं।

नार्थ–ईस्ट / नार्थ–वेस्ट / साउथ–ईस्ट में बॉलकनी / छज्जा बनाने से मुख्य दीवार पर वजन ज्यादा आ जाता है, जिसके गम्भीर अशुभ परिणाम हैं।
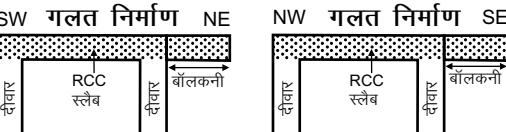
सही निर्माण की विधि

नार्थ–ईस्ट में बॉलकनी / छज्जा बनाते समय यह ध्यान रखें कि इसका भार किसी स्तम्भ या दीवार पर ही रहना चाहिए।

नार्थ–वेस्ट या साउथ–ईस्ट में बॉलकनी / छज्जा का निर्माण भवन के दोनो तरफ करें या किसी भी तरफ न करें। ध्यान रखें कि दोनो तरफ की बॉलकनी की लम्बाई, चौड़ाई व वजन एक ही समान हो।

बिजली के तार व रस्सी के प्रभाव

बिजली का तार या रस्सी जिस दिशा से भवन में जुड़ी होती है वह भाग उतना ही बढ़ जाता है।
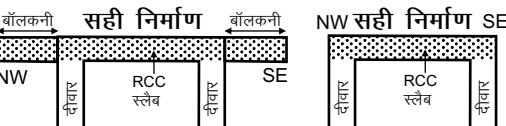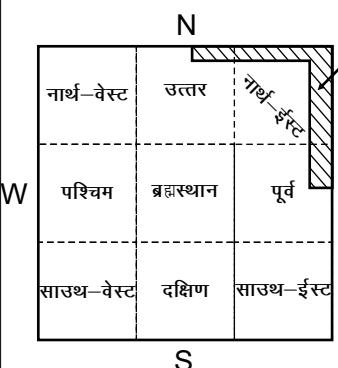
दिशा प्लॉट

यहाँ शेड द्वारा दिखाए गए स्थान में कहीं से भी बिजली का तार या रस्सी छत / बॉलकनी / दीवार से बँधी होने से शुभ प्रभाव प्राप्त होंगे क्योंकि पूर्व, उत्तर व नार्थ–ईस्ट भाग का बढ़ना शुभ है।
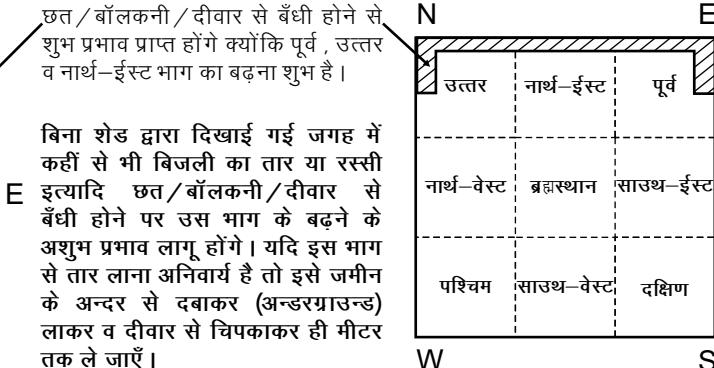
बिना शेड द्वारा दिखाई गई जगह में कहीं से भी बिजली का तार या रस्सी इत्यादि छत / बॉलकनी / दीवार से बँधी होने पर उस भाग के बढ़ने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे। यदि इस भाग से तार लाना अनिवार्य है तो इसे जमीन के अन्दर से दबाकर (अन्डरग्राउन्ड) लाकर व दीवार से चिपकाकर ही मीटर तक ले जाएँ।

विदिशा प्लॉट

भूमि/निर्माण/कमरे में कोना कटना या बढ़ना

कोना कटने या बढ़ने का प्रभाव सभी मंजिलों पर एक समान होगा।

दिशा प्लॉट

उत्तर फेसिंग भूमि/भवन/कमरा

नार्थ–नार्थईस्ट कोना बढ़ने से शुभ प्रभाव होंगे। इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।

नार्थ–नार्थवेस्ट कोना कटने से कोई प्रभाव नहीं होगा।

नार्थ–नार्थवेस्ट कोना बढ़ने से महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

नार्थ–नार्थईस्ट कोना कटने से पूरा परिवार परेशान, महिलाएँ बीमार, धन व मान–सम्मान में कमी और पहली व चौथी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

वेस्ट–साउथवेस्ट कोना बढ़ने से घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें रहेंगी और पुरूषों को समस्याएँ रहेंगी।
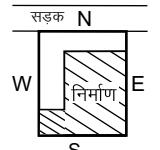
साउथ–साउथवेस्ट कोना बढ़ने से मुख्य महिला, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें रहेंगी और महिलाओं को समस्याएँ रहेंगी।
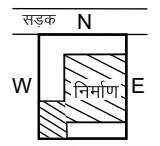
साउथ–वेस्ट कोना बढ़ने से मुख्य महिला, घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें रहेंगी। और महिलाओं व पुरूषों को समस्याएँ रहेंगी।

ईस्ट–साउथईस्ट कोना बढ़ने से पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

साउथ–साउथईस्ट कोना बढ़ने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

साउथ–ईस्ट कोना बढ़ने से महिलाएँ व पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
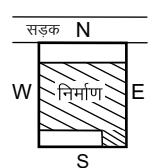
उत्तर भाग में बॉलकनी/निर्माण बढ़ गया है। इससे नार्थ–नार्थवेस्ट व नार्थ–नार्थईस्ट कोने कटने के प्रभाव लागू होंगे। इससे पूरा परिवार परेशान, महिलाएँ बीमार, धन व मान–सम्मान में कमी और पहली व चौथी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। दक्षिण में खुला स्थान होने से निर्माण में यह भाग कट गया है, इससे महिलाएँ बीमार व घर से बाहर रहेंगी।
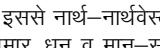
दोष को दूर करने का उपाय :

भवन के बढ़े हुए भाग को चित्र में घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार हल्की सामग्री से कवर करके चौरस करें। कवर करने के लिए हल्की सामग्री जैसे फाईबर या टीन शेड का ही प्रयोग करें। यदि यह संभव न हो तो प्लॉट/भवन/बेडरूम के बढ़े हुए भाग को चित्र में डॉटेड लाईन से दिखाए अनुसार कम से कम 2 फीट ऊँची दीवार खड़ी करके अलग कर दें, इससे इसका आकार चौरस हो जाएगा। दीवार को लाँघकर इस भाग को प्रयोग कर सकते हैं। यह भी संभव न होने पर दीवार को तोड़कर सीधा करें।
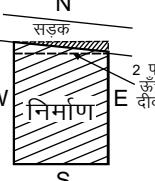
बॉलकनी किसी भी प्रकार की हो नीचे दिखाए अनुसार इसे पूरे भाग में आयताकार ही बनाना जरूरी है। ध्यान रहे कि इसका वजन पिलर पर ही रहना चाहिए। दक्षिण के खुले हुए भाग को शेड द्वारा दिखाए अनुसार समान या भारी सामग्री से कवर करें।

खुले हुए भाग को घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार बने हुए भाग के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान वजनी सामग्री से कवर करने पर ही दोष दूर होंगे। इन भागों को कवर करना जरूरी है।

चित्र 1

बढ़े हुए भाग को तोड़कर हटा दें या **चित्र 1** में दिखाए अनुसार कवर करने से भी दोष दूर हो जाऐंगे।
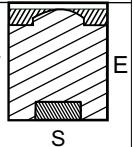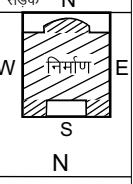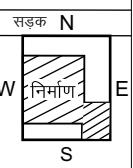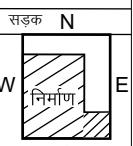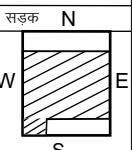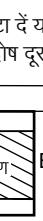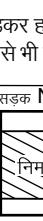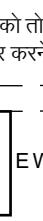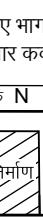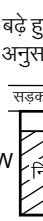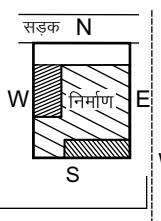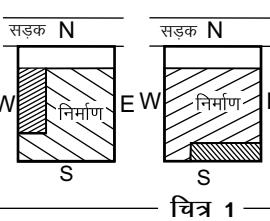
पूर्व फेसिंग भूमि/भवन/कमरा

ईस्ट–नार्थईस्ट कोना बढ़ने से शुभ प्रभाव होंगे। इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, पुरूषों के मान–सम्मान व आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।

ईस्ट–साउथईस्ट कोना कटने से कोई प्रभाव नहीं होगा।

E सड़क N निर्माण S W

E सड़क N निर्माण S W

ईस्ट–साउथईस्ट कोना बढ़ने से अशुभ प्रभाव होंगे। इससे पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

ईस्ट–नार्थईस्ट कोना कटने से गंभीर प्रभाव होंगे। इससे पूरा परिवार परेशान, पुरूष बीमार, मान–सम्मान में कमी, भय और पहली व चौथी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

नार्थ–नार्थवेस्ट कोना बढ़ने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे और पूरा परिवार को समस्याएँ रहेंगी।

E सड़क N निर्माण S W

वेस्ट–नार्थवेस्ट कोना बढ़ने से पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। घर के मुखिया व पहली और पाँचवीं संतान को समस्याएँ रहेंगी।

सड़क E N निर्माण S W

नार्थ–वेस्ट कोना बढ़ने से महिलाएँ व पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे और पूरे परिवार को समस्याएँ रहेंगी।

सड़क E N निर्माण S W
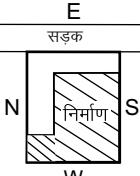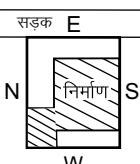
साउथ–साउथवेस्ट कोना बढ़ने से घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें और महिलाएँ बीमार रहेंगी।

सड़क E N निर्माण S W

वेस्ट–साउथवेस्ट कोना बढ़ने से घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें और पुरूष बीमार रहेंगे।

सड़क E N निर्माण S W

साउथ–वेस्ट कोना बढ़ने से घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें और महिलाएँ व पुरूष बीमार रहेंगे। घर की मुख्य महिला बीमार रहेगी।

सड़क E N निर्माण S W

पूर्व भाग में बॉलकनी/निर्माण बढ़ गया है। इससे ईस्ट–नार्थईस्ट व ईस्ट–साउथईस्ट कोने कटने के प्रभाव लागू होंगे। इससे पूरा परिवार परेशान, बीमार, पुरूषों में भय, धन व मान–सम्मान में कमी और पहली व चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। पश्चिम में खुला स्थान होने से निर्माण में यह भाग कट गया है, इससे पुरूष बीमार, बुरी आदतें व घर से बाहर रहेंगे।

सड़क E N निर्माण S W

दोष को दूर करने का उपाय :

भवन के बढ़े हुए भाग को चित्र में घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार हल्की सामग्री से कवर करके चौरस करें। कवर करने के लिए हल्की सामग्री जैसे फाईबर या टीन शेड का ही प्रयोग करें। यदि यह संभव न हो तो चित्र में डॉटेड लाईन से दिखाए अनुसार कम से कम 2 फीट ऊँची दीवार खड़ी करके बढ़े हुए भाग को अलग कर दें। इससे प्लॉट/निर्माण का आकार चौरस हो जाएगा। दीवार को लाँघकर इस भाग को प्रयोग कर सकते हैं।
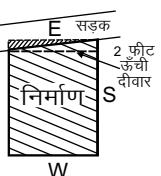
E सड़क 2 फीट ऊँची दीवार N निर्माण S W

बॉलकनी किसी भी प्रकार की हो नीचे दिखाए अनुसार इसे पूरे भाग में आयताकार ही बनाना जरूरी है। ध्यान रहे कि इसका वजन पिलर पर ही रहना चाहिए। दक्षिण के खुले हुए भाग को शेड द्वारा दिखाए अनुसार समान या भारी सामग्री से कवर करें।

सड़क E N निर्माण S W

खुले हुए भाग को घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार बने हुए भाग के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान वजनी सामग्री से कवर करने पर ही दोष दूर होंगे। इन भागों को कवर करना जरूरी है।

सड़क E N निर्माण S W

सड़क E N निर्माण S W

सड़क E N निर्माण S W

चित्र 1

बढ़े हुए भाग को तोड़कर हटा दें या **चित्र 1** में दिखाए अनुसार कवर करने से भी दोष दूर हो जाएंगे।

सड़क E N निर्माण S W

सड़क E N निर्माण S W

सड़क E N निर्माण S W
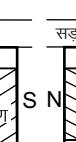
दक्षिण फेसिंग भूमि/भवन/कमरा

साउथ–साउथवेस्ट कोना बढ़ने से अशुभ प्रभाव होंगे। इससे मुख्य महिला, घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

साउथ–साउथईस्ट कोना कटने से महिलाएँ बीमार रहेंगी व उनका स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

S सड़क E निर्माण W N S सड़क E निर्माण W N
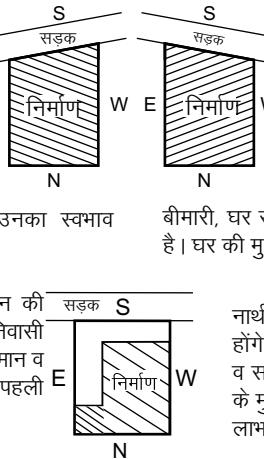
साउथ–साउथईस्ट कोना बढ़ने से अशुभ प्रभाव होंगे। इससे महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

साउथ–साउथवेस्ट कोना कटने से अशुभ प्रभाव होंगे। इससे घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है। घर की मुख्य महिला भी बीमार रहेगी।

ईस्ट–नार्थईस्ट कोना बढ़ने से इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, पुरूषों के मान– सम्मान व आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।

सड़क S E निर्माण W N

नार्थ–नार्थईस्ट कोना बढ़ने से शुभ प्रभाव होंगे। इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।

सड़क S E निर्माण W N

नार्थ–ईस्ट कोना बढ़ने से इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, मान–सम्मान व आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।

सड़क S E निर्माण W N

वेस्ट–नार्थवेस्ट कोना बढ़ने से पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। घर के मुखिया व पहली और पाँचवीं संतान को समस्याएँ रहेंगी।

सड़क S E निर्माण W N

नार्थ–नार्थवेस्ट कोना बढ़ने से पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे और पूरा परिवार बीमार व परेशान रहेगा।

सड़क S E निर्माण W N

नार्थ–वेस्ट कोना बढ़ने से महिलाएँ व पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे और पूरा परिवार बीमार व परेशान, घर के मुखिया व पहली और पाँचवीं संतान को समस्याएँ रहेंगी।

सड़क S E निर्माण W N
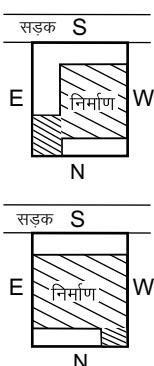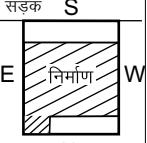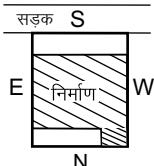
दक्षिण भाग में बॉलकनी/निर्माण बढ़ गया है। इससे साउथ–साउथवेस्ट व साउथ–साउथईस्ट कोने कटने के प्रभाव लागू होंगे। इससे इससे घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना व महिलाएँ बीमार रहेंगी और उनका स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। उत्तर में खुला स्थान होने से निर्माण में यह भाग कट गया है, इससे धन की कमी, महिलाएँ बीमार व उनका स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

सड़क S E निर्माण W N

दोष को दूर करने का उपाय :

चित्रों में डॉटेड लाईन से दिखाए अनुसार कम से कम 2 फीट ऊँची दीवार खड़ी करके अलग कर दें। इससे प्लॉट/निर्माण का आकार चौरस हो जाएगा। दीवार को लाँघकर इस भाग को प्रयोग कर सकते हैं।

S सड़क 2 फीट ऊँची दीवार E निर्माण W N S सड़क 2 फीट ऊँची दीवार E निर्माण W N
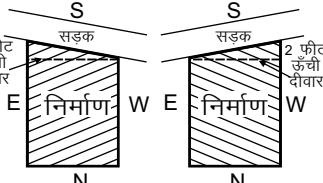
बॉलकनी किसी भी प्रकार की हो नीचे दिखाए अनुसार इसे पूरे भाग में आयताकार ही बनाना जरूरी है। उत्तर के खुले हुए भाग को शेड द्वारा दिखाए अनुसार हल्की या समान सामग्री से कवर करें।
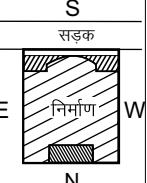
S सड़क E निर्माण W N

खुले हुए भाग को घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार बने हुए भाग के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान वजनी सामग्री से कवर करने पर दोष दूर हो जाएगा।

सड़क S E निर्माण W N सड़क S E निर्माण W N सड़क S E निर्माण W N

यदि इन भागों को कवर करना संभव नहीं है तो बढ़े हुए भाग को दिखाए अनुसार तोड़कर हटा दें।

सड़क S E निर्माण W N सड़क S E निर्माण W N सड़क S E निर्माण W N
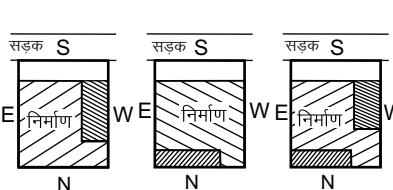
पश्चिम फेसिंग भूमि/भवन/कमरा

वेस्ट–साउथवेस्ट कोना बढ़ने से अशुभ प्रभाव होंगे। इससे घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

वेस्ट–नार्थवेस्ट कोना कटने से पुरूष बीमार रहेंगे व उनका आत्मविश्वास कम होगा।
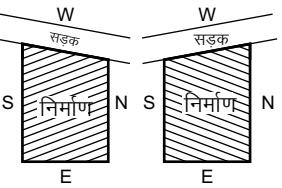
वेस्ट–नार्थवेस्ट कोना बढ़ने से अशुभ प्रभाव होंगे। इससे पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

वेस्ट–साउथवेस्ट कोना कटने से अशुभ प्रभाव होंगे। इससे घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

साउथ–साउथईस्ट कोना बढ़ने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे और मुख्य महिला, पहली व पाँचवीं संतान को समस्याएँ रहेंगी।
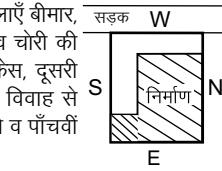
ईस्ट–साउथईस्ट कोना बढ़ने से पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे और पूरा परिवार बीमार व परेशान रहेगा।
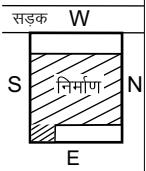
साउथ–ईस्ट कोना बढ़ने से महिलाएँ व पुरुष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, कोर्ट–केस, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे और पूरा परिवार बीमार व परेशान, मुख्य महिला, पहली व पाँचवीं संतान को समस्याएँ रहेंगी।
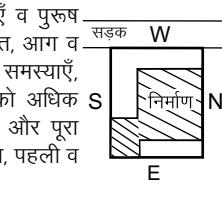
नार्थ–नार्थईस्ट बढ़ने से शुभ प्रभाव होंगे। इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।
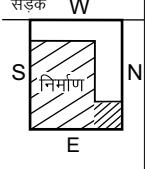
ईस्ट–नार्थईस्ट बढ़ने से इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, पुरूषों के मान– सम्मान व आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।
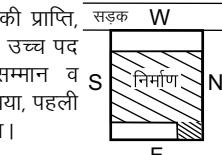
नार्थ–ईस्ट कोना बढ़ने से इससे धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, मान– सम्मान व आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।

पश्चिम भाग में बॉलकनी/निर्माण बढ़ गया है। इससे वेस्ट–साउथवेस्ट व वेस्ट–नार्थवेस्ट कोने कटने के प्रभाव लागू होंगे। इससे इससे घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना व पुरूष बीमार रहेंगे व उनका आत्मविश्वास कम होगा। पूर्व में खुला स्थान होने से निर्माण में यह भाग कट गया है।

दोष को दूर करने का उपाय :

चित्रों में डॉटेड लाईन से दिखाए अनुसार कम से कम 2 फीट ऊँची दीवार खड़ी करके अलग कर दें। इससे प्लॉट/निर्माण का आकार चौरस हो जाएगा। दीवार को लाँघकर इस भाग को प्रयोग कर सकते हैं।

2 फीट ऊँची दीवार
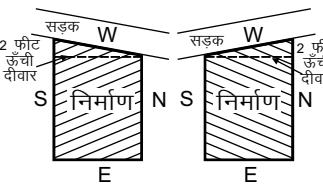
बॉलकनी किसी भी प्रकार की हो नीचे दिखाए अनुसार इसे पूरे भाग में आयताकार ही बनाना जरूरी है। पूर्व के खुले हुए भाग को शेड द्वारा दिखाए अनुसार हल्की या समान सामग्री से कवर करें।

खुले हुए भाग को घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार बने हुए भाग के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान वजनी सामग्री से कवर करने पर दोष दूर हो जाएगा।
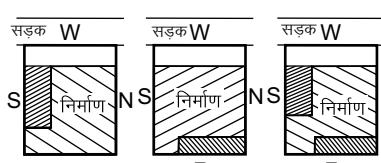
यदि इन भागों को कवर करना संभव नहीं है तो बढ़े हुए भाग को दिखाए अनुसार तोड़कर हटा दें।
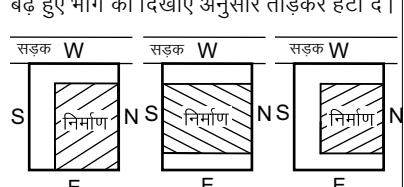
विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट फेसिंग भूमि / भवन / कमरा

पूर्व कोना बढ़ने से पुरूष स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा व पूज्यनीय होगा। पूर्व बढ़ना ईश्वर की विशेष कृपा का प्रतीक है।

उत्तर कोना कटने से महिलाएँ सामान्य रहेंगी।
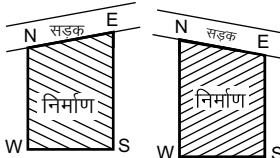
उत्तर कोना बढ़ने से धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा होगा।

पूर्व कोना कटने से पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान में कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना संभव है।

पश्चिम कोना बढ़ने से धन की कमी, घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना व महिलाएँ बीमार और सुस्त रहेंगी।

दक्षिण कोना बढ़ने से घर की धन की कमी, मुख्य महिला, स्त्री संतान व पुरूष बीमार, मान– सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

नार्थ–ईस्ट भाग में बॉलकनी / निर्माण बढ़ गया है। इससे पूर्व व उत्तर कोने कटने के प्रभाव लागू होंगे। पूर्व कटने से पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान में कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना संभव है। उत्तर कटने से धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान कम व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। साउथ–वेस्ट में खुला स्थान होने से निर्माण में यह भाग कट गया है, इससे घर के मुखिया व पहली और पाँचवीं संतान को बीमारी, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी स्वभाव व जेल जाना संभव है।
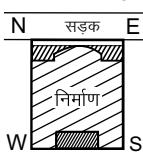
दोष को दूर करने का उपाय :

भवन के बढ़े हुए भाग को चित्र में घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार हल्की सामग्री से कवर करके चौरस करें। कवर करने के लिए हल्की सामग्री जैसे फाईबर या टीन शेड का ही प्रयोग करें।
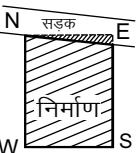
बॉलकनी किसी भी प्रकार की हो नीचे दिखाए अनुसार इसे पूरे भाग में आयताकार ही बनाना जरूरी है। ध्यान रहे कि इसका वजन पिलर पर ही रहना चाहिए।

साउथ–वेस्ट के खुले हुए भाग को शेड द्वारा दिखाए अनुसार समान या भारी सामग्री से कवर जरूरी है।

खुले हुए भाग को घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार बने हुए भाग के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान वजनी सामग्री से कवर करने पर ही दोष दूर होंगे। इन भागों को कवर करना जरूरी है।
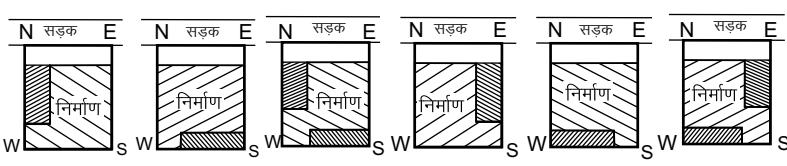
साउथ–वेस्ट फेसिंग भूमि / भवन / कमरा

पश्चिम कोना बढ़ने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें व घर से बाहर रहेंगे।

दक्षिण कोना कटने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।
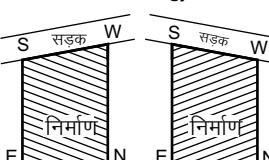
दक्षिण कोना बढ़ने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

पश्चिम कोना कटने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें व घर से बाहर रहेंगे। चिड़चिड़ा होगा।

पूर्व कोना बढ़ने से पुरूष स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा होगा। महिलाएँ सामान्य रहेंगी
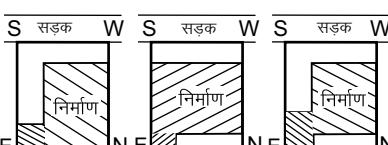
उत्तर कोना बढ़ने से धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ, सुखी, मान– सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा होगा किन्तु पुरूष बीमार और सुस्त रहेंगे।

साउथ–वेस्ट भाग में बॉलकनी / निर्माण बढ़ गया है। इससे दक्षिण व पश्चिम कोने कटने के प्रभाव लागू होंगे। दक्षिण कोना कटने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। पश्चिम कोना कटने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें व घर से बाहर रहेंगे। चिड़चिड़ा होगा। साउथ–वेस्ट बढ़ गया है और नार्थ–ईस्ट में खुला स्थान होने से यह भाग कट गया है, इससे घर के मुखिया व पहली और पाँचवीं संतान को बीमारी, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी स्वभाव व जेल जाना संभव है।

दोष को दूर करने का उपाय :

प्लॉट/निर्माण के बढ़े हुए भाग को तोड़कर चौरस करने से दोष दूर हो जाएगा। यदि यह संभव नहीं है तो चित्रों में डॉटेड लाईन से दिखाए अनुसार कम से कम 2 फीट ऊँची दीवार खड़ी करके अलग कर दें। इससे प्लॉट/निर्माण का आकार चौरस हो जाएगा। दीवार को लाँघकर इस भाग को प्रयोग कर सकते हैं।
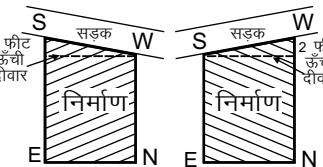
बॉलकनी के बढ़े हुए भाग को तोड़कर सीधा करें। यदि यह संभव नहीं है तो इसे नीचे दिखाए अनुसार पूरे भाग में आयताकार ही बनाना जरूरी है। नार्थ–ईस्ट के खुले हुए भाग को शेड द्वारा दिखाए अनुसार हल्की सामग्री से कवर करना जरूरी है।

खुले हुए भाग को घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार बने हुए भाग के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान वजनी सामग्री से कवर करने पर ही दोष दूर होंगे। इन भागों को कवर करना जरूरी है।

साउथ–ईस्ट फेसिंग भूमि/भवन/कमरा

दक्षिण कोना बढ़ने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

पूर्व कटने से पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान में कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना संभव है।
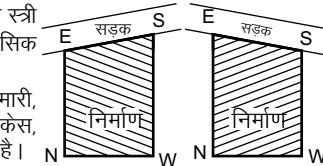
पूर्व कोना बढ़ने से पुरूष स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा होगा।

दक्षिण कोना कटने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

उत्तर कोना बढ़ने से धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ रहेंगी। किन्तु पुरूषों को बीमारी, भय, मान–सम्मान में कमी, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी।
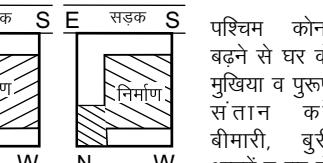
पश्चिम कोना बढ़ने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें व घर से बाहर रहेंगे। महिलाएँ बीमार व सुस्त रहेंगी।
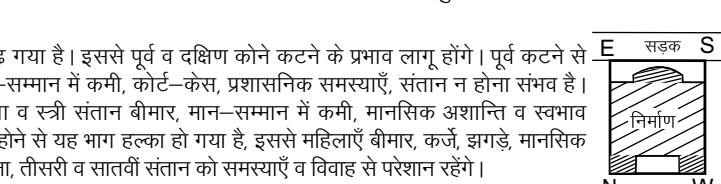
साउथ–ईस्ट भाग में बॉलकनी/निर्माण बढ़ गया है। इससे पूर्व व दक्षिण कोने कटने के प्रभाव लागू होंगे। पूर्व कटने से पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान में कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना संभव है। दक्षिण कोना कटने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। नार्थ–वेस्ट में खुला स्थान होने से यह भाग हल्का हो गया है, इससे महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, प्रशासनिक समस्याएँ, दिवालिया होना, तीसरी व सातवीं संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष को दूर करने का उपाय :

प्लॉट/निर्माण के बढ़े हुए भाग को तोड़कर चौरस करने से दोष दूर हो जाएगा। यदि यह संभव नहीं है तो चित्रों में डॉटेड लाईन से दिखाए अनुसार कम से कम 2 फीट ऊँची दीवार खड़ी करके अलग कर दें। इससे प्लॉट/निर्माण का आकार चौरस हो जाएगा। दीवार को लाँघकर इस भाग को प्रयोग कर सकते हैं।
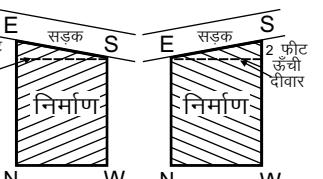
बॉलकनी किसी भी प्रकार की हो नीचे दिखाए अनुसार इसे पूरे भाग में आयताकार ही बनाना जरूरी है। नार्थ–वेस्ट के खुले हुए भाग को शेड द्वारा दिखाए अनुसार समान वजनी सामग्री से कवर करें।
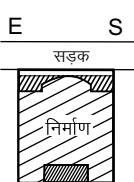
खुले हुए भाग को घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार बने हुए भाग के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान वजनी सामग्री से कवर करने पर ही दोष दूर होंगे। इन भागों को कवर करना जरूरी है।
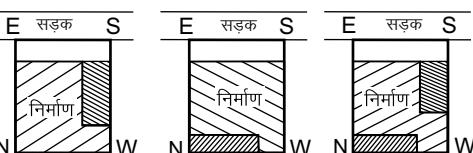
नार्थ–वेस्ट फेसिंग भूमि/भवन/कमरा

उत्तर कोना बढ़ने से धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा होगा।

पश्चिम कोना कटने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें व घर से
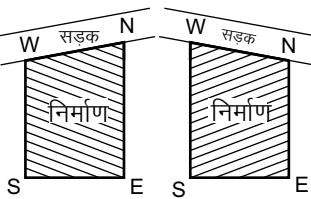
पश्चिम कोना बढ़ने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें व घर से बाहर रहेंगे।

उत्तर कोना कटने से धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

दक्षिण कोना बढ़ने से घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, मानसिक अशान्ति व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। पुरूष बीमार व सुस्त रहेंगे।

पूर्व कोना बढ़ने से पुरूष स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा होगा। महिलाएँ सामान्य रहेंगी।
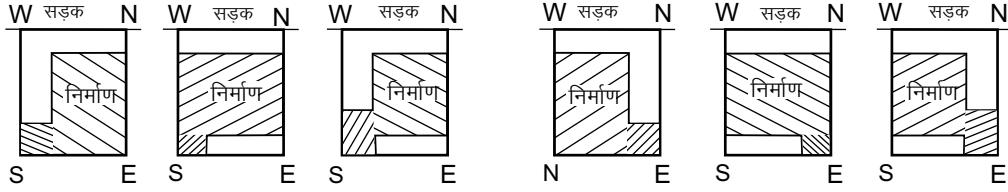
नार्थ–वेस्ट भाग में बॉलकनी/निर्माण बढ़ गया है। इससे उत्तर व पश्चिम कोने कटने के प्रभाव लागू होंगे। उत्तर कोना कटने से धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। पश्चिम कोना कटने से घर के मुखिया व पुरूष संतान को बीमारी, बुरी आदतें व घर से बाहर रहेंगे। साउथ–ईस्ट में खुला स्थान होने से यह भाग हल्का हो गया है, इससे महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष को दूर करने का उपाय :

प्लॉट/निर्माण के बढ़े हुए भाग को तोड़कर चौरस करने से दोष दूर हो जाएगा। यदि यह संभव नहीं है तो चित्रों में डॉटेड लाईन से दिखाए अनुसार कम से कम 2 फीट ऊँची दीवार खड़ी करके अलग कर दें। इससे प्लॉट/निर्माण का आकार चौरस हो जाएगा। दीवार को लाँघकर इस भाग को प्रयोग कर सकते हैं।
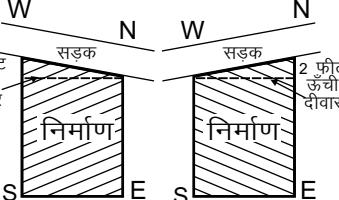
बॉलकनी किसी भी प्रकार की हो नीचे दिखाए अनुसार इसे पूरे भाग में आयताकार ही बनाना जरूरी है। साउथ–ईस्ट के खुले हुए भाग को शेड द्वारा दिखाए अनुसार समान वजनी सामग्री से कवर करें।
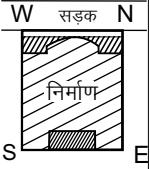
खुले हुए भाग को घने शेड द्वारा दिखाए अनुसार बने हुए भाग के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान वजनी सामग्री से कवर करने पर ही दोष दूर होंगे। इन भागों को कवर करना जरूरी है।
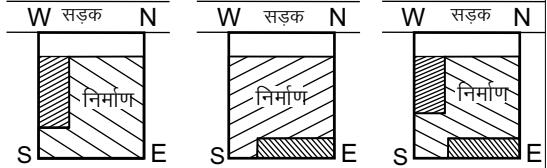
छत की स्लैब के निर्माण की विधि
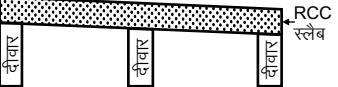
छत की आर.सी.सी. स्लैब का किसी भी दिशा में झुका होने से उस दिशा में वजन अधिक आ जाता है।

पूरे भवन में आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान ही रहना चाहिए।
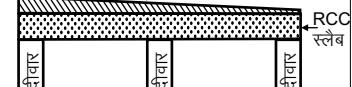
आर.सी.सी. स्लैब का तल एक समान रखते हुए इसके ऊपर फर्श में दिखाए अनुसार ढ़ाल रखें।

छत का कोई एक भाग नीचा होने के प्रभाव

पूर्व , उत्तर व नार्थ–ईस्ट में छत का तल नीचा रखना सर्वश्रेष्ठ है, यदि यह संभव न हो, तो पूरी छत का तल एक समान ही रखें। किसी भी हाल में दक्षिण , पश्चिम और साउथ–वेस्ट में तल नीचा नहीं होना चाहिए। साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट का तल एक बराबर होना चाहिए तथा ढ़ाल साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की ओर ही रखें। यदि किसी भाग में छत का तल 2 फीट से अधिक नीचा हो जाता है तो वह गढ़्ढ़े के रूप में माना जाएगा जिससे शेष भाग ऊँचा हो जाएगा।

शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह

शुभ प्रभाव :
पूर्व , उत्तर व नार्थ–ईस्ट भाग में छत का लेबल नीचा होना श्रेष्ठ है। इससे पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न व स्वस्थ, परिवार की प्रगति, धन की प्राप्ति, व समाज में मान–सम्मान होगा।
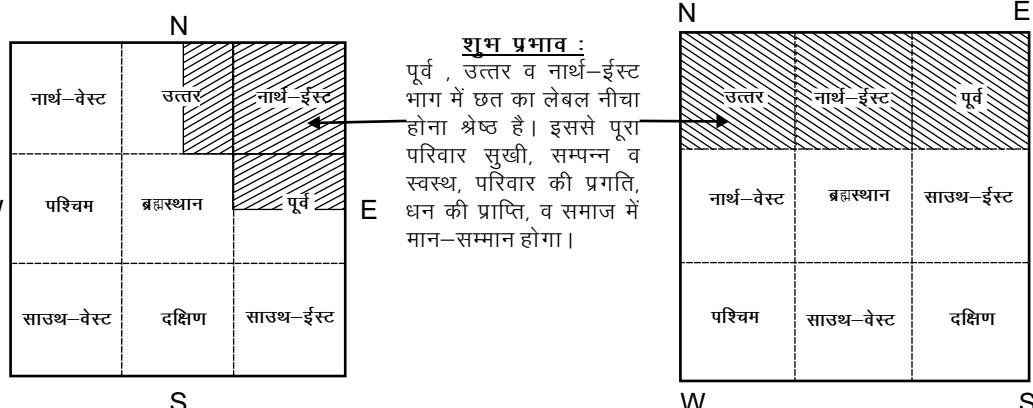
शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में छत का तल नीचा होने के प्रभाव

दिशा प्लॉट

नार्थ–वेस्ट में धन की कमी, महिलाएं बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा व मान–सम्मान कम होगा।

वेस्ट–नार्थ महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

विदिशा प्लॉट

ब्रह्मस्थान में घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

पश्चिम में घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।

ईस्ट–साउथ में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।
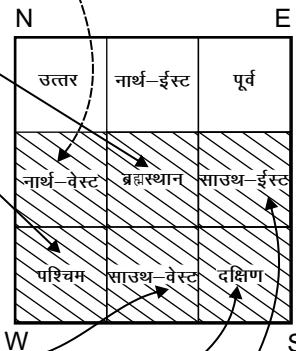
साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

छत का कोई एक भाग ऊँचा होने/ओवरहेड वॉटर टैंक के प्रभाव

दक्षिण, पश्चिम या साउथ–वेस्ट भाग में ही होना चाहिए। किसी भी हाल में पूर्व , उत्तर , नार्थ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में नहीं होना चाहिए।

शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह

दिशा प्लॉट

N

नार्थ–वेस्ट	उत्तर	नार्थ–ईस्ट
पश्चिम	ब्रह्मस्थान	पूर्व
साउथ–वेस्ट	दक्षिण	साउथ–ईस्ट

W E S

विदिशा प्लॉट

N E

उत्तर	नार्थ–ईस्ट	पूर्व
नार्थ–वेस्ट	ब्रह्मस्थान	साउथ–ईस्ट
पश्चिम	साउथ–वेस्ट	दक्षिण

W S

शेड द्वारा दिखाई गई गलत जगह में छत ऊँची होने/ओवरहेड वॉटर टैंक के प्रभाव

दिशा प्लॉट **विदिशा प्लॉट**

नार्थ–वेस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

उत्तर में महिलाएं बीमार व धन की समस्या रहेगी।

नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

N

नार्थ–वेस्ट	उत्तर	नार्थ–ईस्ट
पश्चिम	ब्रह्मस्थान	पूर्व
साउथ–वेस्ट	दक्षिण	साउथ–ईस्ट

W E S

N E

उत्तर	नार्थ–ईस्ट	पूर्व
नार्थ–वेस्ट	ब्रह्मस्थान	साउथ–ईस्ट
पश्चिम	साउथ–वेस्ट	दक्षिण

W S

पूर्व में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, पुरूषों में भय, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया बड़ी संतान को बीमारी, घर से बाहर रहना, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

ब्रह्मस्थान में परिवार में झगड़े, बीमारी व वंश वृद्धि न होना संभव है।

पश्चिम में घर का मुखिया घर से बाहर रहेगा।

साउथ में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।
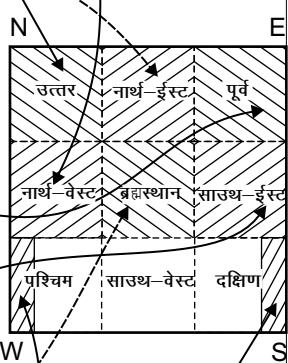
संगीत व वास्तु पुस्तक (PDF) मुफ्त डाउनलोड करें
64
देखें www.dwarkadheeshvatu.com
छत पर निर्माण
छत पर किसी कोने या भाग में निर्माण होने से उससे सम्बन्धित सदस्य पर प्रभाव पड़ता है। निर्माण केवल दक्षिण, पश्चिम या साउथ–वेस्ट भाग में ही होना चाहिए, किसी भी हाल में पूर्व, उत्तर, नार्थ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में नहीं होना चाहिए।
दिशा प्लॉट
शेड द्वारा दिखाई गई सही जगह
विदिशा प्लॉट
N
W
E
S
2
नार्थ–वेस्ट
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पश्चिम
ब्रह्मस्थान
पूर्व
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
साउथ–ईस्ट
1
2
भवन चाहें दिशा हो या विदिशा छत पर निर्माण करते समय यह ध्यान रखें कि प्रथम निर्माण 1 नं0 से शुरू करते हुए नं0 2 की तरफ आयताकार आकार में दिखाई गई जगह में ही कर सकते हैं। ध्यान रहे कि निर्माण आयताकार ही हो और यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।
N
E
उत्तर
नार्थ–ईस्ट
पूर्व
नार्थ–वेस्ट
ब्रह्मस्थान
साउथ–ईस्ट
पश्चिम
साउथ–वेस्ट
दक्षिण
1
2
W
S
दिखाई गई गलत जगह में निर्माण के प्रभाव
दिशा प्लॉट
विदिशा प्लॉट
नार्थ–वेस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
उत्तर में धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान कम व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।
नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
N
E
W
S
पहली मंजिल
ग्राउन्ड फ्लोर
सड़क
पूर्व में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।
ब्रह्मस्थान में घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।
साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया बड़ी संतान को बीमारी व घर से बाहर रहना संभव है।
पश्चिम में घर का मुखिया व बड़ी संतान घर से बाहर रहेंगे।
दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।
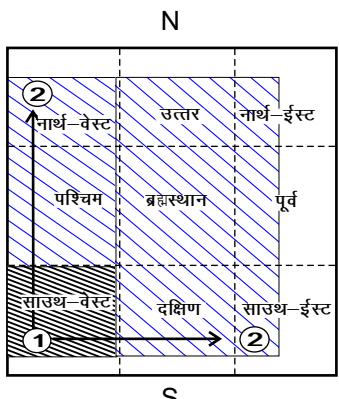
छत पर किसी कोने में निर्माण होने से भवन की सभी मंजिलों के निवासियों पर प्रभाव होता है।

दिशा प्लॉट

साउथ–ईस्ट व साउथ–वेस्ट कोनों में निर्माण के प्रभाव :

1. साउथ–ईस्ट कोने में निर्माण होने से महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
2. साउथ–वेस्ट कोने में निर्माण होने से घर के मुखिया व पहली संतान को गम्भीर बीमारी व घर से बाहर रहना संभव है।

दोष का समाधान:

निर्माण को साउथ–ईस्ट और साउथ–वेस्ट कोने से तीन फीट तोड़कर अलग करें।

या

पूरी छत को समान या हल्की सामग्री से कवर करें।

साउथ–वेस्ट व नार्थ–वेस्ट कोनों में निर्माण के प्रभाव :

1. नार्थ–वेस्ट कोने में निर्माण होने से महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
2. साउथ–वेस्ट कोने में निर्माण होने से घर के मुखिया व पहली संतान को गम्भीर बीमारी व घर से बाहर रहना संभव है।

दोष का समाधान:

निर्माण को नार्थ–वेस्ट और साउथ–वेस्ट कोने से तीन फीट तोड़कर अलग करें।

या

पूरी छत को समान या हल्की सामग्री से कवर करें।
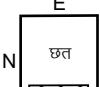
नार्थ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट कोनों में निर्माण के प्रभाव :

1. नार्थ–ईस्ट कोने में निर्माण होने से घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
2. नार्थ–वेस्ट कोने में निर्माण होने से महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान:

निर्माण को उत्तर , पूर्व की दीवार व नार्थ–वेस्ट और नार्थ–ईस्ट कोने से तीन फीट तोड़कर अलग करें।

या

पूरी छत को भारी या समान सामग्री से कवर करें।
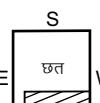
नार्थ–ईस्ट व साउथ–ईस्ट कोनों में निर्माण के प्रभाव :

1. नार्थ–ईस्ट कोने में निर्माण होने से घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
2. साउथ–ईस्ट कोने में निर्माण होने से महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान:

निर्माण को पूर्व , उत्तर की दीवार व साउथ–ईस्ट और नार्थ–ईस्ट कोने से तीन फीट तोड़कर अलग करें।

या

पूरी छत को भारी या समान सामग्री से कवर करें।

विदिशा प्लॉट

साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवार से सटकर निर्माण के प्रभाव :–

1. साउथ–ईस्ट की दीवार से सटने पर कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
2. नार्थ–वेस्ट की दीवार से सटने पर से महिलाएँ मोटी और पैरों में दर्द रहेगा व तीसरी और सातवीं संतान परेशान रहेगी।

दोष का समाधान:

निर्माण को नार्थ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट की दीवार से तीन फीट तोड़कर अलग करें।

या

पूरी छत को समान सामग्री से कवर करें।

नार्थ–वेस्ट व नार्थ–ईस्ट की दीवार से सटकर निर्माण के प्रभाव :–

1. नार्थ–वेस्ट की दीवार से सटने पर महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
2. नार्थ–ईस्ट की दीवार से सटने पर धन की कमी व घर के मुखिया और बड़ी संतान परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान:

निर्माण को नार्थ–वेस्ट और नार्थ–ईस्ट की दीवार से तीन फीट तोड़कर अलग करें।

या

पूरी छत को समान सामग्री से कवर करें।

नार्थ–ईस्ट, साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवार से सटकर निर्माण के प्रभाव :–

1. नार्थ–ईस्ट की दीवार से सटने पर घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
2. साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट की दीवार से सटने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, दिवालिया होना, कोर्ट–केस, और दूसरी, तीसरी, छठी और सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान:

निर्माण को नार्थ–ईस्ट, साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट की दीवार से तीन फीट तोड़कर अलग करें।

या

पूरी छत को समान सामग्री से कवर करें।

साउथ–ईस्ट व नार्थ–ईस्ट की दीवार से सटकर निर्माण के प्रभाव :–

1. साउथ–ईस्ट की दीवार से सटने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
2. नार्थ–ईस्ट की दीवार से सटने पर धन की कमी व घर के मुखिया और बड़ी संतान परेशान रहेंगे।

दोष का समाधान:

निर्माण को नार्थ–वेस्ट और नार्थ–ईस्ट की दीवार से तीन फीट तोड़कर अलग करें।

या
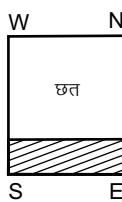
पूरी छत को समान सामग्री से कवर करें।

छत का आकार

नीचे चित्रों में दिखाए अनुसार छत का आकार मंदिर, मंस्जिद, चर्च, छतरी, झोपड़ी, पिरामिड , गुम्बद व गोल किसी भी तरह हो सकता है। इससे कोई वास्तु दोष नहीं होगा। किन्तु ध्यान रहे कि चारो तरफ छत का ढ़ाल एक समान ही होना चाहिए या नार्थ–ईस्ट में अधिक ढ़ाल हो सकता है।
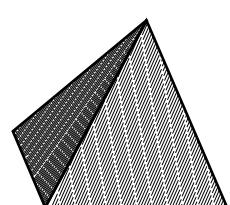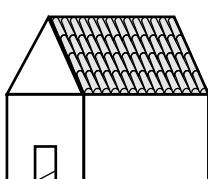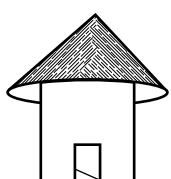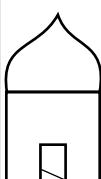
छत पर निर्माण से नीचे की सभी मंजिलों के कमरों पर प्रभाव

दिशा प्लॉट उत्तर फेसिंग भवन

सामने दिखाए गए चित्र में छत पर निर्माण पश्चिम में है। जोकि पूरे भवन के लिए ठीक जगह पर है। छत के नीचे कमरे बने हुए हैं जो डॉटेड लाईन से दिखाए गए हैं। हर कमरे के लिए अलग–अलग वास्तु का आकलन करने पर :–

कमरा 1 : छत पर निर्माण इस कमरे की दक्षिण की दीवार व साउथ–वेस्ट कोने में है। यह शुभ है।

कमरा 2 : छत पर निर्माण इस कमरे की पश्चिम की दीवार पर है, यह शुभ है।

कमरा 3 : छत पर निर्माण इस कमरे की दीवार से दूर है, इससे कोई प्रभाव नहीं होगा।

कमरा 4 : छत पर निर्माण इस कमरे की उत्तर की दीवार व नार्थ–वेस्ट कोने में है। इससे इस कमरे में रहने वाली महिलाएँ बीमार, धन की कमी, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति। यदि इस कमरे में पति–पत्नी रहते हैं तो उनकी तीसरी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

सड़क N W E S कमरा 1 छत पर निर्माण कमरा 2 कमरा 4 कमरा 3

दोष का समाधान :

समाधान 1 : पहले से बने हुए निर्माण से दक्षिण की दीवार तक शेड द्वारा दिखाए अनुसार निर्माण करें। निर्माण की छत के लिए पहले से बने हुए भाग की छत में प्रयोग की गई सामग्री के समान या उससे भारी सामग्री का ही प्रयोग करें। निर्माण साउथ–वेस्ट कोने से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए। निर्माण की छत का वजन रोकने के लिए दक्षिण की दीवार पर पिलर या दीवार खड़ी करें व पहले से बने हुए निर्माण से पिलर तक बीम डालें।

समाधान 2 : छत पर बने हुए निर्माण को छोटा करें जिससे इसका वजन कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों पर न रहे। यदि इस निर्माण की दीवारें कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों से 3 फीट तक दूर हो जाती हैं तो दोष दूर हो जाएगा।

समाधान 1: सड़क N W E S छत छत पर निर्माण छत स्लैब बीम छत पिलर

समाधान 2: सड़क N W E S छत 1 छत पर निर्माण छत 2 छत 4 छत 3
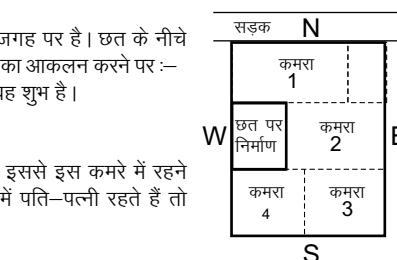
पूर्व फेसिंग भवन

सामने दिखाए गए चित्र में छत पर निर्माण उत्तर की दीवार से 3 फीट दूर है। छत के नीचे कमरे बने हुए हैं जो डॉटेड लाईन से दिखाए गए हैं। हर कमरे के लिए अलग–अलग वास्तु का आकलन करने पर :–

कमरा 1 : छत पर निर्माण इस कमरे की पश्चिम की दीवार पर है, जिससे इस दीवार पर वजन बढ़ जाएगा। यह शुभ है।

कमरा 2 : छत पर निर्माण इस कमरे के उत्तर भाग में है, इससे इस कमरे में महिलाएँ बीमार, स्वभाव चिड़चिड़ा, मान–सम्मान व धन की कमी रहेगी।

कमरा 3 : छत पर निर्माण इस कमरे की दीवार से दूर है, इससे कोई प्रभाव नहीं होगा।

कमरा 4 : छत पर निर्माण इस कमरे की पूर्व की दीवार पर है। इससे इस कमरे में रहने वाले पुरूषों को बीमारी, भय, मान–सम्मान में कमी, प्रशासनिक समस्याएँ व धन की कमी रहेगी।

सड़क E N S W कमरा 1 छत पर निर्माण कमरा 2 कमरा 4 कमरा 3

दोष का समाधान :

समाधान 1 : पहले से बने हुए निर्माण से पश्चिम की दीवार तक शेड द्वारा दिखाए अनुसार निर्माण करें। निर्माण की छत के लिए पहले से बने हुए भाग की छत में प्रयोग की गई सामग्री के समान या उससे भारी सामग्री का ही प्रयोग करें। निर्माण नार्थ–वेस्ट कोने से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए। निर्माण की छत का वजन रोकने के लिए पश्चिम की दीवार पर पिलर या दीवार खड़ी करें व पहले से बने हुए निर्माण से पिलर तक बीम डालें। इससे कमरा नं0 2 के लिए आंशिक दोष रहेंगे।

समाधान 2 : छत पर बने हुए निर्माण को छोटा करें जिससे इसका वजन कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों पर न रहे। यदि इस निर्माण की दीवारें कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों से 3 फीट तक दूर हो जाती हैं तो दोष दूर हो जाएगा। इससे कमरा नं0 2 के लिए आंशिक दोष रहेंगे।

दोष को पूरी तरह से दूर करने के लिए निर्माण को तोड़कर हटा दें।

समाधान 1: सड़क E N S W छत छत पर निर्माण छत स्लैब बीम छत पिलर

समाधान 2: सड़क E N S W छत 1 छत पर निर्माण छत 2 छत 4 छत 3

दक्षिण फेसिंग भवन

सामने दिखाए गए चित्र में छत पर निर्माण पूर्व की दीवार से 3 फीट दूर है। छत के नीचे कमरे बने हुए हैं जो डॉटेड लाईन से दिखाए गए हैं। हर कमरे के लिए अलग–अलग वास्तु का आकलन करने पर :–

कमरा 1 : छत पर निर्माण इस कमरे की उत्तर की दीवार व नार्थ–नार्थवेस्ट भाग में है। इससे इस कमरे में रहने वाली महिलाएँ बीमार, धन की कमी, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति। यदि इस कमरे में पति–पत्नी रहते हैं तो उनकी तीसरी संतान बेटी होने पर उसे समस्याएँ रहेंगी।

कमरा 2 : छत पर निर्माण इस कमरे के पूर्व भाग में है, इससे इस कमरे के पुरूष बीमार, मान–सम्मान में कमी व भय रहेगा।

कमरा 3 : छत पर निर्माण इस कमरे की दीवार से दूर है, इससे कोई प्रभाव नहीं होगा।

कमरा 4 : छत पर निर्माण इस कमरे की दक्षिण दीवार पर है, जिससे इस दीवार पर वजन बढ़ जाएगा। यह शुभ है।
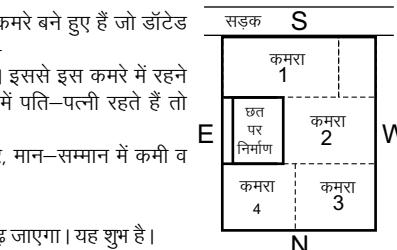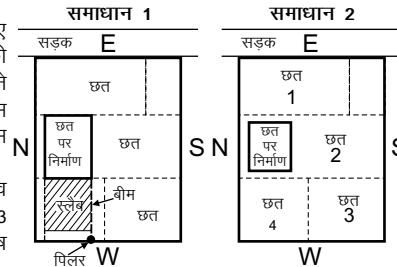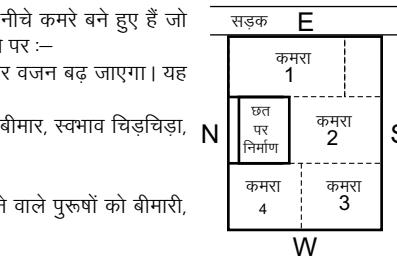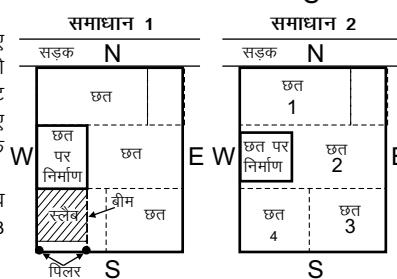
सड़क S E W N कमरा 1 छत पर निर्माण कमरा 2 कमरा 4 कमरा 3

दोष का समाधान :

समाधान 1 : पहले से बने हुए निर्माण से दक्षिण की दीवार तक शेड द्वारा दिखाए अनुसार निर्माण करें। निर्माण की छत के लिए पहले से बने हुए भाग की छत में प्रयोग की गई सामग्री के समान या उससे भारी सामग्री का ही प्रयोग करें। निर्माण साउथ–ईस्ट कोने से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए। निर्माण की छत का वजन रोकने के लिए दक्षिण की दीवार पर पिलर या दीवार खड़ी करें व पहले से बने हुए निर्माण से पिलर तक बीम डालें। इससे कमरा नं0 2 के लिए आंशिक दोष रहेंगे।

समाधान 2 : छत पर बने हुए निर्माण को छोटा करें जिससे इसका वजन कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों पर न रहे। यदि इस निर्माण की दीवारें कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों से 3 फीट तक दूर हो जाती हैं तो दोष दूर हो जाएगा। इससे कमरा नं0 2 के लिए आंशिक दोष रहेंगे।

दोष को पूरी तरह से दूर करने के लिए निर्माण को तोड़कर हटा दें।

समाधान 1: पिलर, S, सड़क, छत, स्लैब, बीम, E, छत पर निर्माण, छत, W, छत, छत, N

समाधान 2: सड़क, S, छत 1, E, छत पर निर्माण, छत 2, W, छत 4, छत 3, N

पश्चिम फेसिंग भवन

सामने दिखाए गए चित्र में छत पर निर्माण दक्षिण की दीवार पर है जोकि पूरे भवन के लिए सही जगह पर है। छत के नीचे कमरे बने हुए हैं जो डॉटेड लाईन से दिखाए गए हैं। हर कमरे के लिए अलग–अलग वास्तु का आकलन करने पर :–

सड़क, W, कमरा 1, S, छत पर निर्माण, कमरा 2, N, कमरा 4, कमरा 3, E

कमरा 1 : छत पर निर्माण इस कमरे की पूर्व की दीवार व साउथ–ईस्ट कोने में है। इससे इस कमरे में रहने वाले पुरुषों को बीमारी, भय, मान–सम्मान में कमी, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग–चोरी की घटनाएँ व प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। यदि इस कमरे में पति–पत्नी रहते हैं तो उनकी दूसरी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ रहेंगी।

कमरा 2 : छत पर निर्माण इस कमरे की दक्षिण की दीवार पर है जिससे इस दीवार पर वजन बढ़ जाएगा। यह शुभ है।

कमरा 3 : छत पर निर्माण इस कमरे की दीवार से दूर है, इससे कोई प्रभाव नहीं होगा।

कमरा 4 : छत पर निर्माण इस कमरे की पश्चिम दीवार पर है,जिससे इस दीवार पर वजन बढ़ जाएगा। यह शुभ है।

दोष का समाधान :

समाधान 1 : पहले से बने हुए निर्माण से पश्चिम की दीवार तक शेड द्वारा दिखाए अनुसार निर्माण करें। निर्माण की छत के लिए पहले से बने हुए भाग की छत में प्रयोग की गई सामग्री के समान या उससे भारी सामग्री का ही प्रयोग करें। निर्माण साउथ–वेस्ट कोने से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए। निर्माण की छत का वजन रोकने के लिए पश्चिम की दीवार पर पिलर या दीवार खड़ी करें व पहले से बने हुए निर्माण से पिलर तक बीम डालें।

पिलर, W, सड़क, स्लैब, बीम, छत, S, छत पर निर्माण, छत, N, छत, छत, E

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट फेसिंग भवन

सामने दिखाए गए चित्र में छत पर निर्माण नार्थ–वेस्ट की दीवार से 3 फीट दूर है। छत के नीचे कमरे बने हुए हैं जो डॉटेड लाईन से दिखाए गए हैं। हर कमरे के लिए अलग–अलग वास्तु का आकलन करने पर :–

N, सड़क, E, कमरा 1, छत पर निर्माण, कमरा 2, W, कमरा 4, कमरा 3, S

कमरा 1 : छत पर निर्माण इस कमरे की साउथ–वेस्ट की दीवार पर है। यह शुभ है।

कमरा 2 : छत पर निर्माण इस कमरे के नार्थ–वेस्ट भाग में है, इससे इस कमरे में महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े व मानसिक अशान्ति रहेगी।

कमरा 3 : छत पर निर्माण इस कमरे की दीवार से दूर है, इससे कोई प्रभाव नहीं होगा।

कमरा 4 : छत पर निर्माण इस कमरे की नार्थ–ईस्ट की दीवार पर है। इस कमरे में महिलाएँ व पुरुष बीमार, मान–सम्मान व धन की कमी व प्रगति नही होगी। यदि इस कमरे को पति–पत्नी प्रयोग कर रहे हैं तो उनकी पहली / पाँचवी संतान को अधिक समस्याएँ रहेंगी।

दोष का समाधान : छत पर बने हुए निर्माण को छोटा करें जिससे इसका वजन कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों पर न रहे। यदि इस निर्माण की दीवारें कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों से 3 फीट तक दूर हो जाती हैं तो दोष दूर हो जाएगा। किन्तु कमरा नं0 2 के लिए आंशिक दोष रहेंगे।

दोष को पूरी तरह से दूर करने के लिए निर्माण को तोड़कर हटा दें।

N, सड़क, E, छत 1, छत पर निर्माण, छत 2, W, छत 4, छत 3, S

साउथ–ईस्ट फेसिंग भवन

सामने दिखाए गए चित्र में छत पर निर्माण नार्थ–ईस्ट की दीवार से 3 फीट दूर है। छत के नीचे कमरे बने हुए हैं जो डॉटेड लाईन से दिखाए गए हैं। हर कमरे के लिए अलग–अलग वास्तु का आकलन करने पर :–

E सड़क S
कमरा 1
छत पर निर्माण
कमरा 2
कमरा 4
कमरा 3
N W

कमरा 1 : छत पर निर्माण इस कमरे की नार्थ–वेस्ट की दीवार पर है। इस कमरे में महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति व प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। यदि इस कमरे को पति–पत्नी प्रयोग कर रहे हैं तो उनकी तीसरी संतान बेटी होने पर उसे समस्याएँ रहेंगी।

कमरा 2 : छत पर निर्माण इस कमरे के नार्थ–ईस्ट भाग में है। इस कमरे में महिलाएँ व पुरूष बीमार, मान–सम्मान व धन की कमी व प्रगति नही होगी।

कमरा 3 : छत पर निर्माण इस कमरे की दीवार से दूर है, इससे कोई प्रभाव नहीं होगा।

कमरा 4 : छत पर निर्माण इस कमरे की साउथ–ईस्ट की दीवार पर है। इस कमरे में महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। यदि इस कमरे को पति–पत्नी प्रयोग कर रहे हैं तो उनकी दूसरी संतान को समस्याएँ रहेंगी।

दोष का समाधान : छत पर बने हुए निर्माण को छोटा करें जिससे इसका वजन कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों पर न रहे। यदि इस निर्माण की दीवारें कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों से 3 फीट तक दूर हो जाती हैं तो दोष दूर हो जाएगा। किन्तु कमरा नं0 2 के लिए आंशिक दोष रहेंगे।

E सड़क S
छत 1
छत पर निर्माण
छत 2
छत 4
छत 3
N W
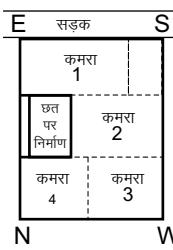
दोष को पूरी तरह से दूर करने के लिए निर्माण को तोड़कर हटा दें।

नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन

सामने दिखाए गए चित्र में छत पर निर्माण नार्थ–वेस्ट की दीवार से 3 फीट दूर है। छत के नीचे कमरे बने हुए हैं जो डॉटेड लाईन से दिखाए गए हैं। हर कमरे के लिए अलग–अलग वास्तु का आकलन करने पर :–

W सड़क N
कमरा 1
छत पर निर्माण
कमरा 2
कमरा 4
कमरा 3
S E

कमरा 1 : छत पर निर्माण इस कमरे की साउथ–ईस्ट की दीवार पर है। इस कमरे में महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। यदि इस कमरे को पति–पत्नी प्रयोग कर रहे हैं तो उनकी दूसरी संतान को समस्याएँ रहेंगी।

कमरा 2 : छत पर निर्माण इस कमरे के साउथ–वेस्ट की दीवार पर है, जिससे इस दीवार पर वजन बढ़ जाएगा। यह शुभ है।

कमरा 3 : छत पर निर्माण इस कमरे की दीवार से दूर है, इससे कोई प्रभाव नहीं होगा।

कमरा 4 : छत पर निर्माण इस कमरे की नार्थ–वेस्ट की दीवार पर है। इस कमरे में महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति व प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी। यदि इस कमरे को पति–पत्नी प्रयोग कर रहे हैं तो उनकी तीसरी संतान बेटी होने पर उसे समस्याएँ रहेंगी।

W सड़क N
छत 1
छत पर निर्माण
छत 2
छत 4
छत 3
S E

दोष का समाधान : छत पर बने हुए निर्माण को छोटा करें जिससे इसका वजन कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों पर न रहे। यदि इस निर्माण की दीवारें कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों से 3 फीट तक दूर हो जाती हैं तो दोष दूर हो जाएगा।

साउथ–वेस्ट फेसिंग भवन

सामने दिखाए गए चित्र में छत पर निर्माण साउथ–ईस्ट की दीवार से 3 फीट दूर है। छत के नीचे कमरे बने हुए हैं जो डॉटेड लाईन से दिखाए गए हैं। हर कमरे के लिए अलग–अलग वास्तु का आकलन करने पर :–

S सड़क W
कमरा 1
छत पर निर्माण
कमरा 2
कमरा 4
कमरा 3
E N

कमरा 1 : छत पर निर्माण इस कमरे की नार्थ–ईस्ट की दीवार पर है। इस कमरे में महिलाएँ व पुरूष बीमार, मान–सम्मान व धन की कमी व प्रगति नही होगी। यदि इस कमरे को पति–पत्नी प्रयोग कर रहे हैं तो उनकी पहली/पाँचवी संतान को अधिक समस्याएँ रहेंगी।

कमरा 2 : छत पर निर्माण इस कमरे के साउथ–ईस्ट भाग में है, इससे इस कमरे की महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ व प्रशासनिक समस्याएँ रहेंगी।

कमरा 3 : छत पर निर्माण इस कमरे की दीवार से दूर है, इससे कोई प्रभाव नहीं होगा।

कमरा 4 : छत पर निर्माण इस कमरे की साउथ–वेस्ट की दीवार पर है। यह शुभ है।

S सड़क W
छत 1
छत पर निर्माण
छत 2
छत 4
छत 3
E N
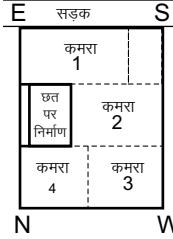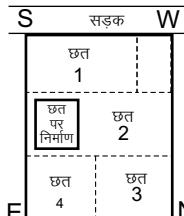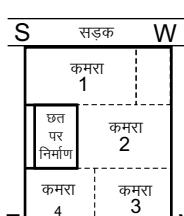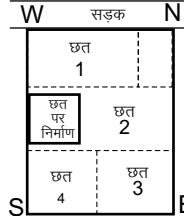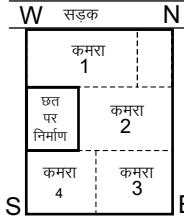
दोष का समाधान : छत पर बने हुए निर्माण को छोटा करें जिससे इसका वजन कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों पर न रहे। यदि इस निर्माण की दीवारें कमरा नं0 1 व 4 की दीवारों से 3 फीट तक दूर हो जाती हैं तो दोष दूर हो जाएगा। किन्तु कमरा नं0 2 के लिए आंशिक दोष रहेंगे।

दोष को पूरी तरह से दूर करने के लिए निर्माण को तोड़कर हटा दें।

भवन/बेडरूम के कोने में निर्माण/गढ्ढे के प्रभाव

निर्माण के प्रभाव

दिशा प्लॉट

नार्थ-वेस्ट कोने में निर्माण होने से निर्माण का वजन उत्तर व पश्चिम दोनों दीवारों पर आएगा। किन्तु पश्चिम की दीवार पर वजन होना वास्तु दोष नहीं है। इसलिए तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे कम समस्याएँ रहेंगी। किन्तु उत्तर की दीवार पर वजन होने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

NNW N NNE WNW ENE W भवन E WSW ESE SSW S SSE

नार्थ-ईस्ट कोने में निर्माण होने से निर्माण का वजन उत्तर व पूर्व दोनों दीवारों पर आएगा। इससे पहली व पाँचवीं संतान बेटा या बेटी कोई भी हो दोनों को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

साउथ-ईस्ट कोने में निर्माण होने से निर्माण का वजन दक्षिण व पूर्व दोनों दीवारों पर आएगा। किन्तु दक्षिण की दीवार पर वजन होना वास्तु दोष नहीं है। इसलिए दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे कम समस्याएँ रहेंगी। किन्तु पूर्व की दीवार पर वजन होने से पुरूष बीमार, भय, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

साउथ-वेस्ट कोने में निर्माण होने से निर्माण का वजन दक्षिण व पश्चिम दोनों दीवारों पर आएगा। दक्षिण व पश्चिम की दीवार पर वजन होना वास्तु दोष नहीं है। किन्तु साउथ-वेस्ट कोने में निर्माण में होने से घर का मुखिया, पहली व चौथी संतान घर से बाहर रहेंगे।

विदिशा प्लॉट

उत्तर कोने में निर्माण होने से वजन नार्थ-ईस्ट व नार्थ-वेस्ट दोनों दीवारों पर आएगा। इससे महिलाओं को वी0पी0 इत्यादि बीमारियाँ, मान-सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। पहली, तीसरी, पाँचवीं व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी और बेटा होने पर आंशिक रूप से परेशान रहेगा।

N E NNE ENE NNW ESE भवन WNW SSE W WSW SSW S
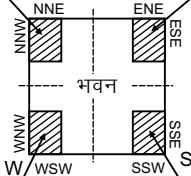
पूर्व कोने में निर्माण होने से वजन नार्थ-ईस्ट व साउथ-ईस्ट दोनों दीवारों पर आएगा। इससे पुरूषों को वी0पी0 इत्यादि बीमारियाँ, भय, मान-सम्मान में कमी, प्रशासनिक समस्याएँ, झगड़े, पहली, दूसरी, पाँचवीं व छठी संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी और बेटी होने पर आंशिक रूप से परेशान रहेगी।

पश्चिम कोने में निर्माण होने से वजन नार्थ-वेस्ट व साउथ-वेस्ट दोनों दीवारों पर आएगा। वेस्ट-नार्थवेस्ट भाग में वजन होने से पुरूष घर से बाहर रहेंगे व घर में मानसिक अशान्ति रहेगी।

वेस्ट-साउथवेस्ट में वजन होना वास्तु दोष नहीं है।

दक्षिण कोने में निर्माण होने से वजन साउथ-ईस्ट व साउथ-वेस्ट दोनों दीवारों पर आएगा। साउथ-साउथईस्ट भाग में वजन होने से दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी और बेटा होने पर आंशिक रूप से परेशान रहेगा।

साउथ-साउथवेस्ट की दीवार पर वजन वास्तु दोष नहीं है।

गढ़्ढे के प्रभाव

दिशा प्लॉट

नार्थ-वेस्ट कोने में गढ़्ढ़ा/तल नीचा होने पर उत्तर की तरफ यह शुभ है इसलिए तीसरी व सातवीं संतान बेटी होने पर उसे कम समस्याएँ रहेंगी। किन्तु पश्चिम की तरफ अशुभ होने से तीसरी व सातवीं संतान बेटा होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

NNW N NNE WNW ENE W भवन E WSW ESE SSW S SSE

नार्थ-ईस्ट कोने में गढ़्ढ़ा/तल नीचा होना शुभ है। इससे पूरा परिवार सुखी और स्वस्थ रहेगा, निवासी उच्च पद पर कार्यरत होंगे व पहली और पाँचवीं संतान को विशेष लाभ मिलेगा।

साउथ-ईस्ट कोने में गढ़्ढ़ा/तल नीचा होने पर पूर्व की तरफ यह शुभ है इसलिए दूसरी व छठी संतान बेटा होने पर उसे कम समस्याएँ रहेंगी। किन्तु दक्षिण की तरफ अशुभ होने से महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, दूसरी व छठी संतान बेटी होने पर उसे अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

साउथ-वेस्ट कोने में गढ़्ढ़ा/तल नीचा होना अशुभ है। इससे घर के मुखिया को बीमारी, बुरी आदतें, जेल जाना, पहली व चौथी संतान बीमार, अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशानी रहेगी।

विदिशा प्लॉट

उत्तर कोने में गढ़्ढ़ा/तल नीचा होना शुभ है। इससे महिलाएँ स्वस्थ व सुखी रहेंगी और धन की प्राप्ति होगी।

N NNE ENE E NNW ESE भवन WNW SSE W WSW SSW S
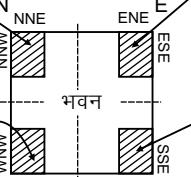
पूर्व कोने में गढ़्ढ़ा/तल नीचा होना शुभ है। इससे पुरूष स्वस्थ व सुखी रहेंगे, मान-सम्मान बढ़ेगा व उच्च पद पर कार्यरत होंगे।

पश्चिम कोने में गढ़्ढ़ा/तल नीचा होने पर पुरूषों को वी0पी0 इत्यादि की बीमारी, बुरी आदतें, जेल जाना, एक्सीडेंट व असमय मृत्यु भी संभव है।

दक्षिण कोने में गढ़्ढ़ा/तल नीचा होने पर महिलाओं को वी0पी0 इत्यादि की बीमारी, मान-सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

पैराफिट वॉल या रैलिंग

नीचे दिए गए नियमों को ध्यान में रखकर ही इसका निर्माण करें।

दिशा प्लॉट

1. छत के फर्श का ढ़ाल साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की ओर ही रखें
2. फर्श का ढ़ाल बनाने के बाद यह ध्यान रखें कि इसके ऊपर दक्षिण और पश्चिम की पैराफिट वॉल की ऊँचाई, उत्तर और पूर्व की पैराफिट वॉल से अधिक होनी चाहिए।
3. पैराफिट वॉल की माप फर्श के तल से ही करें।
4. उत्तर और पूर्व की दीवार पर पैराफिट वॉल की ऊँचाई कम रखें तथा निर्माण में हल्की सामग्री का प्रयोग करें।
5. दक्षिण और पश्चिम की दीवार पर ऊँचाई ज्यादा रखें तथा निर्माण में भारी सामग्री का प्रयोग करें।
6. नार्थ–वेस्ट कोने से नार्थ–ईस्ट कोने तक व साउथ–ईस्ट कोने से नार्थ–ईस्ट कोने तक पैराफिट वॉल का ढ़ाल दिखाए अनुसार ही बनाएँ।
7. उत्तर व पूर्व की दीवार पर तार या काँच के टुकड़े न लगाएँ क्योंकि इससे उत्तर व पूर्व की ओर से आनी वाली उर्जा के लिए यह काँटे का कार्य करते हैं, जोकि शुभ नहीं है।
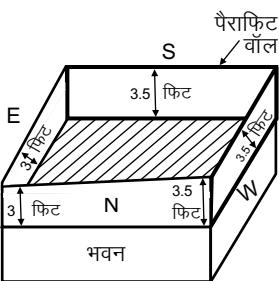
विदिशा प्लॉट
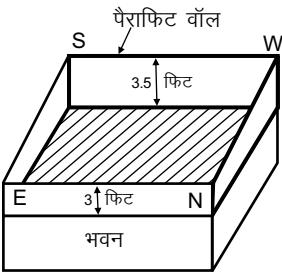
1. छत के फर्श का ढ़ाल साउथ–वेस्ट से नार्थ–ईस्ट की ओर ही रखें।
2. फर्श का ढ़ाल बनाने के बाद यह ध्यान रखें कि इसके ऊपर साउथ–वेस्ट की पैराफिट वॉल की ऊँचाई, नार्थ–ईस्ट की पैराफिट वॉल से अधिक होनी चाहिए।
3. पैराफिट वॉल की माप फर्श के तल से ही करें।
4. नार्थ–ईस्ट की दीवार पर पैराफिट वॉल की ऊँचाई कम रखें तथा निर्माण में हल्की सामग्री का प्रयोग करें।
5. साउथ–वेस्ट की दीवार पर ऊँचाई ज्यादा रखें तथा निर्माण में भारी सामग्री का प्रयोग करें।
6. साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट की दीवार पर पैराफिट वॉल की ऊँचाई एक समान ही होनी चाहिए।
7. दक्षिण कोने से पूर्व कोने और पश्चिम कोने से उत्तर कोने तक पैराफिट को चित्र में दिखाए अनुसार ढ़ालयुक्त बनाएं।
8. नार्थ–ईस्ट की दीवार पर तार या काँच के टुकड़े न लगाएँ। क्योंकि इससे उत्तर व पूर्व की ओर से आनी वाली उर्जा के लिए यह काँटे का कार्य करते हैं, जोकि शुभ नहीं है।

झण्डा/एंटीना/खम्भा/बोर्ड/होर्डिंग के प्रभाव

झण्डा/एंटीना या छत पर किसी भी प्रकार का कोई खम्भा लगाने से उस भाग की ऊँचाई उतनी ही बढ़ जाती है।

दिशा प्लॉट
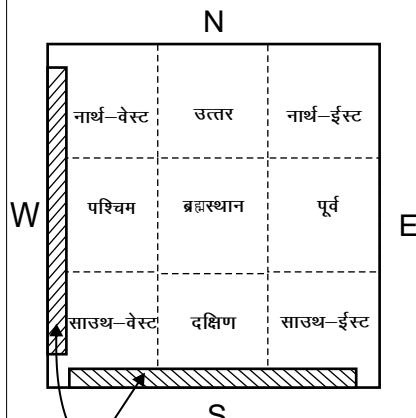
यहाँ शेड द्वारा दिखाए गए स्थान में कहीं भी झण्डा/एंटीना/खम्भा लगा सकते हैं। किन्तु यह कोनों से कम से कम 3 फीट दूर होना चाहिए।
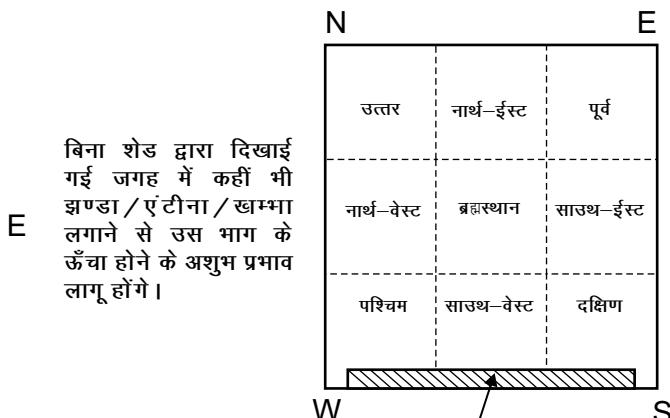
बिना शेड द्वारा दिखाई गई जगह में कहीं भी झण्डा/एंटीना/खम्भा लगाने से उस भाग के ऊँचा होने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

विदिशा प्लॉट

यहाँ शेड् द्वारा दिखाए गए स्थान में कहीं भी झण्डा/एंटीना/खम्भा लगा सकते हैं। किन्तु यह दक्षिण कोने से कम से कम 3 फीट व पश्चिम कोने से 1 फीट दूर होना चाहिए।

भवन/कमरे में सड़क/गैलरी की टक्कर

कुछ सड़क टक्कर शुभ प्रभाव वाली होती हैं और कुछ अशुभ।

दिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट सड़क टक्कर के पूर्णतया शुभ प्रभाव है। इससे महिलाएँ व पुरूष सुखी, सम्पन्न, मान–सम्मान व धन की प्राप्ति व उच्च पद पर कार्यरत होंगे, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ मिलेगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

साउथ–वेस्ट सड़क टक्कर के पूर्णतया अशुभ प्रभाव है। इससे धन की कमी, घर के मुखिया व पहली और पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएंगे।

नार्थ–वेस्ट सड़क टक्कर के पूर्णतया अशुभ प्रभाव है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाऐंगे।
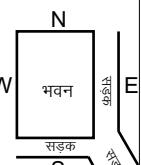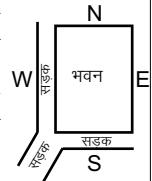
साउथ–ईस्ट सड़क टक्कर के पूर्णतया अशुभ प्रभाव है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाऐंगे।

उत्तर फेसिंग भवन

नार्थ–नार्थईस्ट भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर आधे भाग तक लगना पूर्णतयाः शुभ है। इससे घर की महिलाएँ स्वस्थ, पूज्यनीय व धन–धान्य में बढ़ोत्तरी होगी। परन्तु पुरुष मेहनती व कंजूस होगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।
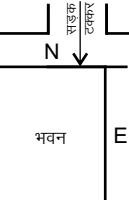
नार्थ–नार्थवेस्ट भाग में एक फीट से लेकर आधे भाग तक सड़क टक्कर लगना पूर्णतयाः अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।
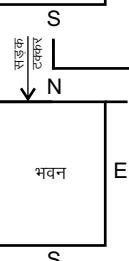
भवन के पूरे भाग में सड़क टक्कर लग रही है। चौड़ाई के बीच से पश्चिम की तरफ सड़क टक्कर नार्थ–नार्थवेस्ट अशुभ है और पूर्व की तरफ लगने वाली सड़क टक्कर नार्थ–नार्थईस्ट शुभ है। इस भवन में अशुभ परिणाम अधिक होंगे। शुभ सड़क टक्कर होने के कारण गुजारे लायक धन आता रहेगा व अशुभ परिणामों में कुछ कमी होगी। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाऐंगे।

पूर्व फेसिंग भवन
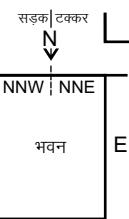
ईस्ट–नार्थईस्ट भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर आधे भाग तक लगना पूर्णतयाः शुभ है, इससे धन की प्राप्ति, परिवार की प्रगति होगी व सुख–शान्ति रहेगी, मान–सम्मान होगा व बड़ी संतान को विशेष लाभ मिलेगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।
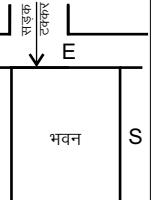
ईस्ट–साउथईस्ट भाग में एक फीट से लेकर आधे भाग तक सड़क टक्कर लगना पूर्णतयाः अशुभ है। इससे पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

भवन के पूरे भाग में सड़क टक्कर लग रही है। चौड़ाई के बीच से दक्षिण की तरफ सड़क टक्कर ईस्ट–साउथईस्ट अशुभ है और पूर्व की तरफ लगने वाली सड़क टक्कर ईस्ट–नार्थईस्ट शुभ है। इस भवन में अशुभ परिणाम अधिक होंगे। शुभ सड़क टक्कर होने के कारण गुजारे लायक धन आता रहेगा व अशुभ परिणामों में कुछ कमी होगी। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाऐंगे।

दोष का समाधान :

अशुभ सड़क टक्कर के सामने दिखाए अनुसार कम से कम 4 इंच मोटी व 8 फीट ऊँची दो दीवारे खड़ी करें, इन दीवारों के बीच में कम से कम 4 इंच की खाली जगह हो। इन दीवारों और मुख्य दीवार के बीच कम से कम चलने योग्य जगह अवश्य छोड़ें। मुख्यद्वार को दिखाई गई जगह में ही बनाएँ।
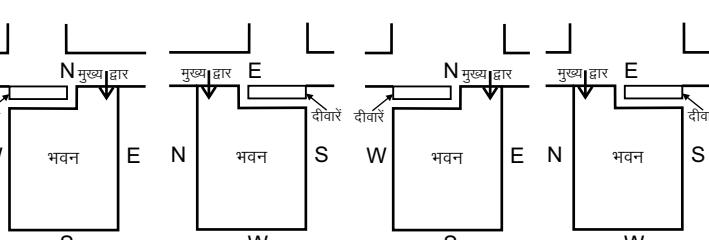
दक्षिण फेसिंग भवन

साउथ–साउथईस्ट भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 33 प्रतिशत भाग तक लगना शुभ है। इससे घर की महिला व स्त्री संतान स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में वृद्वि व स्वभाव अच्छा होगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।
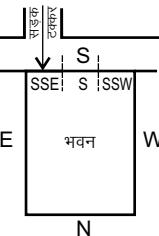
साउथ–साउथवेस्ट भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 67 प्रतिशत भाग तक लगना अशुभ है। इससे घर के मुखिया, मुख्य महिला व पहली और पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएँगे।
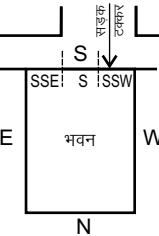
भवन के पूरे भाग में सड़क टक्कर लग रही है। चौड़ाई के तीन भाग करने पर साउथ–साउथईस्ट सड़क टक्कर शुभ है और दक्षिण व साउथ–साउथवेस्ट सड़क टक्कर अशुभ है। इस भवन में अशुभ परिणाम अधिक होंगे। शुभ सड़क टक्कर के कारण अशुभ परिणामों में कुछ कमी आएगी। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएंगे।
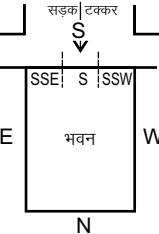
पश्चिम फेसिंग भवन

वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 33 प्रतिशत भाग तक लगना शुभ है। इससे घर के पुरुष प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत, समाज में मान–सम्मान, नेता बनना व पुरुषों का वर्चस्व संभव है। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।

वेस्ट–साउथवेस्ट भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 67 प्रतिशत भाग तक लगना अशुभ है। इससे घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएँगे।

भवन के पूरे भाग में सड़क टक्कर लग रही है। चौड़ाई के तीन भाग करने पर वेस्ट–नार्थवेस्ट सड़क टक्कर शुभ है और पश्चिम व वेस्ट–साउथवेस्ट सड़क टक्कर अशुभ है। इस भवन में अशुभ परिणाम अधिक होंगे। शुभ सड़क टक्कर होने के कारण अशुभ परिणामों में थोड़ी कमी आएगी। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएंगे।

दोष का समाधान :

अशुभ सड़क टक्कर के सामने दिखाए अनुसार अपने प्लॉट में आगे की तरफ कम से कम 4 फीट खाली जगह छोड़कर, इसके पश्चात मुख्य दीवार व द्वार बनाएँ। छोड़ी हुई जगह में अशुभ सड़क टक्कर के सामने कम से कम 4 इंच मोटी व 8 फीट ऊँची दो दीवारे खड़ी करें, इन दीवारों के बीच में कम से कम 4 इंच की खाली जगह हो। इन दीवारों और मुख्य दीवार के बीच कम से कम चलने योग्य जगह अवश्य छोड़ें। मुख्यद्वार को दिखाई गई जगह में ही बनाएँ।
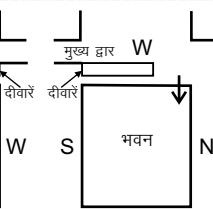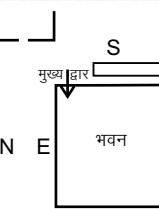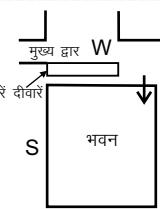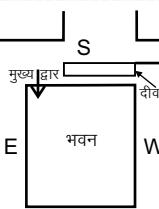
विदिशा प्लॉट

पूर्व सड़क टक्कर के पूर्णतया शुभ प्रभाव है। इससे पुरुष सुखी, स्वस्थ, मान–सम्मान व धन की प्राप्ति व उच्च पद पर कार्यरत होंगे। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

पश्चिम सड़क टक्कर के पूर्णतया अशुभ प्रभाव है। इससे घर के मुखिया व पुरुष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएंगे।
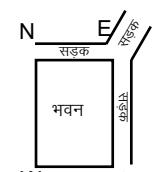
उत्तर सड़क टक्कर के पूर्णतया शुभ प्रभाव है। इससे धन की प्राप्ति, महिलाएं स्वस्थ और सुखी रहेंगी और उनका स्वभाव अच्छा होगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

दक्षिण सड़क टक्कर के पूर्णतया अशुभ प्रभाव है। इससे मुख्य महिला व स्त्री संतान बीमार, मानसिक अशान्ति, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएँगे।

नार्थ–ईस्ट फेसिंग भवन

भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर पूर्व भाग में सड़क टक्कर के पूर्णतयाः शुभ प्रभाव है। इससे पुरुष स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान व आय में बृद्धि, उच्च पद पर कार्यरत होंगे व स्वभाव अच्छा होगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर उत्तर भाग में सड़क टक्कर के पूर्णतयाः शुभ प्रभाव हैं। इससे धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ, सुखी और स्वभाव अच्छा होगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

भवन के पूरे नार्थ–ईस्ट भाग में सड़क टक्कर के पूर्णतया शुभ प्रभाव हैं। इससे पूरा परिवार स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बृद्धि व धन की प्राप्ति होगी। निवासी बुद्बिमान व मेहनती होंगे और पहली व चौथी संतान को विशेष लाभ मिलेगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

साउथ–ईस्ट फेसिंग भवन

भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर पूर्व भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 33 प्रतिशत तक लगना शुभ है। इससे पुरुष स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान व आय में बृद्धि, उच्च पद पर कार्यरत होंगे व स्वभाव अच्छा होगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर साउथ–ईस्ट और दक्षिण भाग में सड़क टक्कर एक फीट से 67 प्रतिशत तक लगना अशुभ है। इससे महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

भवन के पूरे भाग में सड़क टक्कर लग रही है। चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर पूर्व भाग में सड़क टक्कर के शुभ प्रभाव हैं किन्तु साउथ–ईस्ट और दक्षिण भाग में सड़क टक्कर के अशुभ प्रभाव हैं। इस भवन में अशुभ प्रभाव अधिक होगें। शुभ सड़क टक्कर के कारण अशुभ प्रभावों में कमी आएगी। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

दोष का समाधान :

अशुभ सड़क टक्कर के सामने दिखाए अनुसार कम से कम 4 इंच मोटी व 8 फीट ऊँची दो दीवारे खड़ी करें, इन दीवारों के बीच में कम से कम 4 इंच की खाली जगह हो। इन दीवारों और मुख्य दीवार के बीच कम से कम चलने योग्य जगह अवश्य छोड़ें। मुख्यद्वार को दिखाई गई जगह में ही बनाएँ।

साउथ–वेस्ट फेसिंग भवन

भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर दक्षिण भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 33 प्रतिशत तक शुभ है। इससे महिलाएँ व स्त्री संतान स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में वृद्वि व स्वभाव विनम्र होगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव बढ़ जाएँगे।

भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर पश्चिम व साउथ–वेस्ट भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 67 प्रतिशत तक अशुभ हैं। इससे घर का मुखिया, पुरुष, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी स्वभाव व जेल जाना संभव है। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएँगे।

नार्थ–वेस्ट फेसिंग भवन

भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर उत्तर भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 33 प्रतिशत तक शुभ है। इससे धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ, सुखी और स्वभाव अच्छा होगा। इसमें बेसमेंट होने पर शुभ प्रभाव नहीं मिलेंगे बल्कि अत्यधिक अशुभ प्रभाव लागू होंगे।

भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर नार्थ–वेस्ट और पश्चिम भाग में सड़क टक्कर एक फीट से लेकर 67 प्रतिशत तक लगना अशुभ है। इससे महिलाएँ व पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

भवन के पूरे भाग में सड़क टक्कर लग रही है। चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर दक्षिण भाग में सड़क टक्कर के शुभ प्रभाव हैं किन्तु साउथ–वेस्ट और पश्चिम भाग में सड़क टक्कर के अशुभ प्रभाव हैं। इस भवन में अशुभ प्रभाव अधिक होगें। शुभ सड़क टक्कर के कारण अशुभ प्रभावों में कमी आएगी। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव काफी कम हो जाएँगे।

सड़क टक्कर
S W
S SW W
भवन
E N
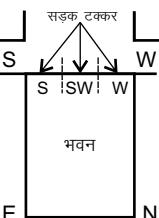
भवन के पूरे भाग में सड़क टक्कर लग रही है। चौड़ाई भवन की चौड़ाई के तीन बराबर भाग करने पर उत्तर भाग में सड़क टक्कर के शुभ प्रभाव हैं किन्तु नार्थ–वेस्ट और पश्चिम भाग में सड़क टक्कर के अशुभ प्रभाव हैं। इस भवन में अशुभ प्रभाव अधिक होगें। शुभ सड़क टक्कर के कारण अशुभ प्रभावों में कुछ कमी आएगी। इसमें बेसमेंट होने पर अशुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे।

सड़क टक्कर
W N
W NW N
भवन
S E

दोष का समाधान :

अशुभ सड़क टक्कर के सामने दिखाए अनुसार अपने प्लॉट में आगे की तरफ कम से कम 4 फीट खाली जगह छोड़कर, इसके पश्चात मुख्य दीवार व द्वार बनाएँ । छोड़ी हुई जगह में अशुभ सड़क टक्कर के सामने कम से कम 4 इंच मोटी व 8 फीट ऊँची दो दीवारे खड़ी करें, इन दीवारों के बीच में कम से कम 4 इंच की खाली जगह हो। इन दीवारों और मुख्य दीवार के बीच कम से कम चलने योग्य जगह अवश्य छोड़ें। मुख्यद्वार को दिखाई गई जगह में ही बनाएँ।

S दीवारें W, मुख्य द्वार, भवन, E N
S दीवारें W, मुख्य द्वार, भवन, E N
W दीवारें N, मुख्य द्वार, भवन, S E
W दीवारें N, मुख्य द्वार, भवन, S E
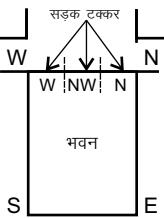
आस–पड़ोस के भवनों/कमरों में बेसमेंट/गढ़्ढ़े का प्रभाव

आस–पड़ोस के भवनों/कमरों में बेसमेंट होने पर इसके गम्भीर प्रभाव होंगे।

दिशा प्लॉट

भवन नं0 3 :

1. उत्तर और पश्चिम में सड़क व दक्षिण और पूर्व में अन्य निवास हैं।
2. पूर्व के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे पुरूष स्वस्थ और सुखी, उच्च पद पर कार्यरत होंगे व मान–सम्मान बढ़ेगा।
3. दक्षिण के भवन में बेसमेंट अशुभ है। इससे महिला व स्त्री संतान बीमार, मानसिक अशान्ति, मान–सम्मान कम व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

भवन नं0 2 :

1. उत्तर में सड़क है। पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में अन्य निवास हैं।
2. पूर्व के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे पुरूष स्वस्थ और सुखी, उच्च पद पर कार्यरत होंगे व मान–सम्मान बढ़ेगा।
3. पश्चिम के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।
4. दक्षिण के भवन में बेसमेंट अशुभ है। इससे महिला व स्त्री संतान बीमार, मानसिक अशान्ति, मान–सम्मान कम व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

भवन नं0 1 :

1. उत्तर और पूर्व में सड़क है व पश्चिम और दक्षिण में अन्य निवास हैं।
2. पश्चिम के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।
3. दक्षिण के भवन में बेसमेंट अशुभ है। इससे महिला व स्त्री संतान बीमार, मानसिक अशान्ति, मान–सम्मान कम व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

N
सड़क
भवन नं. 3 | भवन नं. 2 | भवन नं. 1
W सड़क | सड़क E
भवन नं. 6 | भवन नं. 5 | भवन नं. 4
सड़क
S

भवन नं0 6 :

1. दक्षिण और पश्चिम में सड़क व उत्तर और पूर्व में अन्य निवास हैं।
2. पूर्व के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे पुरूष स्वस्थ और सुखी, उच्च पद पर कार्यरत होंगे व मान–सम्मान बढ़ेगा।
3. उत्तर के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे धन की प्राप्ति, महिलाएं स्वस्थ व सुखी, स्वभाव निर्मल होगा व मान–सम्मान बढ़ेगा।

भवन नं0 4 :
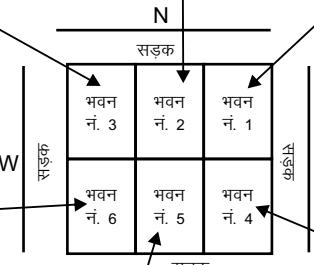
1. पूर्व और दक्षिण में सड़क है व उत्तर और पश्चिम में अन्य निवास हैं।
2. उत्तर के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे धन की प्राप्ति, महिलाएं स्वस्थ व सुखी, स्वभाव निर्मल, मान–सम्मान बढ़ेगा व मानसिक शान्ति रहेगी।
3. पश्चिम के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

भवन नं0 5 :

1. दक्षिण में सड़क है। पूर्व , उत्तर और पश्चिम में अन्य निवास हैं।
2. पूर्व के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे पुरूष स्वस्थ और सुखी, उच्च पद पर कार्यरत होंगे व मान–सम्मान बढ़ेगा।
3. उत्तर के भवन में बेसमेंट शुभ है। इससे धन की प्राप्ति, महिलाएं स्वस्थ व सुखी, स्वभाव निर्मल, मान–सम्मान बढ़ेगा व मानसिक शान्ति रहेगी।
4. पश्चिम के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना व जेल जाना संभव है।

दोष का समाधान

भवन नं0 3 :
दक्षिण के भवन में बेसमेंट होने पर इस भवन के शेड द्वारा दिखाए गए 1/6वें भाग नार्थ–ईस्ट कोने में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना अति आवश्यक है। इससे दोष का प्रभाव काफी कम हो जाएगा। बेसमेंट/अन्डरग्राउन्ड टैंक को कोने से एक फीट दूर ही बनाएँ।

भवन नं0 6 :
इस भवन के पूरे भाग में बेसमेंट का निर्माण अतिआवश्यक है। यदि यह संभव नहीं है तो शेड द्वारा दिखाए गए 1/6वें नार्थ–ईस्ट भाग में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना जरूरी है। बेसमेंट/अन्डरग्राउन्ड टैंक को कोने से एक फीट दूर ही बनाएँ।

सड़क N
भवन नं. 3 | भवन नं. 2 | भवन नं. 1
W सड़क | E सड़क
भवन नं. 6 | भवन नं. 5 | भवन नं. 4
सड़क S

भवन नं0 1 व 2 :
दक्षिण, पश्चिम या साउथ–वेस्ट के भवनों में बेसमेंट होने पर इस भवन के शेड द्वारा दिखाए गए 1/6वें नार्थ–ईस्ट कोने में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना अति आवश्यक है। इससे दोष का प्रभाव काफी कम हो जाएगा। बेसमेंट/अन्डरग्राउन्ड टैंक को कोने से एक फीट दूर ही बनाएँ।

भवन नं0 4 व 5 :
पश्चिम के भवन में बेसमेंट होने पर इस भवन के शेड द्वारा दिखाए गए 1/6वें नार्थ–ईस्ट कोने में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना अति आवश्यक है। इससे दोष का प्रभाव काफी कम हो जाएगा। बेसमेंट/अन्डरग्राउन्ड टैंक को कोने से एक फीट दूर ही बनाएँ।

विदिशा प्लॉट

भवन नं0 3 :
1. नार्थ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट में सड़क व साउथ–ईस्ट और साउथ–वेस्ट में अन्य निवास हैं।
2. साउथ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
3. साउथ–वेस्ट के भवन में बेसमेंट अशुभ है। इससे घर के मुखिया व पहली संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

भवन नं0 2 :
1. नार्थ–ईस्ट में सड़क है व साउथ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट और साउथ–वेस्ट में अन्य निवास हैं।
2. साउथ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
3. नार्थ–वेस्ट के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
4. साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट दोनो तरफ के भवनों में बेसमेंट होने पर वास्तु दोष नहीं होगा।
5. साउथ–वेस्ट के भवन में बेसमेंट अशुभ है। इससे घर के मुखिया व पहली संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

भवन नं0 1 :
1. नार्थ–ईस्ट और साउथ–ईस्ट में सड़क व नार्थ–वेस्ट और साउथ–वेस्ट में अन्य निवास हैं।
2. नार्थ–वेस्ट के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
3. साउथ–वेस्ट के भवन में बेसमेंट अशुभ है। इससे घर के मुखिया व पहली संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

भवन नं0 6 :
1. नार्थ–वेस्ट और साउथ–वेस्ट में सड़क व साउथ–ईस्ट और नार्थ–ईस्ट में अन्य निवास हैं।
2. साउथ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
3. नार्थ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न, प्रगतिशील, निवासी चतुर और बुद्धिमान तथा उच्च पद पर कार्यरत होंगे व पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ मिलेगा।

N सड़क E
भवन नं. 3 | भवन नं. 2 | भवन नं. 1
सड़क | सड़क
भवन नं. 6 | भवन नं. 5 | भवन नं. 4
W सड़क S

भवन नं0 4 :
1. साउथ–ईस्ट साउथ–वेस्ट में सड़क व नार्थ–वेस्ट और नार्थ–ईस्ट में अन्य निवास हैं।
2. नार्थ–वेस्ट के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
3. नार्थ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न, प्रगतिशील, निवासी चतुर और बुद्धिमान तथा उच्च पद पर कार्यरत होंगे व पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ मिलेगा।

भवन नं0 5 :
1. साउथ–वेस्ट में सड़क है व साउथ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट और नार्थ–ईस्ट में अन्य निवास हैं।
2. साउथ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
3. नार्थ–वेस्ट के भवन में बेसमेंट होना अशुभ है। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
4. साउथ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट दोनो तरफ के भवनों में बेसमेंट होने पर वास्तु दोष नहीं होगा।
5. नार्थ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होना शुभ है। इससे पूरा परिवार सुखी, सम्पन्न, प्रगतिशील, निवासी चतुर और बुद्धिमान तथा उच्च पद पर कार्यरत होंगे व पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ मिलेगा।

दोष का समाधान :

भवन नं0 3 :
साउथ–वेस्ट या साउथ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होने पर इस भवन के शेड द्वारा दिखाए गए 1/6वें नार्थ–ईस्ट भाग में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना जरूरी है। इससे दोष का प्रभाव काफी कम हो जाएगा।

भवन नं0 2 :
साउथ–वेस्ट, नार्थ–वेस्ट या साउथ–ईस्ट के भवन में बेसमेंट होने पर इस भवन के शेड द्वारा दिखाए गए 1/6वें नार्थ–ईस्ट भाग में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना जरूरी है। इससे दोष का प्रभाव काफी कम हो जाएगा।
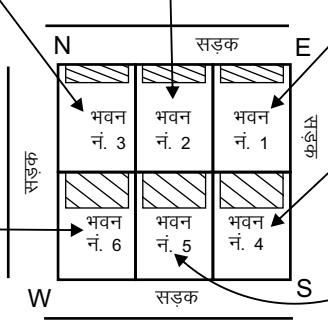
भवन नं0 1 :
साउथ–वेस्ट या नार्थ–वेस्ट के भवन में बेसमेंट होने पर इस भवन के शेड द्वारा दिखाए गए 1/6वें नार्थ–ईस्ट भाग में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना जरूरी है। इससे दोष का प्रभाव काफी कम हो जाएगा।

भवन नं0 6 :
इस भवन के पूरे भाग में बेसमेंट का निर्माण अतिआवश्यक है। यदि यह संभव नहीं है तो शेड द्वारा दिखाए गए 1/3वें नार्थ–ईस्ट भाग में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना जरूरी है।

भवन नं0 4 :
इस भवन के पूरे भाग में बेसमेंट का निर्माण अतिआवश्यक है। यदि यह संभव नहीं है तो शेड द्वारा दिखाए गए 1/3वें नार्थ–ईस्ट भाग में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना जरूरी है।

भवन नं0 5 :
इस भवन के पूरे भाग में बेसमेंट का निर्माण अतिआवश्यक है। यदि यह संभव नहीं है तो शेड द्वारा दिखाए गए 1/3वें नार्थ–ईस्ट भाग में बेसमेंट या अन्डरग्राउन्ड वॉटर टैंक बनाना जरूरी है।

आस–पड़ोस के भवनों/कमरों का प्रभाव

दिशा प्लॉट

ऊर्जा का प्रवाह सदैव उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम की ओर होता है। उत्तर और पूर्व में अन्य भवन/कमरे होने से इनसे ऊर्जा की प्राप्ति होगी, जिससे गम्भीर दोषों का प्रभाव आंशिक हो जाएगा।

भवन नं0 3 :
उत्तर और पश्चिम में सड़क व दक्षिण और पूर्व में अन्य निवास हैं। पूर्व में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है किन्तु दक्षिण में अन्य निवास होने से ऊर्जा वहाँ जा भी रही है। इसलिए दोषों का प्रभाव सामान्य रहेगा। इस घर में निवासी उच्च पद पर कार्यरत होंगे व उच्च नेता बनेंगे।

भवन नं0 2 :
उत्तर में सड़क व दक्षिण, पश्चिम और पूर्व में अन्य निवास हैं। पूर्व में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है किन्तु पश्चिम व दक्षिण में अन्य निवास होने से इस भवन की ऊर्जा वहाँ जा भी रही है। इसलिए वास्तु दोषों का प्रभाव सामान्य रहेगा।

भवन नं0 1 :
उत्तर और पूर्व में सड़क है व पश्चिम और दक्षिण में अन्य निवास हैं। पूर्व और उत्तर में अन्य निवास न होने से ऊर्जा की प्राप्ति नहीं हो रही है किन्तु दक्षिण और पश्चिम में अन्य निवास होने से ऊर्जा उन भवनों में जा रही है। इसलिए छोटे दोषों का प्रभाव भी गम्भीर रहेगा। इस भवन में निवासी चतुर, मेहनती व उच्च पद पर कार्यरत होंगे।

भवन नं0 6 :
पश्चिम और दक्षिण में सड़क व पूर्व और उत्तर में अन्य अन्य निवास है। उत्तर व पूर्व में अन्य निवास होने से ऊर्जा मिल रही है और दक्षिण और पश्चिम में अन्य निवास न होने से ऊर्जा कहीं नहीं जा रही है। इसलिए गम्भीर वास्तु दोषों का प्रभाव भी काफी कम रहेगा। इस घर के निवासी दम्भी और आलसी होंगे किन्तु इन्हें कम मेहनत करने पर भी अच्छे फल की प्राप्ति होगी।
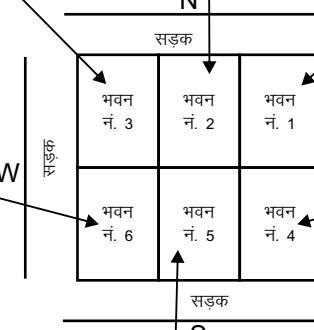
भवन नं0 4 :
पूर्व और दक्षिण में सड़क व उत्तर और पश्चिम में अन्य निवास है। उत्तर में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है किन्तु पश्चिम में अन्य निवास होने से ऊर्जा वहाँ जा भी रही है। इसलिए वास्तु दोषों का प्रभाव सामान्य रहेगा। इस घर में निवासियों को धन की कमी नहीं होगी।

भवन नं0 5 :
दक्षिण में सड़क व पूर्व, उत्तर और पश्चिम में अन्य निवास है। उत्तर व पूर्व में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है किन्तु पश्चिम में अन्य निवास होने से ऊर्जा वहाँ जा भी रही है। इसलिए वास्तु दोषों का प्रभाव आंशिक रहेगा।

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट में अन्य भवन/कमरे होने से ऊर्जा की प्राप्ति होगी। नार्थ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति भी होती है और ऊर्जा जाती भी है।

भवन नं0 3 :
नार्थ–ईस्ट और नार्थ वेस्ट में सड़क है व साउथ–ईस्ट और साउथ–वेस्ट में अन्य निवास हैं। साउथ–ईस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है। किन्तु साउथ–वेस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा वहाँ जा भी रही है। इसलिए दोषों का प्रभाव सामान्य रहेगा।

भवन नं0 2 :
नार्थ–ईस्ट में सड़क व साउथ–ईस्ट, साउथ–वेस्ट व नार्थ–वेस्ट में अन्य निवास हैं। साउथ–ईस्ट व नार्थ–वेस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है। किन्तु साउथ–वेस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा वहाँ जा भी रही है। इसलिए वास्तु दोषों का प्रभाव कम रहेगा।

भवन नं0 1 :
नार्थ–ईस्ट और साउथ–ईस्ट में सड़क है व नार्थ–वेस्ट और साउथ–वेस्ट में अन्य निवास हैं। नार्थ–वेस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है। किन्तु साउथ–वेस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा वहाँ जा भी रही है। इसलिए दोषों का प्रभाव सामान्य रहेगा।

भवन नं0 6 :
नार्थ–वेस्ट और साउथ–वेस्ट में सड़क है व नार्थ–ईस्ट और साउथ–ईस्ट में अन्य निवास हैं। नार्थ–ईस्ट और साउथ–ईस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है। साउथ–वेस्ट में अन्य निवास न होने से ऊर्जा कहीं भी नहीं जा रही है। इसलिए वास्तु दोषों का प्रभाव कम रहेगा।

भवन नं0 4 :
साउथ–ईस्ट और साउथ–वेस्ट में सड़क व नार्थ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट में अन्य निवास है। नार्थ–ईस्ट और नार्थ–वेस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है। साउथ–वेस्ट में अन्य निवास न होने से ऊर्जा कहीं नहीं जा रही है। इसलिए वास्तु दोषों का प्रभाव काफी कम रहेगा।

भवन नं0 5 :
साउथ–वेस्ट में सड़क व नार्थ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट में अन्य निवास है। नार्थ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट व साउथ–ईस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है। साउथ–वेस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा कहीं नहीं जा रही है। इसलिए दोषों का प्रभाव आंशिक रहेगा।

भवन नं0 1 :
नार्थ–ईस्ट, नार्थ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट में अन्य निवास नहीं होने से ऊर्जा की प्राप्ति नहीं हो रही है। इसलिए इस भवन में छोटे वास्तु दोषों का प्रभाव भी गंभीर रहेगा। इस भवन के निवासी चतुर और मेहनती होंगे।

भवन नं0 3 :
नार्थ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट में सड़क है व नार्थ–ईस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है। इसलिए इस भवन में गंभीर वास्तु दोषों का प्रभाव काफी कम रहेगा। इस भवन के निवासियों को कम मेंहनत करने पर भी काफी अधिक लाभ मिलेगा किन्तु स्वास्थय में कमजोर रहेंगे।

भवन नं0 2 :
नार्थ–वेस्ट और साउथ–ईस्ट में सड़क है व नार्थ–ईस्ट में अन्य निवास होने से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है। इसलिए इस भवन में गंभीर वास्तु दोषों का प्रभाव भी कम रहेगा। इस भवन के निवासियों को कम मेंहनत करने पर भी अधिक लाभ मिलेगा किन्तु स्वास्थय में कमजोर रहेंगे।

बहुमंजिली इमारत में फ्लैटों पर प्रभाव

फ्लैट आयताकार नहीं होने पर, कोई भी कोना बढ़ने या घटने पर प्रभाव कोने बढ़ने व घटने के अध्याय में देखें।

बहुमंजिली इमारत में सीढ़ी व मुमटी का प्रभाव सभी मंजिलों पर समान रूप से होता है। दिखाए गए चित्रों में हर मंजिल पर 4 फ्लैट हैं और बीच में सीढ़ी व मुमटी का निर्माण है। जिससे यह भाग ऊँचा और भारी हो गया है, इससे प्रत्येक फ्लैट के लिए अलग–अलग प्रभाव होंगे।

दिशा प्लॉट

फ्लैट नं0 1 : सीढ़ी व मुमटी का निर्माण इस फ्लैट के साउथ–ईस्ट में है इसलिए इसमें साउथ–ईस्ट ऊँचा होने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

फ्लैट नं0 2 : सीढ़ी व मुमटी का निर्माण इस फ्लैट के साउथ–वेस्ट में है इसलिए इसमें साउथ–वेस्ट ऊँचा होने के शुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे घर के मुखिया व बड़ी संतान स्वस्थ और सुखी रहेगे, समाज में मान–सम्मान बढ़ेगा व कम मेहनत में अच्छे फल की प्राप्ति होगी।

N

फ्लैट 1 | फ्लैट 2

W | मुमटी | E

फ्लैट 4 | फ्लैट 3

S
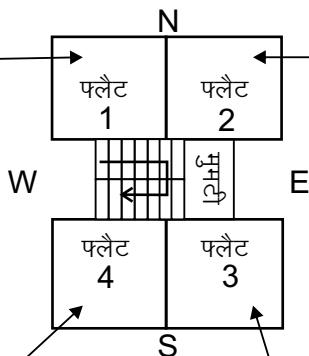
फ्लैट नं0 4 : सीढ़ी व मुमटी का निर्माण इस फ्लैट के नार्थ–ईस्ट में है इसलिए इसमें नार्थ–ईस्ट ऊँचा होने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। पूरी इमारत में साउथ–वेस्ट का फ्लैट होने से इसे वास्तु लाभ मिलेगा जिससे गुजारे लायक धन आता रहेगा।

फ्लैट नं0 3 : सीढ़ी व मुमटी का निर्माण इस फ्लैट के नार्थ–वेस्ट में है इसलिए इसमें नार्थ–वेस्ट ऊँचा होने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

विदिशा प्लॉट

फ्लैट नं0 1 : सीढ़ी व मुमटी का निर्माण इस फ्लैट के दक्षिण में है इसलिए इसमें दक्षिण ऊँचा होने के शुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे महिलाएँ स्वस्थ, सुखी रहेंगी, स्वभाव निर्मल होगा व मान–सम्मान बढ़ेगा।

फ्लैट नं0 2 : सीढ़ी व मुमटी का निर्माण इस फ्लैट के पश्चिम में है इसलिए इसमें पश्चिम ऊँचा होने के शुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे पुरूष स्वस्थ, सुखी रहेंगे, मान–सम्मान बढ़ेगा, स्वभाव निर्मल होगा व पहली संतान को विशेष लाभ मिलेगा।

N | E

फ्लैट 1 | फ्लैट 2

मुमटी

फ्लैट 4 | फ्लैट 3

W | S
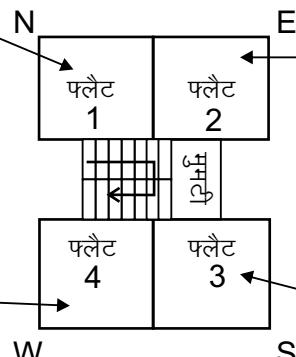
फ्लैट नं0 4 : सीढ़ी व मुमटी का निर्माण इस फ्लैट के पूर्व में है इसलिए इसमें पूर्व भाग ऊँचा होने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

फ्लैट नं0 3 : सीढ़ी व मुमटी का निर्माण इस फ्लैट के उत्तर में है इसलिए इसमें उत्तर भाग ऊँचा होने के अशुभ प्रभाव लागू होंगे। इससे धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान कम व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा।

भवन/बेडरूम के आस–पास ऊँचा और नीचा होने के प्रभाव

भवन के आस–पड़ोस में निर्माण, फ्लाईओवर, मेट्रो लाईन, पहाड़, इत्यादि भवन से सटा होने पर गंभीर प्रभाव होंगे और भवन से दूर होने पर आंशिक प्रभाव होंगे। यदि यह भवन से 40 फीट दूर है तो प्रभाव काफी कम हो जाएगा।

ऊँचा होने पर

दिशा प्लॉट

उत्तर में महिलाएं बीमार व धन की समस्या रहेगी।

नार्थ–वेस्ट में पर महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

पश्चिम में घर का मुखिया व पुरूष संतान स्वस्थ रहेंगे और उनका मान–सम्मान व आत्मविश्वास बढ़ेगा। यह शुभ है।

पूर्व में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

साउथ–वेस्ट में महिलाओं व पुरूषों का आत्मविश्वास बढ़ेगा व उन्नति होगी। यह अत्यधिक शुभ है।

पश्चिम में घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान स्वस्थ रहेंगे और उनका मान–सम्मान बढ़ेगा।
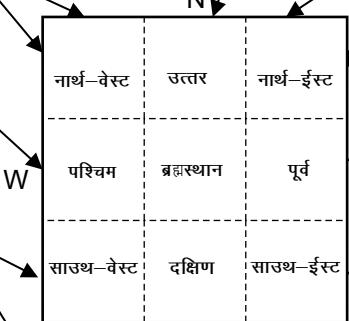
साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट में घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

उत्तर में महिलाएं बीमार व धन की समस्या रहेगी।

पूर्व में पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

नार्थ–वेस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

पश्चिम में घर का मुखिया व पुरूष संतान स्वस्थ रहेंगे और उनका मान–सम्मान बढ़ेगा।

दक्षिण में घर की मुख्य महिला व स्त्री संतान स्वस्थ रहेंगे और उनका मान–सम्मान बढ़ेगा।

साउथ–वेस्ट में महिलाओं व पुरूषों का आत्मविश्वास बढ़ेगा व उन्नति होगी। यह अत्यधिक शुभ है।

नीचा होने पर **आस–पड़ोस में नहर, तालाब, कुआँ, गढ़ढा इत्यादि भवन से सटा होने पर गंभीर प्रभाव होंगे और भवन से दूर होने पर आंशिक प्रभाव होंगे। यदि यह भवन से 40 फीट दूर है तो प्रभाव काफी कम हो जाएगा।**

दिशा प्लॉट

उत्तर में मध्य से नार्थ–वेस्ट की तरफ धन की कमी, महिलाएँ बीमार, मान–सम्मान में कमी व स्वभाव चिड़चिड़ा होगा। उत्तर के पूरे भाग में होने पर दोष नहीं लगेगा।

उत्तर में मध्य से नार्थ–ईस्ट की तरफ और उत्तर के पूरे भाग में होने पर धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा होगा।

नार्थ–नार्थईस्ट में धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी, घर की मुख्य महिला, पहली और चौथी संतान यदि बेटी है तो विशेष लाभ होगा।

ईस्ट–नार्थईस्ट में धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान यदि बेटा हो तो विशेष लाभ होगा।

केवल नार्थ–नार्थवेस्ट में पर महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान बेटी हो तो अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

पूर्व के मध्य से नार्थ–ईस्ट की तरफ होने पर पुरूष स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा व पूज्यनीय होगा।

नार्थ वेस्ट	उत्तर	नार्थ ईस्ट
पश्चिम	ब्रह्मस्थान	पूर्व
साउथ वेस्ट	दक्षिण	साउथ ईस्ट

N, E, S, W

केवल वेस्ट–नार्थवेस्ट में पर पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान बेटा हो तो अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेगा।

पूर्व के मध्य से साउथ–ईस्ट की तरफ होने पर पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

पश्चिम में घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

ईस्ट–साउथईस्ट में पुरूष बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान यदि बेटा है तो अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

वेस्ट–साउथवेस्ट में घर के मुखिया, पहली और पाँचवीं संतान बेटा हो तो बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

साउथ–साउथवेस्ट में घर की मुख्य महिला, पहली और पाँचवीं संतान बेटी हो तो गम्भीर बीमारी, मानसिक अशान्ति, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।

साउथ–साउथईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान यदि बेटी है तो अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

विदिशा प्लॉट

नार्थ–ईस्ट में धन की प्राप्ति, पूरा परिवार सुखी व सम्पन्न, निवासी उच्च पद पर कार्यरत, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी, घर के मुखिया, पहली और चौथी संतान को विशेष लाभ होगा।

पूर्व में धन की प्राप्ति, पुरूष स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा व पूज्यनीय होगा।

उत्तर	नार्थ–ईस्ट	पूर्व
नार्थ–वेस्ट	ब्रह्मस्थान	साउथ–ईस्ट
पश्चिम	साउथ–वेस्ट	दक्षिण

N, E, S, W

उत्तर में धन की प्राप्ति, महिलाएँ स्वस्थ, सुखी, मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी व स्वभाव अच्छा होगा।

साउथ–ईस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।
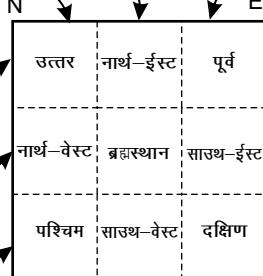
नार्थ–वेस्ट में महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

दक्षिण में महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा और जिद्दी व मानसिक अशान्ति रहेगी।

पश्चिम में घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

साउथ–वेस्ट में घर के मुखिया, पहली और पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

भवन / बेडरूम में संतानों का स्थान

भवन / बेडरूम में प्रत्येक संतान का एक विशिष्ट स्थान होता है, यहाँ वास्तु दोष होने पर उस स्थान से सम्बन्धित संतान पर इसका गंभीर या आंशिक प्रभाव होता है।

दिशा प्लॉट

नार्थ–नार्थवेस्ट भाग में दोष होने पर तीसरी और सातवीं संतान यदि बेटी है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

नार्थ–नार्थईस्ट भाग में दोष होने पर पहली और चौथी संतान यदि बेटी है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग में दोष होने पर तीसरी और सातवीं संतान यदि बेटा है तो उसे समस्याएँ

ईस्ट–नार्थईस्ट भाग में दोष होने पर पहली और चौथी संतान यदि बेटा है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

ईस्ट–साउथईस्ट भाग में दोष होने पर दूसरी और छठी संतान यदि बेटा है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

वेस्ट–साउथवेस्ट भाग में दोष होने पर पहली और पाँचवीं संतान यदि बेटा है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

साउथ–साउथवेस्ट भाग में दोष होने पर पहली और पाँचवीं संतान यदि बेटी है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

साउथ–साउथईस्ट भाग में दोष होने पर दूसरी और छठी संतान यदि बेटी है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

विदिशा प्लॉट

नार्थ–नार्थईस्ट भाग में दोष होने पर पहली और चौथी संतान यदि बेटी है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

ईस्ट–नार्थईस्ट भाग में दोष होने पर पहली और चौथी संतान यदि बेटा है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

नार्थ–नार्थवेस्ट भाग में दोष होने पर तीसरी और सातवीं संतान यदि बेटी है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

ईस्ट–साउथईस्ट भाग में दोष होने पर दूसरी और छठी संतान यदि बेटा है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

वेस्ट–नार्थवेस्ट भाग में दोष होने पर तीसरी और सातवीं संतान यदि बेटा है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

साउथ–साउथईस्ट भाग में दोष होने पर दूसरी और छठी संतान यदि बेटी है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

वेस्ट–साउथवेस्ट भाग में दोष होने पर पहली और पाँचवीं संतान यदि बेटा है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

साउथ–साउथवेस्ट भाग में दोष होने पर पहली और पाँचवीं संतान यदि बेटी है तो उसे समस्याएँ रहेंगी।

सूर्य की स्थिति समय के अनुसार देखकर भवन में वास्तु दोष और उनके समाधान जानने की विधि

भवन की आखरी छत पर और चारदीवारी के अंदर किसी भी कोने में (चाहें सड़क किसी भी तरफ हो) दिखाई गई जगहों में कोई निर्माण, वजन, भारी मशीन या तिरपाल इत्यादि से ढ़के होने पर गंभीर प्रभाव होते हैं।
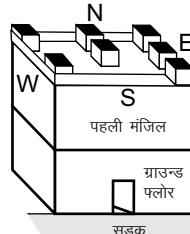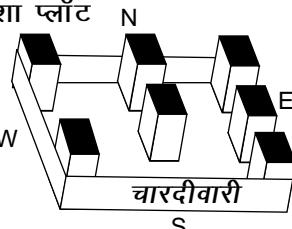
सड़क चाहें किसी भी तरफ हो, शेड द्वारा दिखाए गए स्थानों में वास्तु दोष होने पर इसका आंशिक या गम्भीर प्रभाव होता है।

नार्थ–ईस्ट : सुबह 5.00 बजे के समय सूर्य नार्थ–ईस्ट कोने की तरफ उदय होते हैं। इस कोने में सीढ़ी, टॉंड, परछत्ति, अलमारी, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान–सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर निर्माण में यह कोना कटने से यह प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो भी यही प्रभाव लागू होंगे।

पूर्व : सुबह 6:00 बजे के समय सूर्य पूर्व भाग में होते हैं। इस भाग में सीढ़ी, टॉंड, परछत्ति, अलमारी, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर निर्माण में यह भाग कटने से यही प्रभाव लागू होंगे। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो भी यही प्रभाव लागू होंगे।

ध्यान रहे कि पूर्व के मध्य में दिखाए अनुसार लाईन से साउथ–ईस्ट की तरफ मुख्य द्वार, बोरिंग/सेप्टिक टैंक/ गढ़ढ़ा होने पर यही प्रभाव लागू होंगे।

साउथ–ईस्ट : सुबह 10.00 बजे के समय सूर्य साउथ–ईस्ट कोने की तरफ होते हैं। इस कोने में सीढ़ी, टॉंड, परछत्ति, अलमारी, बोरिंग, सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर महिलाएं बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे। ध्यान रहे कि ईस्ट–साउथईस्ट में मुख्यद्वार होने पर यही प्रभाव लागू होंगे।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

ब्रह्मस्थान : शेड द्वारा दिखाए गए मुख्य ब्रह्मस्थान में बोरिंग, सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा व स्तम्भ का निर्माण होने पर घर का मुखिया, पहली संतान व पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशनाश संभव है।

बिना शेड द्वारा दिखाए गए ब्रह्मस्थान में यह दोष होने पर प्रभाव आंशिक रहेंगे।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

दक्षिण : दोहपर 1:00 बजे के समय सूर्य दक्षिण भाग में होते हैं। इस भाग में बोरिंग, सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा, मुख्यद्वार, शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

साउथ–वेस्ट : शाम 4:00 बजे के समय सूर्य साउथ–वेस्ट कोने में होते हैं। इस कोने में मुख्य द्वार, बोरिंग सेप्टिक टैंक/गढ्ढ़ा होने पर घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर निर्माण में यह कोना कटने से यही प्रभाव लागू होंगे। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 2 फीट से अधिक हो जाती है या छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि है तो घर का मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान घर से बाहर रहेंगे।

पश्चिम : शाम 6:.00 बजे के समय सूर्य पश्चिम भाग में होते हैं। इस भाग में बोरिंग, सेप्टिक टैंक/गढ्ढ़ा, मुख्यद्वार, शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

नार्थ–वेस्ट : शाम 7:30 बजे के समय सूर्य नार्थ–वेस्ट कोने की तरफ अस्त होते हैं। इस कोने में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, अलमारी, बोरिंग सेप्टिक टैंक/गढ्ढ़ा, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

ध्यान रहे कि नार्थ–नार्थवेस्ट में मुख्यद्वार होने पर यही प्रभाव लागू होंगे।

उत्तर : सूर्य जिस दीवार की तरफ नहीं आते वह उत्तर भाग है। इस भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, अलमारी, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर निर्माण में यह भाग कटने से यही प्रभाव लागू होंगे। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

ध्यान रहे कि उत्तर के मध्य में दिखाए अनुसार लाईन से नार्थ–वेस्ट की तरफ मुख्य द्वार, बोरिंग/सेप्टिक टैंक/ गढ्ढ़ा होने पर यही प्रभाव लागू होंगे।

दोष का समाधान

आखरी छत या चारदीवारी के अंदर दक्षिण व पश्चिम की दीवारों के साथ दिखाए अनुसार निर्माण कर सकते हैं। इससे कोई वास्तु दोष नहीं होगा। ध्यान रहे कि यह निर्माण किसी भी कोने से नहीं सटना चाहिए।

N
E
W
चारदीवारी
S

N
E
W
S
पहली मंजिल
ग्राउन्ड फ्लोर
सड़क

सही द्वार
NW
N
NE
शाम 07:30
सुबह 05:00
ब्रह्मस्थान
शाम 06:00
W
E
सुबह 06:00
ब्रह्मस्थान
शाम 04:00
SW
S
SE
सुबह 10:00
दोपहर 02:00
दोपहर 01:00
दोपहर 12:00
सही द्वार

नार्थ–ईस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस कोने में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को हर मंजिल पर हल्की सामग्री से कवर करना जरूरी है। किन्तु ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

पूर्व : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को हर मंजिल पर समान सामग्री से कवर करना जरूरी है। किन्तु ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

पूर्व के मध्य से साउथ–ईस्ट की तरफ यदि मुख्य द्वार हो तो इसे बंद कर दें, बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ्ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। पूर्व के मध्य से नार्थ–ईस्ट की तरफ इनका निर्माण कर सकते हैं।

साउथ–ईस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को कवर करना जरूरी नहीं है। आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

इस भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ्ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार सिर्फ साउथ–साउथईस्ट में ही बनाएँ।
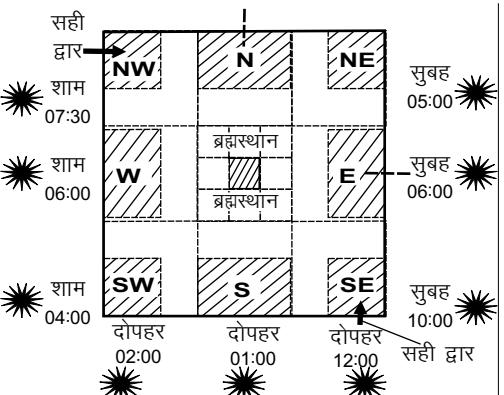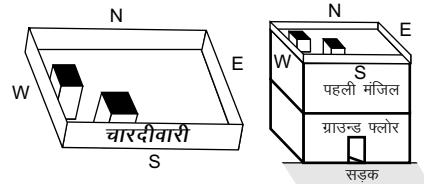
ब्रह्मस्थान : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, स्तम्भ या छत पर कोई निर्माण है तो उसे तोड़कर हटा दें।

शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को कवर करना जरूरी नहीं है। ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

इस भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है।

साउथ—वेस्ट : छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर कोने से कम से कम 3 फीट दूर करें।

शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को बने हुए भाग की छत के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान सामग्री से कवर करना जरूरी है। ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई दो फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

इस भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार को भी बंद करना जरूरी है। यदि इस स्थान पर मुख्यद्वार के साथ सीढ़ी का भी निर्माण है तो द्वार बंद करना जरूरी नहीं है।

नार्थ—वेस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को कवर करना जरूरी नहीं है। आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

इस भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार सिर्फ वेस्ट—नार्थवेस्ट में ही बनाएँ।

साउथ : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार को भी बंद करना जरूरी है। यदि इस स्थान पर मुख्यद्वार के साथ सीढ़ी का भी निर्माण है तो द्वार बंद करना जरूरी नहीं है।

शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को बने हुए भाग की छत के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान सामग्री से कवर करना जरूरी है।

वेस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार को भी बंद करना जरूरी है। यदि इस स्थान पर मुख्यद्वार के साथ सीढ़ी का भी निर्माण है तो द्वार बंद करना जरूरी नहीं है।

शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को बने हुए भाग की छत के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान सामग्री से कवर करना जरूरी है।

उत्तर : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को हर मंजिल पर समान सामग्री से कवर करना जरूरी है। किन्तु ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

उत्तर के मध्य से नार्थ—वेस्ट की तरफ यदि मुख्य द्वार हो तो इसे बंद कर दें, बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। उत्तर के मध्य से नार्थ—ईस्ट की तरफ इनका निर्माण कर सकते हैं।

विदिशा प्लॉट

भवन की आखरी छत पर और चारदीवारी के अंदर किसी भी कोने में (चाहें सड़क किसी भी तरफ हो) दिखाई गई जगहों में कोई निर्माण, वजन, भारी मशीन या तिरपाल इत्यादि से ढ़के होने पर गंभीर प्रभाव होते हैं।

N E W S चारदीवारी

N E W S पहली मंजिल ग्राउन्ड फ्लोर सड़क
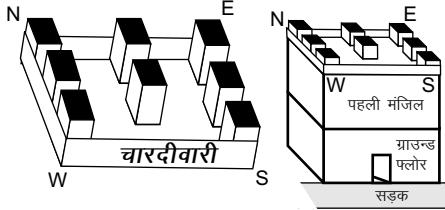
सड़क चाहें किसी भी तरफ हो, शेड द्वारा दिखाए गए स्थानों में वास्तु दोष होने पर इसका आंशिक या गम्भीर प्रभाव होता है।

नार्थ—ईस्ट : सूर्य जिस दीवार के मध्य तक नहीं जाते वह नार्थ—ईस्ट भाग है। इस भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, अलमारी, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर घर के कमाने वाले सदस्य और पूरा परिवार परेशान, बीमार, प्रगति न होना, धन की कमी, मान—सम्मान में कमी व पहली और चौथी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/ खुला स्थान होने पर निर्माण में यह भाग कटने से यह प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो भी यही प्रभाव लागू होंगे।

सुबह 5:00
सुबह 6:00
N NE E
शाम 7:30 NW SE सुबह 10:00
शाम 6:00 W SW S
दोपहर 3:00
दोपहर 1:00
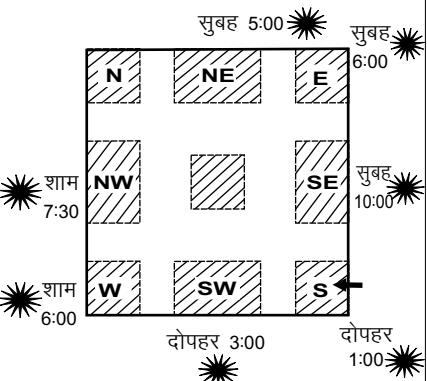
पूर्व : सुबह 5:00 से 6.00 बजे के समय सूर्य पूर्व कोने की तरफ होते हैं। इस कोने में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, अलमारी, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर पुरूषों को गम्भीर बीमारी, भय लगना, मान–सम्मान व धन की कमी, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, संतान न होना व गर्भपात होना संभव है।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर निर्माण में यह कोना कटने से यह प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

ब्रह्मस्थान : ब्रह्मस्थान में बोरिंग, सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा व स्तम्भ का निर्माण होने पर पूरा परिवार परेशान रहेगा व वंशबृद्वि नहीं होगी।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

साउथ–वेस्ट : दोपहर 03:00 बजे के समय सूर्य साउथ–वेस्ट में होते हैं। इस भाग में मुख्य द्वार, बोरिंग सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा, शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर घर के मुखिया, पहली व पाँचवीं संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है।

साउथ–ईस्ट : सुबह 10:00 बजे के समय सूर्य साउथ–ईस्ट भाग में होते हैं। इस भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, अलमारी, मुख्यद्वार, बोरिंग, सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, आग व चोरी की घटनाएँ, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, दूसरी व छठी संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

साउथ : दोपहर 01:00 बजे के समय सूर्य दक्षिण कोने में होते हैं। इस कोने में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, अलमारी, बोरिंग, सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर महिला व स्त्री संतान बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर निर्माण में यह कोना कटने से यही प्रभाव लागू होंगें। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

ध्यान रहे कि दक्षिण में साउथ–ईस्ट की तरफ मुख्यद्वार होने पर यही प्रभाव लागू होंगे।

वेस्ट : शाम 06:00 बजे के समय सूर्य पश्चिम कोने में होते हैं। इस कोने में मुख्यद्वार, बोरिंग, सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा होने पर घर के मुखिया व पुरूष संतान बीमार, बुरी आदतें, घर से बाहर रहना, अपराधी होना, जेल जाना, एक्सीडेंट व मृत्यु भी संभव है। टाँड परछत्ति, अलमारी, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर मुखिया घर से बाहर रहेगा।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर यह कोना कटने से यही प्रभाव लागू होंगे। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 2 फीट से अधिक हो जाती है या छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि है तो घर का मुखिया घर से बाहर रहेगा।

नार्थ–वेस्ट : शाम 07:30 बजे के समय सूर्य नार्थ–वेस्ट में होते हैं। इस भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, अलमारी, मुख्यद्वार, बोरिंग सेप्टिक टैंक/गढ़्ढ़ा, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर महिलाएँ बीमार, कर्जे, झगड़े, मानसिक अशान्ति, दीवालिया होना, कोर्ट–केस, प्रशासनिक समस्याएँ, तीसरी व सातवीं संतान को अधिक समस्याएँ व विवाह से परेशान रहेंगे।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/ खुले स्थान को आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो यही प्रभाव लागू होंगे।

उत्तर : सूर्य जिस कोने में नहीं जाते हैं वह उत्तर कोना है। इस कोने में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, अलमारी, छत पर मुमटी, कमरा, पानी की टंकी, टॉयलेट इत्यादि होने पर धन की कमी, महिलाएं बीमार, मान–सम्मान में कमी, स्वभाव चिड़चिड़ा होगा व मानसिक अशान्ति रहेगी।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुला स्थान होने पर यह कोना कटने से यह प्रभाव कई गुना बढ़ जाएँगे। इसे आखरी छत पर कवर करने पर यदि इस भाग की ऊँचाई 1 फीट से अधिक हो जाती है तो भी यही प्रभाव लागू होंगे।

दोष का समाधान

आखरी छत या चारदीवारी के अंदर साउथ–वेस्ट की दीवार के साथ दिखाए अनुसार निर्माण कर सकते हैं। इससे कोई वास्तु दोष नहीं होगा। ध्यान रहे कि यह निर्माण किसी भी कोने से नहीं सटना चाहिए।

नार्थ–ईस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को हर मंजिल पर समान सामग्री से कवर करना जरूरी है। किन्तु ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

पूर्व : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस कोने में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस कोने में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को हर मंजिल पर हल्की सामग्री से कवर करना जरूरी है। किन्तु ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

साउथ–ईस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को कवर करना जरूरी नहीं है। आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

इस भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार को भी बंद करना जरूरी है।

ब्रह्मस्थान : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, स्तम्भ या छत पर कोई निर्माण है तो उसे तोड़कर हटा दें।

शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को कवर करना जरूरी नहीं है। ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

इस भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है।

वेस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार को भी बंद करना जरूरी है। यदि इस स्थान पर मुख्यद्वार के साथ सीढ़ी का भी निर्माण है तो द्वार बंद करना जरूरी नहीं है।

शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को बने हुए भाग की छत के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान सामग्री से कवर करना जरूरी है। आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

नार्थ–वेस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को कवर करना जरूरी नहीं है। आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

इस भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार को भी बंद करना जरूरी है।

साउथ : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार यदि साउथ–ईस्ट की तरफ हो तो इसे भी बंद करना जरूरी है।

शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को बने हुए भाग की छत के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान सामग्री से कवर करना जरूरी है। आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

साउथ–वेस्ट : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में बोरिंग/सेप्टिक टैंक/गढ़ढ़ा हो तो इसे रेत व मिट्टी से भरकर बंद करना जरूरी है। मुख्य द्वार को भी बंद करना जरूरी है। यदि इस स्थान पर मुख्यद्वार के साथ सीढ़ी का भी निर्माण है तो द्वार बंद करना जरूरी नहीं है।

शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को बने हुए भाग की छत के निर्माण में प्रयोग की गई सामग्री के समान सामग्री से कवर करना जरूरी है।

उत्तर : यदि शेड द्वारा दिखाए गए भाग में सीढ़ी, टाँड, परछत्ति, स्लैब इत्यादि का निर्माण है तो कंक्रीट व सरिया काटकर इसे दीवार से कम से कम 3 इंच दूर करें या तोड़कर हटा दें।

छत पर इस भाग में कोई भी निर्माण होने पर उसे तोड़कर इसका तल छत के बराबर करें।

इस भाग में शाफ्ट/डक्ट/खुले हुए भाग को हर मंजिल पर समान सामग्री से कवर करना जरूरी है। किन्तु ध्यान रहे कि आखरी छत पर कवर करने से इसकी ऊँचाई एक फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए।

भवनों के नक्शे

(वास्तु दोष व समाधान सहित)

-: ध्यान रखें :-

दिए गए सभी नक्शों में भवन चाहें किसी भी दिशा/फेसिंग का हो, उसमें किसी भी दिशा में दोष का जो प्रभाव बताया गया है। किसी और भवन में यदि उस दिशा में समान दोष है तो उसका प्रभाव उस भवन में भी लगभग समान रूप से आएगा।

प्रत्येक नक्शे में ऊपर दिखाए गए की–प्लान में आस–पास के भवन और उनकी ऊँचाई दिखाई गई है। अपने भवन से मिलते जुलते चित्र को देखकर वास्तु दोष व उनके समाधान के बारे में जान सकते हैं।

दिशा प्लॉट में ऊर्जा का प्रवाह सदैव उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम की तरफ ही होता है। यदि भवन को किसी भी तरफ से ऊर्जा मिल रही है तो उसमें वास्तु दोषों का प्रभाव कम हो जाएगा।

विदिशा प्लॉट में ऊर्जा का प्रवाह नार्थ–ईस्ट से साउथवेस्ट, नार्थवेस्ट से साउथईस्ट व साउथ–ईस्ट से नार्थवेस्ट की तरफ होता है। यदि भवन को किसी भी तरफ से ऊर्जा मिल रही है तो उसमें वास्तु दोषों का प्रभाव कम हो जाएगा।